Success Pana Chahte Hai . Com

प्राचीन इतिहास

भू-वैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी लगभग 4.6 अरब वर्ष प्राचीन है तथा इसमें जीवन की उत्पत्ति लगभग 3.5 अरब वर्ष पूर्व हुई थी। परन्तु इस काल में छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं का ही विकास हो पाया था। आज से लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व महाकपी की प्रजाति रामापिथेकस का प्रसार दो शाखाओं में हो गया। रामापिथेकस की जो प्रजाति जंगल में रह गई, उसका विकास बंदरों के रूप में हो गया। जबकि रामापिथेकस की जो प्रजाति मैदान में आ गई, उनका विकास आदिम मानव (होमोनिड), अर्थात् - ऑस्ट्रेलोपिथेकस के रूप में हो गया।

आदिम मानव के जीवाश्म के प्राचीनतम् साक्ष्य ऑफ्रीका से प्राप्त होते हैं, जो लगभग 25 लाख वर्ष पूर्व के हैं। भारत से आदिम मानव के जीवाश्म प्राप्त नहीं होते, परन्तु उसके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले प्रस्तर उपरकरणों से भारत में आदिम मानव की उपस्थिति का समय लगभग 5 लाख ई. पू. माना जाता है। हालांकि हाल ही में महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान से मिले प्रस्तर उपकरणों के आधार पर भारत में आदिम मानव की उपस्थित लगभग 14 लाख वर्ष पूर्व मानी जा सकती है। यहां उल्लेखनीय है कि **भारत** में रामापिथेकस के **जीवाश्म शिवालिक की पहाड़ियों** (रवात घाटी, पाकिस्तान) से प्राप्त हुए हैं। भारत में पाया गया एकमात्र मानवाभ कपि असम का **श्वेतभ्रू गिबन** है।

संक्षेप में मानव के विकास को इस प्रकार से समझा जा सकता है -

रामापिथेकस ⟶ ऑस्ट्रेलोपिथेकस ⟶ होमोइरेक्टस ⟶ नियाण्डरथेल ⟶ क्रोमेग्नन अर्थात् होमोसेपियंस

होमोसेपियन्स (क्रोमेग्नन) को ही **आधुनिक मानव** (पूर्ण मानव) माना जाता है, जिसकी उत्पत्ति का समय 30-40 हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। इस प्रकार होमोसेपियन्स का उद्भव अत्यन्त नूतन युग (Pleistoscene Epoch) में हुआ। पिथेकैन्थ्रोपस (इरेक्टस) मानव सदृश प्राणी था, जो होमोसेपियन्स से प्रजातीय रूप से भिन्न था। विश्व की संस्कृतियों का कालक्रम -

अबेबीली ⟶ एश्चूली ⟶ मोस्तारी ⟶ मग्दालीनी

इतिहास का विभाजन

प्राक्-ऐतिहासिक काल
(25 लाख ई. पू. से 3 हजार ई. पू.)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास केवल पुरातात्विक साक्ष्य ही उपलब्ध हो। अर्थात वह काल जिसमें लिपि अनुपलब्ध हो

- **पुरापाषाणकाल** (25 लाख ई. पू. से 10 हजार ई. पू.)
- **मध्यपाषाणकाल** (10 हजार ई. पू. से 6 हजार ई. पू.)
- **नवपाषाणकाल** (6 हजार ई. पू. से 3 हजार ई. पू.)

आद्य-ऐतिहासिक काल
(3 हजार ई. पू. से 6 सौ ई. पू.)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक स्रोत भी उपलब्ध हो। किन्तु इनमें से किसी एक का प्रयोग ही संभव हो पाया हो

- **हड़प्पा सभ्यता** (2500 ई. पू. से 1800 ई. पू.)
- **वैदिक संस्कृति** (1500 ई. पू. से 600 ई. पू.)

ऐतिहासिक काल
(6 सौ ई. पू. से आज तक)
जिस काल की जानकारी के लिए हमारे पास पुरातात्विक साक्ष्य के साथ-साथ साहित्यिक स्रोत भी उपलब्ध हो और उनका प्रयोग भी संभव हो

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❒ पुरापाषाणकाल

भारतीय पुरापाषाणकाल को मानव द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले **पत्थर के औजारों के स्वरूप** एवं **जलवायु में होने वाले परिवर्तनों** के आधार पर 3 अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है –

- पूर्व पुरापाषाणकाल (5 लाख से 50 हजार ई. पू.)।
- मध्य पुरापाषाणकाल (50 हजार से 40 हजार ई. पू.)।
- उच्च पुरापाषाणकाल (40 हजार से 10 हजार ई. पू.)।

◆ पूर्व पुरापाषाणकाल (5 लाख से 50 हजार ई. पू.)

इसे निम्न पुरापाषाणकाल भी कहते हैं। इस काल में मानव को कृषि एवं पशुपालन का ज्ञान नहीं था। मानव आखेटक एवं खाद्यसंग्राहक था, वह केवल बड़े पशुओं का ही शिकार कर सकता था।

इस काल में मानव **क्वार्टजाइट (स्फटिक)** पत्थर के **क्रोड** (Core) उपकरणों का प्रयोग करता था। इस काल के प्रमुख प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper) व खुरचनी (Scraper) थे।

भारत के विभिन्न भागों से पूर्व पुराषाणकाल से संबंधित उपकरण प्राप्त होते हैं। इन्हें दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता है –

1) **चापार-चापिंग पेबुल संस्कृति** – इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम पाकिस्तान के पंजाब स्थित सोहन नदी घाटी से प्राप्त हुए हैं। इसी कारण इसे **सोहन संस्कृति** भी कहा जाता है। सोहन, सिन्धु की एक सहायक नदी थी। **1928 ई.** में **डी. एन. वाडिया** ने इस क्षेत्र से पूर्व पुरापाषाणकाल का उपकरण प्राप्त किया था। पत्थर के वे टुकड़े, जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते हैं, पेबुल कहे जाते हैं। इनका-आकार-प्रकार, गोला-मटोल होता है। चापर बड़े आकार वाला वह उपकरण है, जो पेबुल से बनाया जाता है। इसके ऊपर एक ही ओर फलक निकालकर धार बनाई गई है। चापिंग उपकरण द्विधारी होते हैं, अर्थात् पेबुल के ऊपर दोनों किनारों को छीलकर उनमें धार बनाई जाती है। सोहन नदी घाटी में स्थित **चौन्तरा** से चापार-चापिंग पेबुल के साथ-साथ हैण्डऐक्स भी प्राप्त हुए हैं। अत: चौन्तरा को उत्तर व दक्षिण पूर्व पुरापाषाणकालीन संस्कृति का मिलन स्थल माना गया है।

सोहन संस्कृति के उपकरण सिरसा व व्यास (हरियाणा), **सिहावल**, बाणगंगा व नर्मदा घाटी (मध्य प्रदेश), सिंगरौली व बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश), साबरमती व माही नदी घाटी (गुजरात), चित्तौड़ (राजस्थान), मयूरमंज (उड़ीसा) और गिद्दलूर व नल्लौर नदी घाटी (आन्ध्र प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के उपकरण **कश्मीर घाटी से प्राप्त नहीं** होते, क्योंकि यहां कच्चे माल का अभाव था। साथ ही **गंगा, यमुना एवं सिंधु के कछारी मैदानों में इस संस्कृति के स्थल नहीं** मिलते हैं, क्योंकि यहां घने जंगल थे।

2) **हैण्डऐक्स संस्कृति** – इसके उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के समीपवर्ती क्षेत्र (पल्लवरम्, बदमदुरै व अत्तिरपक्कम) से प्राप्त हुए हैं। इसी कारण इसे **मद्रासीय संस्कृति** भी कहा जाता है। सर्वप्रथम **1863 ई.** में **रॉवर्ट ब्रूसफुट** ने मद्रास के समीप **पल्लवरम्** नामक स्थान से **प्रथम भारतीय पुरापाषाण कलाकृति हैण्डऐक्स** प्राप्त किया था। इसके पश्चात् उनके मित्र किंग ने कोर्तलयार घाटी स्थित अत्तिरपक्कम नामक स्थान से दूसरा हैण्डऐक्स प्राप्त किया। इस संस्कृति के अन्य उपकर क्लीवर, स्क्रेपर आदि हैं।

हैण्डऐक्स संस्कृति के उपरकरण नर्मदा व सोन नदी घाटी (मध्य प्रदेश), गोदावरी व उसकी साहायक नदी प्रवरा नदी घाटी (महाराष्ट्र), कृष्णा-तुंगभद्रा नदी घाटी (कर्नाटक), सावरमती व माही नदी घाटी (गुजरात), चम्बल नदी घाटी (राजस्थान), सिंगरौली व बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश) से भी प्राप्त होते हैं। **नर्मदा नदी घाटी** में स्थित **हथनोरा** (नरसिंहपुर) से मानव की खोपड़ी मिली है, जो **भारत में मानव अवशेष का सर्वप्रथम साक्ष्य** है।

◆ मध्य पुरापाषाणकाल (50 हजार से 40 हजार ई. पू.)

मध्य पुरापाषाणकाल में भी मानव शिकारी व खाद्यसंग्राहक ही था। इस काल में क्वार्टजाइट पत्थर के साथ-साथ जेस्पर, चर्ट, ऐंगट आदि पत्थरों के **फलक / शल्क** (Flaxes) उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा था। इस काल के प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper) व खुरचनी (Scraper) के साथ-साथ बेधनी (Point), तक्षिणी (Burin) आदि थे।

फलक उपकरणों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाणकाल को **फलक संस्कृति** की संज्ञा दी गई है। **एच. डी. संकालिया** ने प्रवरा नदी घाटी में स्थित **नेवासा** को इस संस्कृति का **प्रारूप स्थल** माना है। इस काल के उपकरण भी पूर्व में उल्लेखित सभी स्थलों से प्राप्त होते हैं। हालांकि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में उतने स्थल प्राप्त नहीं होते, जितने प्रायद्वीपीय क्षेत्र से प्राप्त होते हैं। इसका प्रमुख कारण पंजाब में उपयुक्त कच्चे माल का अभाव माना जाता है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

◆ **उच्च पुरापाषाणकाल (40 हजार से 10 हजार ई. पू.)**

उच्च पुरापाषाणकाल में भी मानव शिकारी व खाद्यसंग्राहक ही था। इस काल में क्वार्टजाइट, जेस्पर, चर्ट, ऐंगट पत्थर के साथ-साथ फ्लिन्ट, आदि पत्थरों के **ब्लेड** उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा था। इस काल के प्रस्तर उपकरण हस्त कुठार (Hand Axe), विदारिणी (Cleaver), खण्डक (Chopper), **खुरचनी** (Scraper), बेधनी (Point), **तक्षिणी** (Burin) आदि थे।

इस काल में नक्काशी व चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ। इलाहाबाद स्थित **वेलन घाटी के लोहदा नाले से** इस काल की **अस्थिनिर्मित मातृदेवी की प्रतिमा** प्राप्त होती है, जो कौशाम्बी संग्रहालय में सुरक्षित है। विन्ध्य क्षेत्र में स्थित **भीमबेटका** (रायसेन, मध्य प्रदेश) के शैलाश्रयों से **विश्व की सबसे प्राचीनतम् चित्रकारी के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं, जिनमें मुख्यत: हरे व लाल रंग का प्रयोग किया गया है। यहां से नीले रंग के कुछ पाषाणखण्ड मिलते हैं। वाकणकर महोदय के अनुसार इन नीले पाषाणखण्ड से चित्रकारी के लिए रंग तैयार किया जाता होगा।

इस काल में मानव **चकमक प्रस्तर उपकरणों** का प्रयोग करने लगा था। अर्थात् वह अग्नि से परिचित तो था, परन्तु उसके प्रयोग से नहीं। सर्वप्रथम इसी काल में आधुनिक मानव **होमोसेपियन** का विकास हुआ।

❐ मध्य पाषाणकाल :-

मध्य पाषाणकाल की जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में सी. एन. कार्लाइल द्वारा विन्ध्य क्षेत्र में लघु पाषाण उपकरणों की खोज से प्राप्त होती है। इस काल में भी मानव मुख्यत: शिकारी एवं खाद्यसंग्राहक ही था, परन्तु शिकार करने की तकनीक में परिवर्तन आ गया था। इस काल के उपकर छोटे पत्थरों से बने हुए थे, जिन्हें **माइक्रोलिथिक** (सूक्ष्म पाषाण) कहा गया है। लघुपाषाण उपकरणों के अलावा इस काल के प्रमुख उपकरण स्क्रेपर, ब्लेड, क्रोड, बेधनी, त्रिकोण, नवचंद्राकार, समलम्ब त्रिभुज आदि हैं।

इस काल में मानव न केवल बड़े, बल्कि छोटे जानवरों (पक्षी, मछली आदि) का भी शिकार करने लगा था। इसी काल में सर्वप्रथम **तीर-कमान** (प्रक्षेपास्त्र तकनीक) का विकास हुआ।

इस काल में **आदमगढ़** (होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) व **बागौर** (भीलवाड़ा, राजस्थान) से 5000 ई. पू. के **पशुपालन के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होते हैं। मानव द्वारा पालतू बनाया गया पहला पशु कुत्ता था।

इस काल में शैलचित्रों के महत्वपूर्ण स्थल थे - मुरहना पहाड़ (उत्तर प्रदेश), भीमबेटका, आदमगढ़ व लाखाजुआर (मध्य प्रदेश), कुपागल्लू (कर्नाटक) आदि। इनमें से **सर्वाधिक चित्र भीमबेटका के शैलाश्रयों से** प्राप्त हुए हैं।

गंगा घाटी में स्थित **सरायनाहरराय, महादहा, दमदमा** (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश) नामक स्थल भारत में सबसे प्राचीनतम् मध्य पाषाणकालीन स्थल हैं। इन तीनों स्थलों से **स्तम्भगर्त व गर्तचूल्हों के प्रारंभिक साक्ष्य** मिले हैं। गर्तचूल्हों में पशुओं की हड्डियां जली हुई हैं। इस प्रकार मानव कच्चे मांस को पकाने की प्रक्रिया को अपनाने लगा था। इन तीनों स्थलों से पशुओं की हड्डियों के उपकरण तथा हिरण के सींगों के छल्ले प्राप्त हुए हैं। सरायनाहरराय से 8 गर्तचूल्हों की प्राप्ति हुई है। **महादहा** से **हड्डियों के आभूषण** तथा **युग्मित शवाधान** प्राप्त हुए हैं।

इस काल में राजस्थान स्थित **सांभर झील** के निक्षेपों से विश्व के **प्राचीनतम् वृक्षारोपण के साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। मध्य पाषाणकालीन कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थल लंघनाज (गुजरात), टेरी समूह (तमिलनाडु), बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल) आदि हैं।

❐ नव पाषाणकाल :-

विश्व स्तर पर इस काल की शुरूआत 9000 ई. पू. में हुई, जबकि भारत में इसकी शुरूआत 7000 ई. पू. से मानी जाती है। नव पाषाणकाल शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सर जॉन लुवाक ने 1865 ई. में किया था। नव पाषाणकालीन प्रथम स्थल की खोज सर मेस्यूरर (Mesurror) के द्वारा की गई थी। इस काल की प्रमुख विशेषताएं कृषि कार्य, पशुपालन, पत्थर के औजारों को पॉलिशदार व घर्षित करना, मृद्भांड बनाना, अग्नि के उपयोग का ज्ञान आदि थीं।

पाकिस्तान स्थित **पश्चिमी बलुचिस्तान** प्रांत के **मेहरगढ़** नामक स्थान से **कृषि का प्रारंभिक साक्ष्य** प्राप्त होता है, जिसका काल 7000 ई. पू. है। मेहरगढ़ से गेहूं की 3 एवं जौ की 2 किस्मों की खेती के साक्ष्य मिलते हैं। मेहरगढ़ के द्वितीय काल से गेहूं, जौ, अंगूर एवं कपास की खेती के प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार मेहरगढ़ से **कपास उत्पादन के विश्व के सबसे प्राचीन साक्ष्य** भी प्राप्त होते हैं। संभवत: हड़प्पावासियों ने गेहूं, जौ, कपास की खेती मेहरगढ़ के पूर्वजों से ही सिखी थी। **विश्व की प्राचीनत्म फसल गेहूं** को माना जाता है। मेहरगढ़ को **बलुचिस्तान की रोटी की टोकरी** कहा जाता है। इस प्रकार मेहरगढ़ से भारत में **स्थायी निवास का प्राचीनतम् साक्ष्य** भी प्राप्त होता है। हाल ही में **लहुरादेव** (संत कबीर जिला, उत्तर प्रदेश) से 9000 ई. पू. -8000 ई. पू. के खेती के सबसे प्राचीनत्म साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, परन्तु अभी यह शोध का विषय है। **मेहरगढ़** से पशुपालन के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं, यहां से भारतीय महाद्वीप में **पालतू भैंसे का प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होता है। मेहरगढ़ से **पाषाणयुग से लेकर हड़प्पा संस्कृति तक के सांस्कृतिक अवशेष** प्राप्त होते हैं।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

उत्तर प्रदेश स्थित बेलन घाटी (मिर्जापुर) के **कोल्डीहवा** नामक स्थान से **वन्य एवं कृषिजन्य दोनों प्रकार की धान की खेती के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं, जिसका समय 5000 ई. पू. (चौथी सहस्त्राब्दी ई. पू.) माना जा सकता है। बेलन घाटी में स्थित **चौपानीमांडो** नामक स्थान से **चाक् निर्मित मृदभाण्डों के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार **बैलगाड़ी के पहिये के प्राचीनतम् साक्ष्य** नव पाषाणकाल से ही प्राप्त होते हैं। महागरा (उत्तर प्रदेश) से गौशाला तथा धान व जौ के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। बिहार स्थित चीरान्द, सेनुवार, चैचर, ताराडीह महत्वपूर्ण नव पाषाणकालीन स्थल है। इनमें से **चीरान्द (पटने)** से **हिरण के सिंगों से निर्मित छल्ले** (मृगशृंग छल्ले) प्राप्त हुए हैं।

कश्मीर स्थित **बुर्जहोम** तथा **गुफ्फकराल** नव पाषाणकालीन महत्वपूर्ण स्थल हैं, जिनकी खोज क्रमशः टेरी व पीटरसन तथा शर्मा ने की थी। इन दोनों स्थलों से **गर्तनिवास**, मृदभाण्ड की विविधता, कृषि उत्पादन, पशुपालन तथा प्रस्तर व अस्थि उपकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। ज्ञात रहे कि इन दोनों स्थलों से सूक्ष्म प्रस्तर उपकरण बहुत कम प्राप्त हुए हैं। **बुर्जहोम** से **मालिक के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य** प्राप्त हुआ है। **गुफ्फकराल** से **मृदभांडरहित गर्तनिवास के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं।

दक्षिण भारत स्थित मास्की, ब्रह्मगिरी, हल्लूर, कोडक्कल, पीकलीहल, संगेनकल्लू, टेक्कलकोट्टा व कुपागल्लू (कर्नाटक), उतनूर (आन्ध्र), पोचमपल्ली (तमिलनाडु) आदि नवपाषाणकालीन स्थल है, जो 9000 ई. पू.-2600 ई. पू. से संबंधित हैं। इनमें से **कोडक्कल, उतनूर, कुपागल्लू** आदि स्थलों से **राख के टीले** (अंश टीले) प्राप्त हुए हैं। दक्षिण भारत से प्राप्त **पहली फसल रागी** (मिलेट) व दूसरी फसल कुलथी थी। यहां से चावल, गेहूं व जौ के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। दक्षिण भारत के नवपाषाणकालीन स्थलों से पत्थर व तांबे के साथ लौह उपकरण भी प्राप्त होते हैं। नवपाषाणकालीन बस्ती स्थल - चिरांद (बिहार), समाधि स्थल - पोरकालम (केरल), बस्ती व समाधि स्थल -पिकलीहल (कर्नाटक) हैं।

❐ ताम्रपाषाण काल (2000 ई. पू. - 500 ई. पू.) :-

ताम्रपाषाण काल को अंग्रेजी में **Chalcolithic Age** कहते हैं। **मनुष्य द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली प्रथम धातु तांबा थी।** इस काल में प्रस्तर तांबा के साथ-साथ निम्न गुणवत्तायुक्त कांसे का भी प्रयोग होता था।

- **आहार / गिलुन्द / बनास संस्कृति (3000 ई. पू. - 1500 ई. पू.)** - राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में बनास नदी घाटी में बनास संस्कृति का विकास हुआ। इस संस्कृति की मुख्य विशेषताओं को दर्शाने वाले स्थल आहार के नाम पर इसे आहार संस्कृति भी कहा जाता है। आहार को **ताम्रवती** कहा गया है, क्योंकि यहां से पत्थर के बजाय ज्यादातर तांबे के ही औजार प्राप्त हुए।

  आहार के उत्तर-पूर्व में स्थित गिलून्द से भी पत्थरों के नगण्य उपयोग तथा ईंटों के अधिक प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए। गिलून्द से फलक उद्योग भी प्राप्त हुए हैं। एच. डी. संकालिया के द्वारा किए गए उत्खनन में यहां से अग्निकुण्ड का साक्ष्य भी मिला है।
- **कायथा संस्कृति (2000 ई. पू. - 1800 ई. पू.)** - 1664 ई. में वी. एस. वाकड़कर द्वारा कायथा संस्कृति को प्रकाश में लाया गया। कायथा संस्कृति **हड़प्पा संस्कृति की कनिष्ठ समकालीन** मानी जाती है। यहां के कुछ मृदभांडों पर प्राक् हड़प्पाई तथा कुछ पर हड़प्पाई प्रभाव दिखाई देता है।
- **स्वाल्दा संस्कृति (2000 ई. पू. - 1800 ई. पू.)** - यह संस्कृति ताप्ती नदी घाटी में स्थित थी।
- **एरण / नवदाटोली / नागदा / मालवा संस्कृति (1700 ई. पू. - 1200 ई. पू.)** - मालवा संस्कृति अपने मृदभांडों (चित्रित काले व लाल मृदभांड) की उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं। मालवा संस्कृति के लोग कटाई, बुनाई में भी दक्ष थे। यहां से चरखे तथा तकलियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। **एच. डी. संकालिया द्वारा उत्खनित नवदाटोली** मालवा संस्कृति का सबसे विस्तृत ताम्रपाषाणकालीन ग्रामीण स्थल है। यहां से सर्वाधिक फसलों की संख्या प्राप्त हुई है।
- **जोरवे संस्कृति (1400 ई. पू. - 700 ई. पू.)** - जोरवे संस्कृति के अन्तर्गत प्रमुख स्थल महाराष्ट्र में गोदावरी व उसकी सहायक प्रवरा नदी घाटी में स्थित - जोरवे, नेवासा, दायमाबाद ईनामगांव, प्रकाश, चंदोली आदि हैं। इस संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता **पूर्ण शवाधान** एवं **कलश शवाधान** पद्धति है। यहां घरों के फर्श के नीचे **बड़ी संख्या में बच्चों के शवों** के साथ कलश भी दफनाए जाते थे, जिनमें मृतक की आवश्यकता की वस्तुएं रखी जाती थीं। यहां मृतक को **उत्तर-दक्षिण दिशा** में दफनाया जाता था। जबकि उत्तर भारत में आंशिक समाधान पद्धति थी। इस संस्कृति के शवाधानों से प्राप्त अस्थियों के अध्ययन से वयस्कों व शिशुओं में दंतक्षरण तथा शिशुओं में स्कर्बी रोग का पता चलता है।

  जोरवे संस्कृति के अन्तर्गत **ईनामगांव** से **कृतिम सिंचाई** के प्राचीनतम् साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यहां से बस्ती की किले बंदी के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यहां केन्द्र में शासक वर्ग, पश्चिम में शिल्पी व प्राचीर के किनारे शेष लोगों के रहने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जिससे सामाजिक दूरी जाहिर होती है। जोरवे संस्कृति के अन्तर्गत **नेवासा** नामक स्थान से पटसन, नैदानिक मृदभांड व टोटीदार बर्तन के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यहां से **रेशम उत्पादन के विश्व के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

इस संस्कृति के अन्तर्गत **दायमाबाद** नामक स्थान से **तांबे का रथ**, भैंसा, हाथी व गेंडा के साक्ष्य तथा गणेश पूजा के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। दायमाबाद हड़प्पाकालीन स्थल भी था। हड़प्पा काल में यहां से **कांसे का रथ** मिला है, जिसमें दो बैलों की जोड़ी जुती है और इसे एक नग्न मानव चला रहा है।

❐ पूर्वी भारत स्थित ताम्रपाषाणकालीन स्थल –

उत्तर प्रदेश स्थित खैराडीह व नरहन, बिहार स्थित चिरान्द, सेनुआर, सोनपुर व ताराडीह, बंगाल स्थित **पांडू रजार ढीबी** व **महीसादल** से भी ताम्रपाषाणकालीन वस्तुएं प्राप्त हुई हैं।

❐ दक्षिण भारत स्थित ताम्रपाषाणकालीन स्थल :–

दक्षिण भारत में ब्रह्मगिरी, मास्की, संगेनकल्लू, पिकलीहल, उतनूर, पोचमपल्ली, नागार्जुनकोण्ड, कोडक्कल आदि स्थानों से ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इनकी सर्वप्रमुख विशेषता **भस्म टीले** (Ash Mont) हैं, जो मवेशी रखने वाली बस्ती के अवशेष हैं। यहां वर्ष के अन्त में मवेशी के गोबर व बाड़े की लकड़ियों को जला दिया जाता था, जिनसे भस्म टीलों का निर्माण हो गया था।

लौह युग :– दक्षिण भारत में ताम्रपाषाणकाल का अन्त व लोह युग का प्रारंभ **1000 ई. पू.** में हुआ। यहां से **लाल व काले मृदभांडों** के साथ लौह उपकरण भी प्राप्त होते हैं। लौह उपकरणों में कृषि उपकरणों की अपेक्षा युद्धास्त्रों की संख्या अधिक है। इस प्रकार उत्तरी भारत के विपरीत दक्षिण भारत में लौह युग पाषाणकाल के तुरन्त बाद प्रारंभ हो जाता है।

वृहदपाषाणकाल :– तत्पश्चात् दक्षिण भारत में महापाषाणकाल / वृहदपाषाणकाल (Megalithic Age) की शुरूआत हुई। **महापाषाणकाल की सूचना हमें उनकी यथार्थ बस्तियों से कम तथा उनकी कब्रों से ज्यादा मिलती है।** ये कब्रें रिहायशी इलाकों से बाहर, वृत्ताकार या चौकोर होती थीं, जिनके ऊपर गोल पत्थर व भीतर आवश्यकता की वस्तुएं रखी जाती थीं, जिनमें **लौह उपरकरण** भी होते थे। उदाहरणार्थ – अदिचनल्लूर व महुरझारी से प्राप्त कब्रें। कब्रगाह मुख्यत: दो प्रकार के थे – **पिट्टबरीयल** (आंशिक शवाधान) एवं **शिष्टबरीयल** (पूर्ण शवाधान)।

❐ ताम्र निधान संस्कृति :–

ताम्र संचय का सबसे प्रथम साक्ष्य 1822 ई. में कानपुर (उत्तर प्रदेश) के पास बिठुर से ताम्र मत्स्य भाले के रूप में प्राप्त हुआ है। परन्तु ताम्र संचय का सबसे बड़ा भण्डार (424 ताम्र उपकरण) मध्य प्रदेश के गंगेरिया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। अब तक ताम्र संचय के कुल 85 स्थान प्रकाश में आए हैं, जिनमें सर्वाधिक स्थल उत्तर प्रदेश से प्राप्त हुए हैं। इटावा (उत्तर प्रदेश) के पास साईपाई नामक स्थान से ताम्र संचय के साथ गैरिक मृदभांड भी प्राप्त हुए हैं। इस आधार पर **ताम्र संचय का संबंध गैरिक मृदभांड से** मान लिया गया।

❐ गैरिक मृदभांड संस्कृति (2000 ई. पू. – 1500 ई. पू.) :–

इस संस्कृति का सर्वप्रथम साक्ष्य उत्तर प्रदेश स्थित **बदायूं** के पास रिसौली और बिजनौर के पास राजपुरपरशु से प्राप्त हुआ है। इस संस्कृति से जुड़े सर्वाधिक स्थल **गंगा–यमुना दोआब** में स्थित आलमगीरपुर, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, अतरंजीखेड़ा, साईपई नामक स्थान से पाए गए हैं। इस **संस्कृति का नामकरण हस्तिनापुर से प्राप्त मृदभांडों के आधार पर** किया गया है। यह संस्कृति तांबे के प्रयोग से संबंधित थी।

❐ काले व लाल मृदभांड संस्कृति (2400 ई. पू. – 100 ई.) :–

इस संस्कृति का सर्वप्रथम साक्ष्य उत्तर प्रदेश स्थित **अतरंजीखेड़ा** नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। तत्पश्चात् **जोधपुर** एवं **नोह** से भी इस संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। काले व लाल मृदभांड उत्तर में रोपण से लेकर दक्षिण में आदिचनाल्लूर तथा पश्चिम में लाखववाल से लेकर पूर्व में पांडु राजार ढीवी तक प्राप्त हुए हैं। **इस मृदभांड का भीतरी व बाहरी किनारा काले रंग तथा शेष मृदभांड लाल रंग से चित्रित होता था।**

❐ चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति :–

इस संस्कृति का सर्वप्रथम साक्ष्य उत्तर प्रदेश स्थित **अहिच्छत्र** नामक स्थान से प्राप्त हुआ है, जबकि सबसे बड़ा स्थल हरियाणा के पास बुखारी है। यह मृदभांड **लोहे के प्रयोग से संबंधित** था। इस संस्कृति से संबंधित **गंगा–यमुना दोआब** से प्राप्त स्थलों से लोहे के उपकरण प्राप्त हुए हैं, परन्तु हस्तिनापुर से लोहे के उपकरण का साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। हस्तिनापुर से चावल तथा अतररंजीखेड़ा से गेहूं व जौ के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा इस संस्कृति से संबंधित अन्य किसी स्थान से अनाज के साक्ष्य नहीं मिलते हैं। कृषि उपकरणों में जखेरा से लोहे की बनी हंसिया व कुदाली प्राप्त हुई है। **भगवानपुरा, दधेरी, नागर व कटपालन** से भी इस संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, परन्तु यहां से लोहे के उपकरण प्राप्त नहीं होते हैं। अत: इन्हें **परवर्ती हड़प्पा संस्कृति का विस्तार** माना जाता है।

❐ उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड संस्कृति :–

इस संस्कृति का सर्वप्रथम साक्ष्य **तक्षशिला** नामक स्थान से प्राप्त होता है, जो **मोर्यकालीन** है। उत्तर प्रदेश व बिहार से भी इस संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। यह संस्कृति आवश्यक रूप से लोहे से संबंधित थी। कालांतर में द्वितीय नगरीकरण, पक्की ईंटों व आहत मुद्रा से संलग्न हो गई।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

सिन्धु घाटी सभ्यता (2500 ई. पू. - 1800 ई. पू.)

भारत में पुरातात्विक स्थलों की खोज का कार्य **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के द्वारा किया जाता है। इस विभाग की स्थापना **1861 ई.** में **सर अलेक्जेंडर कनिंघम** द्वारा की गई थी, इसलिए अलेक्जेंडर कनिंघम को **भारतीय पुरातत्व का जन्मदाता** भी कहा जाता है। धन के अभाव में शीघ्र ही इस विभाग को बंद कर दिया गया। आगे भारतीय गवर्नर जनरल लॉर्ड मियो द्वारा 1871 ई. में पुनः इस विभाग की स्थापना की गई और इसका प्रथम महासचिव सर अलेक्जेंडर कनिंघम को बनाया गया।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज :-*

सिन्धु घाटी सभ्यता **आद्य ऐतिहासिक काल** से संबद्ध है। **यह सभ्यता मिस्र, सुमेरिया / मेसोपोटामिया की सभ्यता के समकालीन** थी। सर्वप्रथम **1826 ई.** में **चार्ल्स मैसन** ने हड़प्पा नामक स्थान पर एक प्राचीन सभ्यता के दबे होने की बात लिखी थी तथा **हड़प्पा के विशाल टीले की ओर संकेत** किया था। यद्यपि 1853 ई. - 1856 ई. में **अलेक्जेंडर कनिंघम** ने यहां का अवलोकन किया था, परन्तु वे सही प्रकार से इस स्थल का **महत्व नहीं समझ सके** थे। आगे **1921 ई.** में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के तृतीय अध्यक्ष **जॉन मार्शल के निर्देशन में** हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदाई का कार्य क्रमशः दयाराम साहनी व राखालदास बेनर्जी द्वारा किया गया।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का नामकरण :-*

इस सभ्यता को **सिन्धु घाटी सभ्यता** नाम **जॉन मार्शल** ने दिया था। इस सभ्यता के अन्य प्रमुख नाम **हड़प्पा सभ्यता, सिन्धु-सरस्वती सभ्यता, काँस्ययुगीन सभ्यता** एवं **प्रथम नगरीय सभ्यता** हैं। इन सभी नामों में से **सर्वाधिक उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता** होना चाहिए, क्योंकि सबसे पहले हड़प्पा स्थल को ही खोजा गया था।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का उद्‌भव :-*

ईराक स्थित मेसोपोटामिया / सूमेरियाई प्रभाव से : *समर्थक* - मार्टीमर व्हीलर, गार्डन चाइल्ड, लियोनार्ड बूली, डी. डी. कोशांवी, क्रेमर आदि। सिंधु व सूमेरियन सभ्यता में **एक समान अन्न भण्डार प्रणाली** थी।

ईरानी-बलूची संस्कृति के विकास से : *समर्थक* - फेयरसर्विस, रोमिला थापर आदि। फ्रेयरसर्विस के अनुसार **ब्लूचिस्तान** की **नाल, कुल्ली** व **रानाघुंडई** तथा **सिंध** की **आमरी** व **कोटदीजी** के **प्राक् हड़प्पन** ग्रामीण संस्कृतियों से इस सभ्यता का उदय हुआ।

देशी प्रभाव से (सर्वाधिक मान्य मत) : *समर्थक* - अमलानन्द घोष, धर्मपाल अग्रवाल, ब्रिजेट ऑलचिन आदि। अमलानन्द घोष ने बीकानेर क्षेत्र में **सोथी संस्कृति** की खोज कर इस ग्रामीण संस्कृति से नगरीकृत सिन्धु घाटी सभ्यता के उद्‌भव को सर्वाधिक मान्य मत माना है।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का विस्तार :-*

इस सभ्यता का **क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी** तथा आकार **त्रिभुजाकार** था, जो पूर्व से पश्चिम 1600 किमी तथा उत्तर से दक्षिण 1400 किमी तक विस्तृत थी। इस सभ्यता से संबंधित लगभग 1500 स्थल प्रकाश में आए हैं, जिनमें से केवल 7 स्थल (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनावली एवं धौलावीरा) ही नगरीकृत हैं।

इस सभ्यता का विस्तार उत्तर में चिनाब नदी के किनारे मांडा (कश्मीर), दक्षिण में गोदावरी नदी के किनारे दायमाबाद (महाराष्ट्र), पश्चिम में दास्क नदी के किनारे सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) तथा पूरब में हिंडन नदी के किनारे आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) तक था। इस सभ्यता की **बस्तियों का सर्वाधिक संकेन्द्रण सरस्वती नदी** तथा इसकी सहायक **घग्घर-हाकरा नदी** के मध्य था। सरस्वती नदी को **विनसन** नामक स्थान पर विलुप्त होना माना जाता है।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल :-*

अफगानिस्तान - शोर्तुघई, मुण्डीगॉक।
जम्मू - मांडा।
उत्तर प्रदेश - आलमगीरपुर, सनौली।
पंजाब - हड़प्पा, रोपड़, बारा, संघोल।
सिंध - मोहनजोदड़ो, चान्हूदडो, आमरी, कोटदीची, अलीमुराद, जुडेरजोदड़ो।
गुजरात - देसलपुर, सुरकोटड़ा, धौलावीरा (कच्छ प्रदेश), लोथल, रंगपुर, रोजदी, मालवन, भगवतराव (काठियावाड़ प्रदेश)।
- **स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक स्थलों की खुदाई** गुजरात प्रांत में ही हुई थी।

बहावलपुर - कुडवालाथेर।
राजस्थान - कालीबंगा।
हरियाणा - बनावली, राखीगढ़ी, मित्ताथल।
ब्लूचिस्तान - सुत्कागेंडोर, सोतकाकोह, बालाकोट, डाबरकोट।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❒ *सिन्धु घाटी सभ्यता का काल निर्धारण :-*

हड़प्पाकालीन नगरों को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है -

1) **प्राक्हड़प्पाई स्थल** - अफगानिस्तान स्थित मुंडीगाक, ब्लूचिस्तान स्थित मेहरगढ़, किलेगुल मोहम्मद, पेरियानोघुंडई, राणाघुंडई, कुल्ली, व नाल, **सिंध स्थित आमरी व कोटदिजी**, पंजाब स्थित हड़प्पा, सराखोला व जलीलपुर, राजस्थान स्थित कालीबंगा और हरियाणा स्थित राखीगढ़ी व बनावली।

2) **हड़प्पाकालीन स्थल** - इसका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है (सिन्धु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल , पेज नं. 6)।

3) **हड़प्पोत्तर स्थल** - गुजरात स्थित रोजदी व रंगपुर।

- **तीनों कालों के स्थल** - सुरकोटदा, धौलावीरा, राखीगढ़ी एवं मांडा।

सिन्धु घाटी सभ्यता के काल निर्धारण को लेकर यद्यपि विद्वानों में मतभेद हैं, लेकिन सर्वाधिक मान्य मत है कि **परिपक्व हड़प्पा काल 2500 ई. पू. से 1800 ई. पू.** तक रहा होगा।

❒ *सिन्धु घाटी सभ्यता की प्रजातियां :-*

इस सभ्यता में भू-मध्य सागरीय, प्रोटोआस्ट्रेलायड (काकेशियन), मंगोलायड एवं अल्पाइन प्रजातियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इनमें से सिन्धु क्षेत्र में आने वाली प्रथम प्रजाति प्रोटोआस्ट्रेलायड थी, जबकि **भू-मध्यसागरीय प्रजाति के लोग सर्वाधिक** थे। यहां यह ध्यातव्य है कि इस सभ्यता में **निग्रो प्रजाति नहीं** पाई गई है।

❒ *सिन्धु घाटी सभ्यता का नगर नियोजन :-*

इस सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता नगर नियोजन थी। प्रत्येक नगर दो भागों में विभक्त थे - पश्चिमी टीले (दुर्ग टीला) तथा पूर्वी टीले (आवास क्षेत्र)। पूर्वी टीले में सामान्य नागरिक, व्यापारी, कारीगर और श्रमिक आदि रहते थे, जबकि दुर्ग के अंदर महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं सार्वजनिक भवन तथा अन्नागार स्थित थे।

सामान्यत: पश्चिमी टीला एक रक्षा प्राचीर से घिरा होता था, जबकि पूर्वी टीला नहीं। यद्यपि इसके कुछ अपवाद भी थे। जैसे -

1) कालीबंगा में दुर्ग व नगर क्षेत्र दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरे थे।

2) लोथल व सुरकोटदा का संपूर्ण क्षेत्र एक ही रक्षा प्राचीर से घिरा था।

3) चान्हूदड़ो एकमात्र ऐसा नगर था, जो दुर्गीकृत नहीं था।

4) धौलावीरा का नगर तीन इकाइयों में बंटा था।

इस सभ्यता के नगर शतरंज की विसात की तरह व्यवस्थित थे। नगर का मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण तथा दूसरे मार्ग पूरब से पश्चिम परस्पर समकोण पर काटते थे। सड़कें प्राय: कच्ची होती थीं, **अपवाद - मोहनजोदड़ो**। सड़कों के किनारे **ग्रिड पद्धति** पर नाली की व्यवस्था थी, जिसमें कुड़ा-करकट एकत्रित करने के लिए जगह-जगह ढक्कनयुक्त मेनहोल बने थे। इस सभ्यता के घरों के दरवाजे एवं खिडकियां प्राय: मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गलियों की ओर खुलते थे, **अपवाद - लोथल**।

इस सभ्यता के भवन प्राय: द्विमंजली होते थे। भवनों में प्राय: पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था, **अपवाद - कालीबंगा**। ईंटों का आकार 4 : 2 : 1 था। स्तम्भ प्राय: वर्गाकार होते थे। फर्श प्राय: कच्चा होता था, **अपवाद - कालीबंगा**। **सिन्धु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों से निर्मित सबसे बड़ी इमारत लोथल स्थित गोदीवाडा** (214 x 36 x 3.3 घन मीटर) था, जबकि **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार** (45 x 15 वर्ग मीटर) था।

❒ *सिन्धु घाटी सभ्यता का राजनीतिक जीवन :-*

इस सभ्यता का शासन संभवत: **वणिक वर्ग** के हाथ में था। **स्टुअर्ट पिगट** ने इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानियां हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** के होने का अनुमान लगाया है।

❒ *सिन्धु घाटी सभ्यता का सामाजिक जीवन :-*

इस सभ्यता में **समतामूलक समाज** था, जिसमें मुख्यत: चार वर्ण थे - विद्वान, योद्धा, व्यापारी एवं श्रमिक। हड़प्पा व मोहनजोदड़ो से नारी मृण्मूर्तियों की अत्यधिक संख्या को देखते हुए सैन्धव समाज को **मातृसत्तात्मक** माना जाता है। विभिन्न स्थलों से सौन्दर्य प्रसाधन की कुछ सामग्री प्राप्त होती हैं। जैसे - **चान्हूदडो से लिपिस्टिक, इत्र व काजल**, हड़प्पा से काजल, धौलावीरा से मिट्टी का कंघा, मोहनजोदड़ो से बालों का पिन व चांदी की चूड़ियां आदि। परन्तु इस सभ्यता के लोग आडम्बर व सुन्दरता की बजाय **उपयोगिता पर अधिक बल** देते थे। इस सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधन मछली पकड़ना, शिकार करना, पशु-पक्षियों को लड़ाना, **चौपड़** व **पासा** खेलना, ढोल व वीणा बजाना आदि थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का आर्थिक जीवन :-*

◆ कृषि -

सिन्धु घाटी सभ्यता नदियों के आस-पास विकसित हुई थी। अत: यहां की कृषि विकसित अवस्था में थी। कृषि अधिशेष को अन्नागारों में सुरक्षित रखा जाता था। यह भी कृषि के विकसित होने का प्रमाण है। कृषि कार्य में पत्थर व कांसे के उपकरणों का प्रयोग होता था। **कालीबंगा में नगर की प्राचीर से बाहर प्राक् हड़प्पा काल के जुते हुए खेत का साक्ष्य** प्राप्त हुआ है। पाकिस्तान के चोलिस्तान व भारत के **बनावली** तथा मोहनजोदड़ो से **मिट्टी के हल का साक्ष्य** प्राप्त हुआ है, परन्तु कहीं से भी धातु के फाल का साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है। **मोहनजोदड़ो के घरों से कुंओं के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं।

हड़प्पा सभ्यता में सामान्यत: **फसलें नवम्बर में बोई** व **अप्रैल में काटी** जाती थी। फसलों में गेहूं की तीन, जौ की दो व मटर की एक प्रजाति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। **दाल के साक्ष्य प्राप्त नहीं** होते हैं। **चावल की खेती गुजरात** तथा संभवत: राजस्थान में होती थी। **लोथल** व **रंगपुर** से **मृण्मूर्ति में धान की भूसी** लिपटी मिली है। **रागी** की फसल **उत्तर भारत के किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं** हुई है। हड़प्पाई स्थल **मेहरगढ़ से कपास की कृषि के विश्व के प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होते हैं।

◆ पशुपालन -

इस सभ्यता में पशुपालन का भी महत्व था। पशुओं में मुख्यत: **कुबड़ वाला सांड** तथा इसके अलावा बिना कुबड़ वाले बैल, भैंस, गाय, भेड़, बकरी, कुत्ते, गधे, खच्चर तथा सुअर आदि पालतू पशु थे। **गुजरात के लोग हाथी पालते थे।** कालीबंगा से ऊँट की हड्डियां, राणा घुंडई से घोड़े के दांत, **सुरकोटदा** से **घोड़े की अस्थियां** व मोहनजोदड़ो से घोड़े की मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई है, परन्तु **सिन्धु घाटी सभ्यता में घोड़ा, शेर, बाघ आदि को पालतु नहीं** बनाया जाता था। **घोड़े का अंकन किसी भी मुहर (मुद्रा) पर नहीं मिला है। गाय की आकृति भी किसी मृण्मूर्ति तथा मृदभांड पर प्राप्त नहीं होती है।**

◆ वाणिज्य व्यापार :-

इस सभ्यता की अर्थ व्यवस्था मुख्यत: वाणिज्य व्यापार पर आधारित थी। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो व्यापारिक मार्गों में होने के कारण व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र थे। व्यापार जल व स्थल दोनों मार्गों से किया जाता था। बाह्य व्यापार मुख्यत: मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान, बहरीन, सुमेर, ओमान, सीरिया आदि से होता था। उदाहरणार्थ - **हड़प्पाकालीन मुहरें मेसोपोटामिया** के सूसा, उर व निप्पुर तथा **फारस की खाड़ी** में स्थित फैलका व बहरीन नामक क्षेत्र **से प्राप्त** हुई हैं। **मोहनजोदड़ो** से **मेसोपोटामिया की एक बड़ी बेलनाकार मुहर** तथा **लोथल** से **फारस की खाड़ी की छोटी बेलनाकार मुहर** प्राप्त हुई है। बाह्य व्यापार में रोजनामचे की वस्तुओं की जगह मुख्यत: समृद्ध लोगों की विलासिता संबंधी वस्तुओं को शामिल किया जाता था।

मेसोपोटामिया / सुमेर स्थित अक्काड़ के प्रसिद्ध सम्राट **सारगौन (2350 ई. पू.)** ने यह दावा किया है कि **दिलमन** (बहरीन), **माकन** (मकरान अर्थात् बलुचिस्तान) तथा **मेलूहा** (हड़प्पा सभ्यता) के जहाज उसकी राजधानी में लंगर डालते थे। इस अभिलेख में **दिलमन** (बहरीन) को **उगते हुए सूरज तथा हाथियों का देश** कहा गया है। **दिलमन** (बहरीन) निवासी सिन्धु घाटी सभ्यता तथा मेसोपोटामिया / सुमेर के व्यापार में **मध्यस्थ की भूमिका** निभाते थे। सुमेरियाई लेखों के अनुसार दिलमन तथा हड़प्पा सभ्यता के मध्य सोना, चांदी, लाजवर्द, माणिक, कपास तथा सूती वस्त्र का व्यापार किया जाता था।

आयात - निर्यात :- आयात की प्रमुख मदों में चांदी, टिन, सीसा, फिरोजा आदि का आयात अफगानिस्तान व ईरान से किया जाता था। **लाजवर्द मणि का आयात अफगानिस्तान स्थित बदक्शां नामक स्थान से होता था।** तांबा व अलवास्ट राजस्थान के झुंझनु जिले की खेतरी खान से तथा सोना कर्नाटक के मैसूर जिले की हट्टी खान से प्राप्त किया जाता था। निर्यात की प्रमुख मदों में हाथी दांत व सीप की वस्तुएं, मोती, अनाज, कपास, मयूर का निर्यात विदेशों में किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता में मेसोपोटामिया की वस्तुओं का न पाया जाना इस बात का संकेत है कि मेसोपोटामिया से मुख्यत: कपड़े, ऊन, खुशबूदार तेल व चमड़े का आयात किया जाता था। चूंकि ये वस्तुएं जल्दी नष्ट हो जाती थीं, अत: ये वस्तुएं हड़प्पा सभ्यता में प्राप्त नहीं होती हैं।

यातायात के साधन व बंदरगाह :- आंतरिक व्यापार में मुख्यत: ठेलागाड़ी व बैलगाड़ी, जबकि बाह्य व्यापार में नावों आदि का प्रयोग किया जाता था। **हड़प्पा व चान्हूदडो से कांसेगाड़ी का साक्ष्य**, लोथल से पक्की मिट्टी की नाव तथा मोहनजोदड़ो से मुहर में अंकित नाव का साक्ष्य प्राप्त होता है। बाह्य व्यापार में बंदरगाहों का प्रमुख स्थान था। महत्वपूर्ण बंदरगाहों में गुजरात स्थित लोथल, रंगपुर, प्रभासपाटन तथा बलुचिस्तान स्थित बालाकोट, सुत्कांगेडोर, सुत्काकोह, अल्लाहदिनो आदि थे। इनमें **सर्वाधिक महत्वपूर्ण लोथल स्थित ज्वारीय बंदरगाह** था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

माप-तौल के साधन :- माप-तौल के साधनों में सीप के बाट व हाथी दांत की स्केल का प्रयोग किया जाता था। **मोहनजोदड़ो** से **सीप का बना बाट** तथा **लोथल** से **हाथी दांत का स्केल** प्राप्त हुआ है। **गणना में** मुख्यत: **16 की संख्या** तथा उसके गुणक का प्रयोग किया जाता था। ऊपरी स्तर पर दशमलव प्रणाली, जबकि निचले स्तर पर द्वीभाजन प्रणाली प्रचलित थी।

- **शिल्प एवं उद्योग -**

सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्त्र उद्योग था। मोहनजोदड़ो से तांबे के दो उपरकणों में लिपटा हुआ **सूती वस्त्र** व धागे प्राप्त हुए हैं, जबकि कालीबंगा से सूती वस्त्र में लिपटा हुआ उस्तरा मिला है। शिल्प उद्योग में शंख, सीप, हाथी दांत, गोमेद, फिरोजा, सेलखड़ी, मिट्टी, धातु व प्रस्तर की वस्तुएं बनाई जाती थीं। इनसे न केवल बर्तन, बल्कि मनके व मुहरें भी बनाई जाती थीं।

मृदभांड :- मिट्टी के बर्तन अर्थात् **मृदभांड चाक तथा हाथ से बनाए जाते थे, जिन पर लाल रंग का प्रयोग किया जाता था तथा डिजाईन भी बना दी जाती थी।** हड़प्पा सभ्यता से **मुख्यत: लाल व काले मृदभांड** प्राप्त हुए हैं। **लोथल से प्राप्त मृदभांड में चोंच में मछली दबाए चिड़िया तथा पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी की कथा का अंकन** है। **परवर्ती हड़प्पाकालीन** स्थलों से **चित्रित धूसर मृदभांड** प्राप्त होते हैं।

मनका :- मनका बनाने के कारखाने का साक्ष्य चान्हूदडो तथा **लोथल से**, जबकि सीप उद्योग का साक्ष्य बालाकोट तथा लोथल से प्राप्त हुआ है।

मुहरें :- सिन्धु घाटी में लगभग 2500 मुहरें प्राप्त हुई हैं। मुहरों का प्रयोग सिक्कों के रूप में तथा उच्च वर्ग के द्वारा अपनी वस्तुओं के पहचान के लिए किया जाता था। **सर्वाधिक मुहरें चौकोर या वर्गाकार हैं। अधिकांश महुरें सेलखड़ी** (Steatite) **से निर्मित** होती थीं। कुछ मुहरें हाथी दांत, कांचली मिट्टी, गोमेद, चर्ट आदि से भी बनती थीं। मुहरों में प्राय: एक श्रृंगी पशु, भैंसा, बाघ, बकरी तथा हाथी की आकृति उकेरी जाती थी। मुहरों में **सर्वाधिक आकृति एक श्रृंगी पशु** की होती थी। सिन्ध से बाहर मात्र कालीबंगा की मुहरों पर बाघ का चित्रण मिलता है। **मुहरों में गाय, घोड़ा, ऊँट, शेर आदि की आकृति प्राप्त नहीं होती है।**

लोथल व देशलपुर से तांबे की मुहरें (मुद्राएं) भी प्राप्त हुई हैं, जबकि **मोहनजोदड़ो, कालीबंगा** व **लोथल** से सेन्धव लिपियुक्त **राजमुद्रांक** प्राप्त हुए हैं। लोथल से बीज बोने की आकृतियुक्त मुहर तथा मोहनजोदड़ो से पशुपति शिव व गणेश का चित्रांकनयुक्त मुहर प्राप्त हुई हैं। **मोहनजोदड़ो** से प्राप्त एक **मुहर में योगी** की मुद्रा में एक व्यक्ति का चित्र है, जिसके तीन मुख व दो सींग हैं। इसके बायीं ओर **बाघ (चीता)** व **हाथी** तथा दायीं ओर **भैंसा** व **गेंडा** की आकृति बनी है। आसन के नीचे दो हिरण बैठे हुए हैं। जॉन मार्शल ने इसे **पाशुपत शिव** कहा है।

मृण्मूर्तियां (टेरीकोटा फिगर्स) :- भारत में मूर्ति पूजा का प्रारंभ हड़प्पा काल से माना जाता है। इनका निर्माण **चिकोटी विधि** से किया जाता था। इस सभ्यता में मृण्मूर्तियों का प्रयोग खिलौना तथा पूज्य प्रतिमाओं के रूप में होता था। अधिकांश मृण्मूर्तियां हाथों से, जबकि कुछ सांचों से निर्मित होती थीं। मृण्मूर्तियों में पशुओं, पक्षियों, पुरूषों तथा स्त्रियों के चित्र उकेरे गए हैं। **सर्वाधिक मृण्मूर्ति कुबड़ वाले सांड की प्राप्त होती हैं।** पशु-पक्षियों में बैल, भैंसा, भेड़, बकरा, बाघ, सुअर, गेंडा, भालू, बंदर, मोर, तोता, बत्तख, सांप, कबूतर आदि की मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा से घड़ियाल, कछुआ व मछली की मृण्मूर्तियां, मोहनजोदड़ो से घोड़े की मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। **गाय की मृण्डमूर्ति प्राप्त नहीं** हुई है।

पुरूषों की अपेक्षा नारी मृण्मूर्तियां अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं। नारी मृण्मूतियां अधिकांशत: भारत के बाहर के स्थलों जैसे हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चान्हूदडो आदि से प्राप्त हुई हैं। भारत के राजस्थान व गुजरात आदि के किसी क्षेत्र से भी नारी मृण्मूर्ति नहीं मिली है। केवल हरियाणा के बनावली से दो नारी मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। नारी मृण्मूर्तियों में भी कुंआरी नारी की मृण्मूर्तियां सर्वाधिक प्राप्त हुई है।

धातु मूर्तियां :- इस सभ्यता के लोग तांबा, कांसा, टिन, सोना, चांदी आदि धातुओं का प्रयोग मूर्तियां बनाने में करते थे। मूर्तियों में मधूच्छिष्ठ विधि या द्रवी मोम विधि या लुप्त मोम विधि (Lost-Wax) का प्रयोग किया जाता था। **कांसा व चांदी का सर्वप्रथम साक्ष्य सिन्धु घाटी सभ्यता से ही प्राप्त** होता है। इस सभ्यता के लोगों को **लोहे का ज्ञान नहीं** था। **मोहनजोदड़ो** व **चान्हूदडो** से **कांसे की नग्न नर्तकी की मूर्ति** तथा **हड़प्पा** व **चान्हूदडो** से **कांसे की इक्का गाड़ी** मिली है। मोहनजोदड़ो से कांसे का भैंसा व भेंड़, कालीबंगा से तांबे का वृषभ एवं लोथल से तांबे का कुत्ता प्राप्त हुआ है। **दायमाबाद से कांसे का रथ** प्राप्त हुआ है।

प्रस्तर मूर्तियां :- प्रस्तर कला में हड़प्पा सभ्यता पिछड़ी हुई थी। प्रस्तर मूर्तियां प्राय: अण्डित अवस्था में प्राप्त हुई है। सिन्ध में स्थित सुक्कर एवं रोहड़ी से पत्थर के उपकरण बनाने के कारखानों का साक्ष्य मिला है। हड़प्पा से पुजारी की प्रस्तर मूर्ति प्राप्त हुई है। **मोहनजोदड़ो** से सेलखड़ी से निर्मित **पुरूष आकृति का ऊपरी धड़** प्राप्त हुआ है। यह मूर्ति 19 सेमी लम्बी है, चहरे पर दाढ़ी है, लेकिन मुंछ नहीं है। यह ध्यानमग्न मुद्रा में तिपतिया छाप वाला शॉल ओढे हुए है।

हाथी दांत एवं हड्डी के उपकरण :- मोहनजोदड़ो से हड्डी की बनी सूइयां तथा हाथी दांत पर बनी पुरूष आकृति की साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। **लोथल से हाथी दांत का स्केल** प्राप्त हुआ है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि :-*

हड़पाई **लिपि** के साक्ष्य **मुहरों** के अलावा **मृदभांडों** से भी प्राप्त हुए है। **सिन्धु लिपि का सर्वप्रथम साक्ष्य 1853 ई. में प्राप्त हुआ, जबकि 1923 ई. तक पूरी लिपि प्रकाश में आई।** यह **भाव चित्राक्षर लिपि** (Pictograph) है, जिसे **वाउसट्रोफेन्डम लिपि** भी कहते हैं, क्योंकि ऐसी लिपि पहले दायें से बायें तथा पुनः बायें से दायें लिखी जाती थी। जिसमें 64 मूल चिह्न एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं, जिनमें सर्वाधिक अंग्रेजी का यू (U) अक्षर तथा आकृति में सर्वाधिक मछली की आकृति प्राप्त हुई है। इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। यद्यपि इस **लिपि को पढ़ने का प्रयास** के. एन. वर्मा, एस. आर. राव, **आई. महादेवन** तथा रेवरण्ड हेरस ने किया है। **रेवरण्ड हेरस** ने सिन्धु लिपि को बायें से दायें पढ़ने और उसे **तमिल भाषा में परिवर्तित करने का दावा** किया है। **विश्व में सर्वप्रथम क्यूनीफार्म नामक लिपि का अविष्कार सुमेरियन सभ्यता के लोगों द्वारा** किया गया था। डॉ. मजुमदार ने हड़प्पा सभ्यता की लिपि का गोमूत्री लिपि कहा है।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का धर्म :-*

यह मुख्यतः **लौकिक सभ्यता** थी, जिसमें यद्यपि **धार्मिक तत्व उपस्थित** था, **परन्तु वर्चस्वशाली नहीं**। इस सभ्यता से **मंदिर के साक्ष्य प्राप्त नहीं** होते हैं। **जल पूजा** प्रचलित थी। मोहनजोदड़ो से वृहद स्नानागार तथा पुरोहित आवास के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इससे स्नान के महत्व का पता चलता है। **वृहद स्नानागार** का **फर्श पक्की ईंटों से निर्मित** था, जिसमें उतरने के लिए **उत्तर-दक्षिण की ओर सिढ़ियां** बनी थीं।

इस सभ्यता में **मातृदेवी की पूजा** प्रचलित थी। हड़प्पा से प्राप्त मुहर में एक स्त्री के गर्भ से पौधा प्रस्फुटित होता दिखाया गया है, जो संभवतः **पृथ्वी पूजा** (उर्वरता की देवी) का प्रमाण है। इसकी पूजा उसी तरह की जाती थी, जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस की पूजा करते थे। **पाशुपति शिव की पूजा** भी प्रचलित थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर में योगी की मुद्रा में एक व्यक्ति का चित्र है, जिसे मार्शल महोदय ने इसे पाशुपत शिव कहा है।

लिंग पूजा व **पशु पूजा** के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। पशु में **कुबड़ वाले सांड की पूजा** की जाती है। **मोहनजोदड़ो** से **वृषभ मुद्रा** प्राप्त हुई है। **वृक्ष पूजा** भी प्रचलित थी। पीपल, नीम व बबूल की पूजा की जाती थी। **नाग पूजा** भी प्रचलित थी। लोथल से प्राप्त कुछ मृदभांडों पर नाग की आकृति बनी है। **अग्नि पूजा** भी प्रचलित थी। **कालीबंगा** तथा **लोथल** से **अग्निवेदिका के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं। इस सभ्यता के धर्म में **प्रेतवाद** का भाव दिखाई देता है। प्रेतवाद वह धार्मिक अवधारणा है, जिसमें प्रेतों की पूजा बुरी आत्मा के भय से की जाती थी। इस सभ्यता में हमें **भक्ति** तथा **पूनर्जन्म** के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। **वर्तमान में धर्म के क्षेत्र में भारतीय जीवन सिन्धु घाटी सभ्यता से प्रेरणा ले रहा है।**

अन्त्येष्टि के प्रकार :- अन्त्येष्टि के तीन प्रकार प्रचलित थे - पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाह संस्कार। **सबसे अधिक पूर्ण समाधिकरण** प्रचलित था। कब्रिस्तान बस्ती से बाहर होते थे। **लोथल** से **तीन युग्म समाधियां** तथा **कालीबंगा** से **एक युग्म समाधि** के साक्ष्य मिले हैं। **रोपण** की एक **कब्र में मालिक के साथ कुत्ते** को भी दफनाया गया है। **हड़प्पा** नगर के दक्षिण दिशा में **कब्रिस्तान R-37** प्राप्त होता है, जिसमें **देवदारू लकड़ी से निर्मित ताबूत** (काष्ठ शव पेटिका) मिला है। हड़प्पा से तीन कक्षों वाला **कब्रिस्तान H** प्राप्त हुआ है, जो **पूर्ण समाधिकरण का साक्ष्य** है। **मोहनजोदड़ो** से कोई भी **कब्रिस्तान प्राप्त नहीं** हुआ है।

❐ *सिन्धु घाटी सभ्यता का पतन :-*

इस सभ्यता के पतन के संबंध में विद्वानों में मतभेद है।

1)	पारिस्थितिक असंतुलन	- फेयर सर्विस।
2)	वर्धित शुष्कता और घघ्घर का सूख जाना	- डी. पी. अग्रवाल, अमलानन्द घोष, सूद।
3)	नदी मार्ग में परिवर्तन	- माधोस्वरूप वत्स, लैम्ब्रिक।
4)	बाढ़ **(सर्वाधिक मान्य)**	- जॉन मार्शल, मैके (चान्हूदड़ो से), एस. आर. राव (लोथल से)।
5)	जल प्लावन / भूकम्प / सुनामी	- एम. आर. साहनी, आर. एल. राइक्स, डेल्स।
6)	बाह्य आक्रमण / आर्य आक्रमण	- मर्टिमर व्हीलर, गार्डन चाईल्ड। - मत का अधार - मोहनजोदड़ो से नरकंकाल के साक्ष्य, ऋग्वेद में प्रयुक्त **हरियूपिया** (हड़प्पा) शब्द तथा इन्द्र की उपाधि **पुरन्दर** (किलो का भंजक)।
7)	प्रशासनिक शिथिलता	- जॉन मार्शल।
8)	जलवायविक परिवर्तन	- ऑरैल स्टाइन।

निष्कर्ष :- अलग-अलग स्थलों के पतन के लिए अलग-अलग कारक उत्तरदायी रहे होंगे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

स्थल	स्थान	नदी	खोजकर्ता	विशेषताएं
हड़प्पा	पाकिस्तान स्थित पंजाब (मांट गोमरी जिला)	रावी के बायें तट पर	दयाराम साहनी (1921 ई.)	- प्रथम उत्खनित स्थल, क्षेत्रफल में दूसरा सबसे बड़ा नगर। - तांबे की मानवाकृति। - श्रमिक आवास। - नटराज की आकृति जैसी स्लेटी चूने पत्थर की नृत्य मुद्रा वाली मूर्ति।
मोहनजोदड़ो (मृतकों का टीला)	पाकिस्तान स्थित सिंध (लरकाना जिला)	सिंधु के दायें तट पर	राखालदास बनर्जी (1922 ई.)	- क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर। - वृहद्स्नानागार, सभागार, पुरोहित आवास, अन्नागार। - कांसे की नृत्य मुद्रा वाली मूर्ति। - वृषभ मुद्रा, सूती वस्त्र। - मलेरिया के साक्ष्य (के. वी. आर. केनेड़ी)। - घर-घर कुएं व शौचालय।
लोथल (मुर्दों का नगर)	गुजरात (अहमदाबाद जिला)	भोगवा	एस. आर. राव (1957 ई.)	- लघु हड़प्पा एवं लघु मोहनजोदड़ो। - गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड)। - मृदभांड पर पंचत्रंत की चालाक लोमड़ी का अंकन। - अग्नि वेदिका, रंगाईकुंड एवं मनके बनाने का कारखाना। - युगल शवाधान।
कालीबंगा (काले रंग की चूड़ियां)	राजस्थान (गंगा नगर जिला)	घघ्घर	अमलानन्द घोष (1960 ई.), बी. बी. लाल व वी. के. थापर (1961 ई.)	- हल से जुते हुए खेत। - अग्निकुंड, अलंकृत ईंट, युगल शवाधान। - मृण-पट्टिका पर सींगयुक्त देवता तथा बकरे को ले जाते हुए पुरूष की आकृति। - विवर्तनीक परिवर्तन (भूकम्प) का प्राचीनतम् साक्ष्य।
चन्हुदडो	पाकिस्तान स्थित सिंध	सिंधु	एन. जी. मजूमदार (1931 ई.) तथा मैके (1935 ई.)	- सिन्ध स्थित झूकर-झाकर संस्कृति विकसित। - मिट्टी की पकी हुई पाइपनुमा नाली, वक्राकार ईंटें। - ईंट पर बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते का पद चिह्न। - मूहर में तीन घड़ियाल व दो मछलियों का अंकन। - सौन्दर्य प्रसाधन में लिपिस्टिक व इत्र के साक्ष्य। - मनके बनाने का कारखान।
बनावली	हरियाणा (हिसार जिला)	सरस्वती	आर. एस. विष्ट (1973 ई.)	- पकी मिट्टी का बना हल। - जल निकास प्रणाली का अभाव।
धौलावीरा / जूनी-कुरान (सफेद कुआं)	गुजरात के कच्छ प्रदेश में खादिर / बैठ द्वीप पर स्थित (भचाऊ जिला)	मानसर व मानहर नदी के मध्य	जगपति जोशी (1967 ई.)	- नगर तीन भागों में विभक्त। - भारत में उत्खनीत दूसरा सबसे बड़ा हड़प्पाई नगर। - विशाल जलाशय। - उन्नत जल प्रबंधन व्यवस्था। - नगर का आकार - समानान्तर चतुर्भज तथा स्टेडियम। - दस चिह्नयुक्त शैलकृत स्थापत्य। - साइन बोर्ड अर्थात् - नाम पट्टिका / सूचना पट्टिका अभिलेख, जिस पर जिप्सम की लिखावट है। (बड़ी लिपि का साक्ष्य)

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

स्थल	स्थान	नदी	खोजकर्ता	विशेषताएं
रोपड़	भारत स्थित पंजाब	सतलज	यज्ञदत्त शर्मा (1953 ई.)	– स्वतंत्रता पश्चात् सर्वप्रथम खुदाई। – एक ही कब्र में मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता।
राखीगढ़ी	हरियाणा	घग्घर	सूरजभान (1969 ई.) व अमरेन्द्र नाथ (1997 ई.)	– भारत में उत्खनीत सबसे बड़ा हड़प्पाई नगर।
सूरकोटदा	गुजरात का कच्छ प्रदेश		जगपति जोशी (1964 ई.)	– घोड़े की अस्थियां। – भूकम्प के साक्ष्य।
आमरी	पाकिस्तान स्थित सिंध	सिंधु	एन. जी. मजूमदार (1929)	– पहला स्थल जहां से सबसे पहले प्राक्हड़प्पा स्थल का अवशेष मिला – बारहसिंगा के साक्ष्य।
रंगपुर	गुजरात का काठियावाड़	भादर	रंगनाथ राव (1953 ई.)	– उत्तर हड़प्पा संस्कृति का साक्ष्य। – धान की भूसी।
कुणाल	हरीयाणा (हिसार जिला)	सरस्वती		– चांदी के दो मुकुट।
अल्लाहदीनो	पाकिस्तान स्थित सिंध	सिंधु	फेयर सर्विस (1982 ई.)	– सिन्धु तथा अरब सागर के संगम पर स्थित।
सनौली	उत्तर प्रदेश (बागपत जिला)			– 125 मानव शवाधान प्राप्त।
आलमगीरपुर	उत्तर प्रदेश (मेरठ जिला)	हिण्डन (यमुना (की सहायक)		– मृद्रा के साक्ष्य प्राप्त नहीं। – हड़प्पा सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल।
सुत्कागेंडोर	पाकिस्तान स्थित ब्लूचिस्तान	दाश्क	ऑरेल स्टाइन (1927 ई.)	– हड़प्पा सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल। – ईरान की सीमा के निकट स्थित। – हड़प्पा सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल।
मांडा	कश्मीर	चेनाब के दायें तट पर	जगपति जोशी व मधुवाला (1982 ई.)	– हड़प्पा सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल।
दायमाबाद	महाराष्ट्र (औरंगाबाद जिला)	गोदावरी		– कांसे का रथ प्राप्त, जिसमें दो बैल व एक मानव आकृति। – हड़प्पा सभ्यता का सबसे दक्षिणी स्थल।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

वैदिक संस्कृति (1500 ई. पू. - 600 ई. पू.)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कुछ समय पश्चात् वैदिक संस्कृति का प्रारंभ हुआ। वैदिक संस्कृति के निर्माता आर्यों को माना जाता है। **आर्य** संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है - **श्रेष्ठ**। आर्य, **भाषा सूचक** शब्द है, प्रजाति सूचक नहीं। इस संस्कृति के बारे में संपूर्ण जानकारी वैदिक साहित्य से मिलती है। चूंकि आर्यों को **लिपि का ज्ञान नहीं** था, इसलिए वैदिक साहित्य वर्षों तक श्रुति के आधार पर संरक्षित रहे। यहीं कारण है कि वैदिक साहित्य को **श्रुति साहित्य** कहा जाता है। इसका एक नाम **संहिता** भी है।

आर्यों का मूल निवास स्थान :-

इस संदर्भ में विद्वानों में मतभेद रहा है। विद्वानों के अनुसार -

सप्त-सैन्धव प्रदेश - डॉ. अविनाश चन्द्र दास एवं डॉ. सम्पूर्णानन्द।

ब्रह्मर्षि देश (गंगा-यमुना दोआब) - पं. गंगानाथ झा।

तिब्बत - स्वामी दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश)।

उत्तरी ध्रुव - पं. बाल गंगाधर तिलक (दि आर्कटिक होम ऑफ दि आर्यन्स)।

हंगरी / डेन्यूब नदी घाटी - पी. गाइल्स।

यूक्रेन (दक्षिणी रूस) - गार्डन चाइल्ड।

मध्य एशिया में बैक्ट्रिया (अफगानिस्तान) - मैक्स मूलर।

- मैक्स मूलर के मत का आधार यह है कि ऋग्वेद तथा ईरानी ग्रंथ **जिंद अवेस्ता** में कई भाषायी समानताएं हैं। उदाहरणार्थ - वैदिक देवता इन्द्र, वायु, मित्र तथा असुर को ईरानी ग्रंथ जिंद अवेस्ता में क्रमशः इन्द्र, वयु, मिथ्र तथा अहुरमज्दा कहा गया है। अतः आर्य भारत ईरान तथा अफगानिस्तान की सीमा पर स्थित बैक्ट्रिया नामक स्थान से आए होंगे।

यूरेशिया (आल्प्स पर्वत का पूर्वी क्षेत्र) - ब्रैन्डेनेस्टिन **(सर्वाधिक मान्य)**।

आर्यों के आगमन की तिथि -

इस संदर्भ में भी विद्वानों में मतभेद रहा है। विद्वानों के अनुसार -

1200 ई. पू. - 1000 ई. पू. - मैक्स मूलर।

6000 ई. पू. - बाल गंगाधर तिलक।

1500 ई. पू. - सर्वाधिक मान्य मत।

- इस मत का आधार यह है कि सिन्धु घाटी सभ्यता का पूर्ण पतन 1500 ई. पू. तक हो चुका था तथा यह नगरीय सभ्यता ग्रामीण सभ्यता में तब्दिल हो चुकी थी। चूंकि वैदिक संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति थी। अतः आर्यों का आगमन 1500 ई. पू. माना जाना चाहिए।

अभिलेखों के आधार पर तिथि का निर्धारण -

कस्सी अभिलेख (1600 ई. पू.) - ईराक स्थित इस अभिलेख में उल्लेख है कि ईरानी आर्यों की एक शाखा भारत आई।

बोगाजकोई अभिलेख (1400 ई. पू.) - एशिया माइनर (आधुनिक तुर्की) इस अभिलेख में दो कबीलों खत्ती एवं मितन्नी के मध्य संधि का उल्लेख है। इसमें संधि की शर्तों की रक्षा के लिए कुछ देवताओं को साक्षी माना गया है, जिनमें वैदिक देवता **इन्द्र, मित्र, वरूण** तथा **नासत्य** (अश्विन) का उल्लेख है। इससे प्रमाणित होता है कि भारत में आर्यों का आगमन 1400 ई. पू. से पहले हो चुका था। इस प्रकार इन दोनों अभिलेखों के आधार पर भारत में आर्यों का आगमन 1500 ई. पू. माना जाता है।

पुरात्तात्विक साक्षों के आधार पर तिथि का निर्धारण -

वैदिक काल को अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से दो कालों में विभक्त किया जाता है -

1) ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. - 1000 ई. पू.)। **2)** उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. - 600 ई. पू.)

1) **ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. - 1000 ई. पू.)** - ऋग्वैदिक काल से मुख्यतः काले व लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जबकि अंशतः ताम्रनिधि मृदभांड व गेरूए मृदभांड भी प्राप्त हुए हैं। चूंकि काले व लाल मृदभांड का काल 1500 ई. पू. माना जा सकता है। अतः ऋग्वैदिक काल की उच्च सीमा 1500 ई. पू. मानी जानी चाहिए।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

ऋग्वेद में लोहे का उल्लेख नहीं है। लोहे का सर्वप्रथम साक्ष्य 1000 ई. पू. के आसपास एटा जिले के **अतरंजीखेड़ा** से प्राप्त होता है। अत: ऋग्वैदिक काल की निम्न सीमा 1000 ई. पू. मानी जानी चाहिए।

2) **उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. - 600 ई. पू.)** - उत्तर वैदिक काल में लोहे का ज्ञान था। इस काल में मूख्यत: चित्रित धूसर मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जो लोहे से संबंधित माने जाते हैं। अत: उत्तर वैदिक काल की उच्च सीमा 1000 ई. पू. मानी जानी चाहिए।

उत्तर वैदिक काल में महाजनपदों का उल्लेख नहीं है। चूंकि महाजनपदों का सर्वप्रथम साक्ष्य 600 ई. पू. से प्राप्त है। अत: अत: उत्तर वैदिक काल की निम्न सीमा 600 ई. पू. मानी जानी चाहिए।

ऋग्वैदिक आर्यों का भौगोलिक क्षेत्र -

ऋग्वेद में सप्त-सैन्धव प्रदेश का उल्लेख है, जिसकी सात नदियां सिन्धु, सरस्वती, वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चेनाब), परूष्णी (रावी), विपासा (व्यास) तथा शतुद्रि (सतलज) थीं। इससे स्पष्ट है कि आर्य **सर्वप्रथम पंजाब तथा अफगानिस्तान क्षेत्र में बसे**। साथ ही ऋग्वेद में चार नदियों कुंभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल) व सुवास्तु (स्वात) का उल्लेख है। इनमें से वर्तमान में **कुंभा व क्रुमु अफगानिस्तान में**, जबकि **गोमती व सुवास्तु पाकिस्तान** में बहती है। अत: ऋग्वैदिक आर्यों की **पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान** को माना जाता है।

इसके पश्चात् आर्यों ने आगे बढ़कर कुरूक्षेत्र के निकट के प्रदेश अर्थात ब्रह्मवर्त पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् आर्य गंगा नदी के क्षेत्र तक बढ़े तथा गंगा व यमुना दोआब, अर्थात् ब्रह्मर्षि पर अधिकार कर लिया। ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार, जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख है। अत: ऋग्वैदिक आर्यों की **पूर्वी सीमा गंगा नदी** को माना जाता है।

ऋग्वेद में हिमालय की एक चोटी मूंजवन्त (हिन्दूकुश) का उल्लेख है, जहां से आर्य सोम रस प्राप्त करते थे। अत: ऋग्वैदिक आर्यों की **उत्तरी सीमा हिमालय** को माना जाता है।

ऋग्वेद में राजस्थान स्थित अरावली पर्वत की कई चोटियों का उल्लेख है, जबकि नर्मदा नदी, सतपुड़ा पर्वत तथा विन्ध्य पर्वत का उल्लेख नहीं है। अत: ऋग्वैदिक आर्यों की **दक्षिणी सीमा अरावली पर्वत** को माना जाता है।

उत्तर वैदिक आर्यों का भौगोलिक क्षेत्र -

उत्तर वैदिककालीन ग्रंथ **शतपथ ब्राह्मण** में उल्लेखित **विदेध माधव की कथा** से ज्ञात होता है कि विदेध माधव, जो सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे, अपने पुरोहित **गौतम राहूगण** की सहायता से अग्नि से जंगल व नदियों को जलाते हुए पूर्व की ओर आगे बढ़े, परन्तु अग्नि ने **सदानीरा नदी** (वर्तमान बिहार की गण्डक नदी) से आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। इस आधार पर उत्तर वैदिक आर्यों की **पूर्वी सीमा सदानीरा नदी** को माना जाता है। जबकि उत्तर वैदिक आर्यों की **पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान** को ही माना जाता है।

उत्तर वैदिककालीन ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण में नर्मदा नदी (रेवा नदी) का उल्लेख है। साथ ही उत्तर वैदिककालीन ग्रंथों में सतपुड़ा व विन्ध्य पर्वत का उल्लेख भी है। हिमालय तथा विन्ध्य पर्वत के मध्य क्षेत्र को मध्य देश कहा जाता था। अत: उत्तर वैदिक आर्यों की **दक्षिणी सीमा नर्मदा नदी या सतपुड़ा व विन्ध्य पर्वत** को माना जाता है। जबकि उत्तर **वैदिक आर्यों की उत्तरी सीमा हिमालय** को ही माना जाता है।

कालान्तर में उत्तर वैदिक आर्यों ने सम्पूर्ण बिहार तथा दक्षिणी-पूर्व बंगाल पर भी अधिकार कर लिया। इस प्रकार सम्पूर्ण उत्तरी भारत उनके अधिकार में आ गया, जिसका नाम उन्होंने आर्यावर्त रखा। इस प्रकार आर्यावर्त = ब्रह्मवर्त + ब्रह्मर्षि + मध्य देश + बिहार + बंगाल।

वैदिककालीन -

नदियां :- वैदिक संहिता में कुल 31 नदियों का उल्लेख हैं, जिनमें से 25 का उल्लेख अकेले ऋग्वेद में है। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख हैं। इनमें से सिन्धु नदी का सबसे अधिक बार उल्लेख है। अत: **आर्यों की सबसे महत्वपूर्ण नदी सिन्धु नदी** थी, जिसके आर्थिक महत्व को देखते हुए इसे **हिरण्यनी** भी कहा जाता था। जबकि ऋग्वैदिक आर्यों की **सबसे पवित्र नदी सरस्वती नदी** थी, जिसे **नदीतमा, मातेतमा, देवीतमा** कहा गया है। वैदिक ऋचाओं की रचना सरस्वती नदी के किनारे ही हुई थी।

नदी सूक्त में विपासा (व्यास) नदी का उल्लेख नहीं है, बल्कि इसकी जगह की कश्मीर की मरुद्वृधा नदी का नाम मिलता है। ऋग्वैद में सरस्वती की सहायक दृष्द्वती नदी (चौतंग नदी) तथा सरस्वती व दृष्द्वती के मध्य बहने वाली अपाया नदी का भी उल्लेख है। ऋग्वेद में यमुना नदी का 3 बार, गंगा नदी का 1 बार तथा गंगा नदी की सहायक सरयू नदी का 3 बार उल्लेख है। नदी सूक्त में उल्लेखित **अंतिम नदी गोमती** (गोमल) है।

समुद्र :- ऋग्वेद में यद्यपि समुद्र का उल्लेख है, परन्तु यह विशाल जलराशि का घोतक था।

पर्वत :- ऋग्वेद में हिमालय का उल्लेख है, जिसे हिमवंत कहा गया है। इसकी चोटी मूजवंत का भी उल्लेख है। जहां से सोमरस प्राप्त किया जाता था। ऋग्वेद में सतपुड़ा एवं विध्य की चर्चा नहीं की गई है।

मरूस्थल :- ऋग्वेद में मरूस्थल के लिए **धन्व** शब्द का प्रयोग किया गया है। पार्जन्य (बादल) ने धन्व को पार करने योग्य बनाया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य से हमारा तात्पर्य चारों वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुवेद, अथर्ववेद) ब्राह्मण ग्रंथों, अरण्यक, उपनिषदों से हैं। उपवेद अत्यन्त परवर्ती होने के कारण वैदिक सहित्य के अंग नहीं माने जाते हैं। अत: इन्हें वैदिकोत्तर साहित्य के अंतर्गत रखा गया है।

वैदिक साहित्य **श्रुति** नाम से विख्यात है। श्रुति का अर्थ है - **सुनकर लिखा हुआ साहित्य**। यह वह साहित्य है, जो मनुष्यों द्वारा लिखा नहीं गया, अपितु जिन्हें ईश्वर ने ऋषियों को आत्मज्ञान देकर उनकी रचना की तथा ऋषियों द्वारा इनका ज्ञान कई पीढ़ियों तक अन्य ऋषियों को मिलता रहा। इसी कारण वैदिक साहित्य को **अपौरुषेय** व **नित्य** कहा जाता है।

वेदों का संकलन **महार्षि कृष्ण द्वैपायन** ने किया, इसलिए इनका एक नाम **वेदव्यास** भी है। प्रथम तीन वेदों को **वेदत्रयी** कहा जाता है। अथर्ववेद इसमें शामिल नहीं है, क्योंकि इसमें यज्ञ से भिन्न लौकिक विषयों का वर्णन है।

ऋग्वैदिक साहित्य :-

ऋग्वैदिक साहित्य के अन्तर्गत केवल ऋग्वेद शामिल है।

ऋग्वेद :-

यह आर्यों का सबसे प्राचीन ग्रंथ है, जिसकी रचना **संस्कृत भाषा** तथा **ब्राह्म लिपी** में की गई थी। ऋक् का अर्थ होता है **छंदबद्ध रचना** या **श्लोक**। **ऋग्वेद के सूक्त देवी-देवताओं की स्तुतियों से संबंधित है, अर्थात् ऋग्वेद में प्रार्थनाएं संकलित हैं**। इनका पाठ गीतों के रूप में किया जाता है, जिनमें भक्ति भाव की प्रधानता है। ऋग्वेद की रचना संभवत: सप्त-सैन्धव प्रदेश में हुई थी। ऋग्वेद एक संहिता है, जिसमें 3 पाठ, 10 मण्डल तथा 1028 सूक्त शामिल हैं। ऋग्वेद का पाठ **होता** अथवा **होत** नामक पुरोहित करता था।

3 पाठ
- साकल : 1017 सूक्त।
- बालखिल्य : 11 सूक्त (8वें मण्डल का परिशिष्ट)।
- वास्कल : 56 सूक्त (उपलब्ध नहीं)।

10 मण्डल
- गोत्र मण्डल : ऋग्वेद के **2 से 7 तक के मण्डल सबसे प्राचीन** माने जाते हैं। ऋग्वेद के 2 से 7वें मण्डल को गोत्र मण्डल भी कहा जाता है, क्योंकि इन मण्डलों की रचना किसी खास गोत्र से संबंधिक एक ही परिवार ने की थी। इस प्रकार गोत्र शब्द का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद से प्राप्त होता है, जबकि गोत्र की अवधारणा उत्तर वैदिक काल में विकसित हुई। 1, 8, 9 तथा 10वां मण्डल परवर्ती काल के हैं। प्रत्येक मण्डल तथा उससे संबंधित ऋषि निम्नलिखित हैं -

: 1 मण्डल	मधुच्छंदा, दीर्घतमा, अंगिरा।
: 2 मण्डल	गृत्समद भार्गव।
: 3 मण्डल	**विश्वामित्र (गायत्री मंत्र इसमें ही है)**।
: 4 मण्डल	वामदेव (कृषि संबंधी श्लोक)
: 5 मण्डल	अत्रि।
: 6 मण्डल	भारद्वाज।
: 7 मण्डल	वशिष्ठ।
: 8 मण्डल	कण्व ऋषि।
: 9 मण्डल	पवमान अंगिरा **(सोम को समर्पित है)**।
: 10 मण्डल	क्षुद्रसूक्तीय, महासूक्तीय।

ऋग्वेद के सभी मण्डलों में **10वां मण्डल परवर्ती** है। इसी के एक भाग **पुरूष सूक्त में सर्वप्रथम शूद्रों की चर्चा** की गई है। इस प्रकार चर्तुवर्ण व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में मिलता है। ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं की रचना **लोपामुद्रा**, घोषा, सच्ची, पौलेमी तथा कक्षावृत्ति नामक विदुषि स्त्रियों ने की थी।

ऋग्वेद के **नासदीय सूक्त** में निर्गुण ब्रह्म का वर्णन मिलता है। इसमें स्वर्ग की परिकल्पना भी की गई है। ऋग्वेद का नासदीय सूक्त सर्वेश्वरवाद तथा पुरूष सूक्त एकेश्वरवाद की ओर संकेत करते हैं। ऋग्वेद के **संवाद सुक्त** में भारतीय नाटक के आरंभिक सूक्त प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में ही सर्वप्रथम **अयोध्या** का उल्लेख है। ऋग्वेद में गांधारी प्रदेश (पाकिस्तान स्थित रावलपिंडी व पेशावर जिला) की भी चर्चा है, जो भेंड के ऊन के लिए प्रसिद्ध था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

उत्तर वैदिक साहित्य

उत्तर वैदिक साहित्य में सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, अरण्यक एवं उपनिषद को शामिल किया जाता है।

सामवेद :-

यह एक पद्य ग्रंथ है। इसमें कुल सूक्तों की संख्या 1549 है। इनमें से मात्र 75 सूक्त ही नवीन हैं, जबकि शेष सूक्त ऋग्वेद से लिए गए हैं। अत: इसे **ऋग्वेद से अभिन्न** माना जाता है। सामवेद के सूक्तों का गायन करने वाला पुरोहित **उद्गाता** कहलाता था।

साम का अर्थ है - गायन। सामवेद **भारतीय संगीत से संबंधित प्राचीनतम् ग्रंथ** है। सात स्वरों का सर्वप्रथम उल्लेख सामवेद में ही प्राप्त होता है। इसके महत्व को स्थापित करते हुए श्रीमद्भागवत गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि मैं ही वेदों में सामवेद हूं।

यजुर्वेद :-

यह गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है। इसमें कुल सूक्तों की संख्या 1990 है। यजुर्वेद में **यज्ञों से संबंधित अनुष्ठानिक तथा कर्मकाण्डीय विधियों का उल्लेख** है। यजुर्वेद में उल्लेखित कर्मकाण्डों को सम्पन्न करने वाला पुरोहित **अध्वर्यु** कहलाता था।

अथर्ववेद :-

यह गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है। इसमें 20 अध्याय, 731 सूक्त तथा 5987 मंत्र हैं। अथर्वा ऋषि के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। अंगिरस ऋषि के नाम पर इसका एक अन्य नाम **अथर्वांगिरस** भी पड़ गया। अथर्ववेद के सूक्तों का उच्चारण करने वाला पुरोहित **ब्रह्मा** कहलाता था, अर्थात् यज्ञों का निरीक्षण करने वाले पुरोहित को ब्रह्मा कहा जाता था। किसी यज्ञ में कोई बाधा आने पर उसका निराकरण अथर्ववेद करता था। अत: इसे **ब्रह्म वेद** या **श्रेष्ठ वेद** कहा गया है।

अथर्ववेद में **वशीकरण, जादू-टोना, भूत-प्रेत तथा औषोधियों का वर्णन** हैं। **शल्यक्रिया** का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में ही मिलता है। इसमें **मगध** तथा **अंग** का उल्लेख **सुदूरवर्ती प्रदेशों** के रूप में किया गया है। यहां मगध के लोगों को **ब्रात्य** तथा ब्राह्मणों को निचले दर्जे का कहा गया है। इसमें **परीक्षित** का भी उल्लेख है। **अथर्ववेद में सभा व समिति को प्रजापत्य की दो पुत्रियां कहा गया है।**

ब्राह्मण :-

ब्राह्मण वेदों के गद्य भाग है, जिनके द्वारा वेदों को समझने में सहायता मिलती है। वस्तुत: ये वेद संबंधी अनुष्ठानों पर पाठ है, अर्थात् इनमें **यज्ञों का अनुष्ठानिक तथा कर्मकाण्डीय महत्व** दर्शाया गया है। ब्राह्मणों का मूल प्रतिपाद्य कर्मयोग है।

अरण्यक :-

वस्तुत: ये ब्राह्मणों के परिशिष्ठ हैं। अरण्यक का अर्थ है वन में लिखा जाने वाला। अत: इन्हें वन पुस्तक भी कहा जाता है। अरण्यक में **दार्शनिक सिद्धांतों एवं रहस्यवाद का वर्णन** है। इनमें यज्ञ व कर्मकाण्डों का विरोध किया गया है।

उपनिषद :-

उपनिषद शब्द उप एवं निष धातु से बना है। उप का अर्थ है - समीप तथा निष का अर्थ है - बैठना, अर्थात् उपनिषद का अर्थ है - वह शास्त्र या विद्या, जो गुरू के निकट बैठकर एकान्त में सीखी जाती है। उपनिषद **वेदों के अंतिम भाग** है, अत: इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। इसमें पूर्णत: **दार्शनिक बातें** की गई हैं। उपनिषद **ज्ञान पर बल** देता है तथा **ब्रह्म व आत्मा के संबंधों को निरूपित** करता है। कुल उपनिषदों की संख्या 108 है, लेकिन 10 उपनिषद ही विशेष महत्व के हैं, जिन पर शंकराचार्य ने टीकाएं लिखी हैं। इनमें से **छांदोग्य उपनिषद सबसे प्राचीन** है।

वेद	संहिता / पाठ	ब्राह्मण	अरण्यक	उपनिषद	उपवेद
ऋग्वेद	साकल, बालखिल्य, वाष्कल	ऐतरेय, कौषीतकी	ऐतरेय, कौषीतकी	ऐतरेय, कौषीतकी	अर्थवेद
सामवेद	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय	ताण्ड्य / महाब्राह्मण / पंचविश / षड्विश / अद्भूत, जैमिनीय	जैमिनीय, छांदोग्य	जैमिनीय, छांदोग्य, केन	गंधर्ववेद
शुक्ल यजुर्वेद	वाजसनेही	शतपथ	वृहदारण्यक	वृहदारण्यक, इष	घनुर्वेद
कृष्ण यजुर्वेद	काठक, कपिष्ठल, मैत्रेयी तैत्तिरीय	तैत्तरीय	शतपथ, तैत्तरीय	मैत्रेयी, तैत्तरीय, कठ, श्वेताश्वर	घनुर्वेद
अथर्ववेद	शौनक, पिप्पलाद	गोपथ		मुण्डक, माण्डूक्य, प्रश्न	आयुर्वेद, शिल्पवेद

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

1) **शतपथ ब्राह्मण** – यह सबसे प्राचीन तथा सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ है। इसके लेखक याज्ञवलक्य थे। इसमें जल–प्लावन कथा, पुरूरवा – उर्वशी आख्यान, रामकथा, पुनर्जन्म सिद्धान्त, अश्विन कुमार द्वारा च्यवन ऋषि को यौवन दान का वर्णन है।

2) **एतरेय ब्राह्मण** – ब्राह्मण राजा पर आश्रित हैं, परन्तु राजा से श्रेष्ठ हैं।

3) **तैत्तरीय अरण्यक** – सर्वप्रथम नगर की चर्चा।

4) **छान्दोग्य उपनिषद** – यह सबसे प्राचीन उपनिषद है। इसमें देवकी पुत्र कृष्ण, तीन आश्रमों तथा ब्रह्म व आत्मा की अभिन्नता के विषय में उद्दालक आरूणि व उनके पुत्र श्वेतकेतु के मध्य संवाद का वर्णन है।

5) **वृहदारण्यक उपनिषद** – इसमें याज्ञवल्क्य–गार्गी का प्रसिद्ध संवाद मिलता है।

6) **तैत्तरीय उपनिषद** – इसमें अधिक अन्न उपजाओं का उल्लेख है।

7) **कठोपनिषद** – इसमें यम और नचिकेता के बीच प्रसिद्ध संवाद का वर्णन है।

8) **मुण्डकोपनिषद** – इसमें सत्यमेव जयते तथा यज्ञों को टूटी–फूटी नौकाओं के समान कहा गया है।

9) **माण्डूक्योपनिषद** – यह सबसे छोटा उपनिषद है।

वैदिकोत्तर साहित्य

वैदिकोत्तर साहित्य में मुख्यत: वेदांग एवं उपवेद रखे जा सकते हैं।

वेदांग –

वेदों को सही ढंग से समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई, जिनकी कुल संख्या 6 हैं – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष। ये सभी गद्य में लिखे गए हैं।

1) **शिक्षा** – इसकी रचना वैदिक स्वरों के शुद्ध उच्चारणों के लिए की गई है। शिक्षा शास्त्र के ग्रंथ का नाम गाएलम है, जिसके प्रवर्तक वामज्य हैं।

2) **कल्प** – इसका अर्थ है – कर्मकाण्ड, अर्थात् विधिनियम। ऐसे विधिनियम जो सूत्र में लिखे गए हैं, कल्प सूत्र कहलाते हैं। सबसे प्राचीन सूत्रकार गौतम माने जाते हैं। कल्प सूत्र के तीन भाग हैं –

   a) *श्रौत सुत्र (600 ई. पू. – 300 ई. पू.)* – इसमें यज्ञ से संबंधित जानकारी है। श्रौत सूत्र का एक भाग **शुल्व सूत्र** है, जिसमें **यज्ञ वेदियों के नापने का उल्लेख** है। इसी से **रेखा गणित का प्रारंभ** माना जाता है।

   b) *ग्रह सूत्र (600 ई. पू. – 300 ई. पू.)* – इसमें ग्रह कर्मकाण्डों एवं यज्ञों का विवरण है। इसके रचयिता अश्वलायन माने जाते हैं।

   c) *धर्म सूत्र (500 ई. पू. – 200 ई. पू.)* – इसमें राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों का उल्लेख हैं। धर्म सूत्र से सामाजिक व्यवस्था जैसे – वर्णाश्रम, पुरूषार्थ आदि की भी जानकारी मिलती है। इसके प्रणेता आपस्तम्ब माने जाते हैं।

3) **व्याकरण** – व्याकरण का प्राचीनतम् ग्रंथ **पाणिनि** द्वारा रचित **अष्टध्यायी** (चौथी सदी ई. पू.) है। **पतंजलि** ने **महाभाष्य** (दूसरी सदी ई. पू.) और **कात्यायन** ने **वार्तिक** की रचना की है। पाणिनि, पतंजलि एवं कात्यायन को **मुनित्रय** कहा जाता है।

4) **निरुक्त** – इसका अर्थ है – व्युत्पत्ति शास्त्र। इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति बताई गई है। निरुक्त के प्रथम आचार्य कश्यप ऋषि है, जिनकी रचना निघंटु है। निरुक्तों में सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ **यास्क** द्वारा रचित **निरुक्त** (पांचवीं सदी ई. पू.) है।

5) **छन्द** – इनकी रचना पद्यों को चरणों में सूत्र बद्ध करने के लिए की गई है। इसे चतुष्पदी वृत्त भी कहा जाता है। **पिंगल** द्वारा रचित **छन्द शास्त्र** इसका प्राचीनतम् ग्रंथ है।

6) **ज्योतिष** – इसका प्रथम ग्रंथ लगधमुनि द्वारा रचित वेदांग ज्योतिष है। ज्योतिष के अन्य ग्रंथ है – गार्गी संहिता, वृहद् संहिता एवं नारद संहिता।

पाणिनि के अनुसार वेदरूपी शरीर के –

मुख	– व्याकरण।	श्रौत (कान)	– निरुक्त।	नेत्र	– ज्योतिष।
नासिका	– शिक्षा।	हाथ	– कल्प।	पैर	– छंद।

उपवेद –

ऋग्वेद	– अर्थवेद।	सामवेद	– गंधर्ववेद।
यजुर्वेद	– धनुर्वेद।	अथर्ववेद	– आयुर्वेद / शिल्पवेद / ब्रह्मवेद।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

ऋग्वैदिककाल (1500 ई. पू. - 1000 ई. पू)

❒ आर्यों का संघर्ष

भारत में आर्य कबीलों के रूप में आए थे। ऋग्वेद में कई कबीलों की चर्चा है, जैसे - भरत (त्रित्सु) तथा पुरू, यदु, तुर्वस, अनु, द्रुहु **(पंचजन)**। आर्यों का परस्पर तथा अनार्यों के साथ उपजाऊ क्षेत्रों में अधिकार को लेकर युद्ध होते रहते थे।

◆ दशराज्ञ युद्ध

आर्यों के संघर्ष में सबसे महत्वपूर्ण **दशराज्ञ युद्ध** था, जिसका उल्लेख **ऋग्वेद के 7वें मण्डल** में मिलता है। इस युद्ध का प्रमुख कारण भरत कबीले द्वारा विश्वामित्र की जगह वशिष्ठ को अपना गुरू बना लेना था। अत: विश्वामित्र ने भरत कबीले के विरोधी 5 आर्य (पुरू, यदु, तुर्वस, अनु व द्रुहु) व 5 अनार्य (अलिन, पक्थ, भलानस, विषाणी व शिवि) कबीलों को सहयोग किया। **दशराज्ञ युद्ध परूष्णी (रावी) नदी के किनारे हुआ था**। इस युद्ध में भरत कबीले के राजा सुदास की विजय हुई तथा पुरू कबीले का राजा पुरूत्सा मारा गया।

आर्यों का संघर्ष दास (यदु + तुर्वस), दस्यु (पुरू) के साथ भी होता रहता था। ऋग्वेद में अनार्यों को अनेक नामों से संबोधित किया गया है, जैसे - अनसा (चपटी नाक वाला), अकर्मण (वैदिक कार्मों में विश्वास न करने वाला), अयज्जवन (यज्ञ न करने वाला), अदेवयु (वैदिक देवता में विश्वास न करने वाला), शिश्नदेवा (लिंग पूजक) आदि।

❒ राजनीतिक जीवन

आर्यों की राजनीतिक व्यवस्था का लोकप्रिय स्वरूप **राजतंत्रात्मक** था। राजा का राज्याभिषेक होता था। इस प्रकार **राज्याभिषेक का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद** में मिलता है। राजा का पद **वंशानुगत** होता था। राजा को कोई **नियमित कर प्राप्त नहीं** होता था, किन्तु उसे **बलि** नामक **स्वेच्छिक कर** प्राप्त होता था। इस काल में राजा निरंकुश नहीं था, क्योंकि राजा की शक्तियों पर अंकुश रखने के लिए कुछ कबिलाई संस्थाएं थीं -

1) **सभा** - इसमें श्रेष्ठ एवं कुलीन जन भाग लेते थे। इसके अध्यक्ष को **सभापति** तथा सदस्यों को **सभेय** कहा जाता था। सभा **न्याय** का भी कार्य करती थी। इसकी तुलना आधुनिक **मंत्रीपरिषद / राज्यसभा** से की जा सकती है।
2) **समिति** - इसके सदस्य आमजन होते थे। इसके अध्यक्ष को **ईशान** या **पति** कहा जाता था। यद्यपि राजा का पद वंशानुगत था, परन्तु समिति के सदस्यों द्वारा राजा का निर्वाचन होता था। इसकी तुलना आधुनिक **लोकसभा** से की जा सकती है।
3) **विदथ** - यह सबसे **प्राचीन संस्था** थी, जो सैनिक, असैनिक तथा धार्मिक कार्यों से संबंधित थी।
4) **परिषद** - यह एक जनजातीय सैन्य सभा जैसी थी।

राजतंत्र के अतिरिक्त ऋग्वेद में गैर-राजतंत्रात्मक राज्य का भी उल्लेख है, जिसे **गण** कहा गया है। गण का प्रमुख **गणपति** या **ज्येष्ठक** होता था। इस प्रकार **गणतंत्र का प्रारंभिक उल्लेख ऋग्वेद में** प्राप्त होता है। ऋग्वेद में विदथ, गण, समिति व सभा की चर्चा क्रमश: 122, 46, 9 व 8 बार की गई है।

❒ प्रशासन

प्रशासन की **सबसे बड़ी इकाई जन** होती थी, जिसके प्रधान को **जनस्यगोपा (राजा)** कहा जाता था। जन का विभाजन **विश** में होता था, जिसका प्रमुख **विशपति** कहलाता था। विश का विभाजन **ग्राम** में होता था, जिसका का प्रमुख **ग्रामीणी** कहलाता था। ग्राम का विभाजन **कुल / कुटम्ब / गृह / परिवार** में होता था, जिसका प्रमुख **कुलप** या **गृहपति** कहलाता था। ऋग्वेद में **नगर शब्द का उल्लेख नहीं** है। नगर शब्द का **सर्वप्रथम उल्लेख** उत्तरवैदिककालीन ग्रंथ **तैत्तरीय अरण्यक में** मिलता है। ऋग्वेद में जन, विश व ग्राम शब्द का उल्लेख क्रमश: 275, 170 व 13 बार मिलता है। ऋग्वेद में कुल शब्द का प्रयोग विरल ही मिलता है, ज्यादातर गृह शब्द ही मिलता है।

ऋग्वैदिक काल में प्रशासन का प्रमुख राजा होता था। राजा की सहायता के लिए अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी होते थे, जैसे - पुरोहित (राजा का मुख्य परामर्शदाता), सेनापति (सेना प्रमुख), विशपति (विश प्रमुख), ग्रामीणी (ग्राम प्रमुख), कुलपति (कुल प्रमुख), ब्राजपति (चारागाह प्रमुख), **स्पर्श** (गुप्तचर), दूत (संदेश वाहक), **पुरप** (दुर्ग का अधिकारी), **सूत** (रथकार) आदि। इनमें सर्वाधिक महत्व पुरोहित का था।

ऋग्वेद में **विधि / न्याय व्यवस्था के संबंध में सबसे कम जानकारी** मिलती है। संभवत: न्याय का कार्य पुरोहित करता था। इस काल में **सबसे बड़ा अपराध पशु चोरी** था, जबकि अन्य चोरी, सेंधमारी, हत्या आदि थे। हत्या का दण्ड द्रव्य (जुर्माना) के रूप में दिया जाता था। उच्च श्रेणी के व्यक्ति की हत्या का दण्ड 100 गायों के रूप लिया जाता था। इन गायों को मृतक के संबंधियों को दिया जाता था। इसके लिए **शतदाय** (100 गायों का दान) जैसे शब्दों का प्रयोग होता था। इसके अतिरिक्त **वरदेय** (बदला लेने की प्रथा) भी प्रचलित थी। जो व्यक्ति दिवालिया हो जाता था, उसे ऋणदाता का दास बना दिया जाता था। ऋग्वैदिक काल में **स्थायी सेना का अभाव** था। युद्ध के समय नागरिक सेना की व्यवस्था की जाती थी, जिसे **मिलिशिया** कहा जाता था। ऋग्वेद में अपराधियों के लिए **जीवगृभ** तथा पुलिस के लिए **उग्र** शब्द का प्रयोग किया गया है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ आर्थिक जीवन

ऋग्वैदिक आर्यों का प्रारम्भिक जीवन अस्थायी था, अत: उनके जीवन में **कृषि की अपेक्षा पशुपालन का अधिक महत्व** था।

- **पशुपालन**

पशुपालन में **गाय का सर्वाधिक महत्व** था। जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों की अभिव्यक्ति गाय के माध्यम से की जाती थी, जैसे - राजा को गोपति / गोपता, युद्ध को **गविष्ठी** / गेसू / गव्य / गम्य, समय को **गोधुलि**, दूरी को **गवयतु**, पुत्री को दुहिता, धनी व्यक्ति को गोमत तथा अतिथि को गोहन कहा जाता था। ऋग्वेद में गाय का उल्लेख 176 बार मिलता है। आर्यों की अधिकांश लड़ाइयां गायों को लेकर होती थीं। गाय को पवित्र माना जाता था, उसे **अघन्या** / अदन्या / वदन्या / अष्टकर्णी कहा गया है। ऋग्वेद में एक जगह देवता को भी गाय से उत्पन्न माना गया है।

गाय के अतिरिक्त आर्य भेड़, बकरी, घोड़ा, ऊँट, कुत्ता, सरामा (पवित्र कुतिया) का भी पालन करते थे। सिन्धु घाटी सभ्यता के विपरीत ऋग्वेद में **हाथी व बाघ का उल्लेख नहीं** है।

- **कृषि**

इस काल में पशुपालन की तुलना में **कृषि का स्थान गौण** था। ऋग्वेद में कुल 24 बार कृषि का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में एक ही अनाज **यव (जौ)** का उल्लेख है। ऋग्वेद में कृषि हेतु **चर्षिणी**, जुते हुए खेत हेतु **क्षेत्र**, हल रेखा हेतु **सीता**, हल हेतु **लांगल**, हलवाहे **कीवाश**, उपजाऊ भूमि हेतु **उर्वरा**, अनाज नापने के बर्तन हेतु **उर्दर** तथा खाद हेतु **करीषु** शब्द का मिलता है। इस काल में सिंचाई हेतु दो प्रकार के जलों का उपयोग किया जाता था - स्वयंजा (वर्षा, तालाब, ह्रद आदि) और खनित्रमा (खोद कर निकाला गया पानी जैसे - कुआं या अवट से)।

- **उद्योग-धंधे**

इस काल में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार, कुम्हार आदि शिल्पियों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में धातुओं में ताँबा या काँसे हेतु **अयस**, सोना हेतु **हिरण्य** शब्द का प्रयोग किया गया है, जबकि **लोहा व चांदी का उल्लेख नहीं** मिलता है। ऋग्वेद में बढ़ई हेतु तक्षण, धातुकर्मी हेतु कर्मार, कढ़ाई-बुनाई हेतु सिरी / पेशस्कारी शब्द का प्रयोग मिलता है।

- **व्यापार**

ऋग्वेद में समुद्र का स्पष्ट उल्लेख न होने से इस काल में विदेशी व्यापार का पता नहीं चल पाता है। व्यापार वस्तुत: **वस्तु विनिमय** पर आधारित था। लेन-देन में गाय प्रमुख माध्यम थी। **पणि** नामक अनार्यों का उल्लेख व्यापारियों के रूप में मिलता है, जो **आर्यों की गायों को चुरा लेते थे**। **नियमित सिक्कों का प्रचलन प्रारंभ नहीं** हुआ था। ऋग्वेद में उल्लेखित **निष्क** एक प्रकार का स्वर्ण ढेर था, जिसका प्रयोग तौल के रूप में होता था। **निष्क गले में पहने जाने वाला सोने का आभूषण** भी कहलाता था। इसी प्रकार **मन** भी स्वर्ण का ढेर एवं तौल की इकाई थी।

❐ सामाजिक जीवन

ऋग्वैदिक समाज पितृ सत्तात्मक था। परिवार में पुरूष मुखिया का पूर्ण नियंत्रण था। ऋग्वैदिककालीन परिवार संयुक्त परिवार था। नाना, दादा, नाती, पोते आदि सभी के लिए एक ही शब्द **नप्तृ** का प्रयोग होता था।

- **वर्ण व्यवस्था**

इस काल में **वर्ण व्यवस्था** प्रचलित थी, जिसका सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरूषसूक्त में** मिलता है। इसमें एक विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, भुजा से राजन्य, जंघा से वैश्य और पैर से शूद्र की उत्पत्ति दिखाई गई है। इस प्रकार **शूद्र शब्द पहली बार उल्लेख पुरूषसूक्त में** ही प्राप्त होता है। इस काल में **वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं, बल्कि कर्म पर आधारित** थी।

- **स्त्रियों की दशा**

ऋग्वैदिक समाज यद्यपि पुरूष प्रधान था, लेकिन **स्त्रियों की दशा काफी अच्छी** थी। ऋग्वैदिक काल में **स्त्रियां सभा और विदथ में भाग लेती थीं**। स्त्रियों में **पुनर्विवाह, नियोग प्रथा** एवं **बहुपति विवाह** का प्रचलन था। नियोग प्रथा से उत्पन्न संतान **क्षेत्रज** कहलाती थी। जो कन्याएं जीवनभर कुंआरी रहती थी, उन्हें **अमाजू** कहा जाता था। कन्याओं का **उपनयन संस्कार** होता था, जिसके कारण वे भी पुरूषों की तरह शिक्षा प्राप्त करती थी। **लोपामुद्रा**, घोषा, सिक्ता, विश्ववारा, उपाला, निवावरी आदि विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद की बहुत-सी ऋचाओं की रचना की।

आधुनिक काल की अनेक कुरीतियों जैसे - **बाल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि का उल्लेख नहीं** मिलता हे। इस समय उन्हें केवल **सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त नहीं** था। ऋग्वेद काल में विवाह पवित्र संस्कार माना जाता था। कन्या की विदाई के समय जो उपहार एवं द्रव्य दिए जाते थे, उसे **वहतु** कहा जाता था। ऋग्वैदिक काल में 2 प्रकार के विवाह होते थे -

1) **अनुलोम विवाह** - इसमें पुरूष उच्च वर्ण का तथा कन्या निम्न वर्ण की होती थी।

2) **प्रतिलोम विवाह** - इसमें पुरूष निम्न वर्ण का तथा कन्या उच्च वर्ण की होती थी।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **खान-पान**

आर्य मांसाहारी व शाकाहारी होते थे। भोजन में दूध, दही, घी आदि का विशेष महत्व था। यव (जौ) के सत्तू को क्रमशः दूध तथा दही में डालकर **क्षीरपकौदन** तथा **करंभ** तैयार किया जाता था। मांसाहारी भोजन में मुख्यतः भेड़-बकरी के मांस का प्रयोग होता था। गाय (अघन्या) का मांस निषिद्ध था। ऋग्वेद में **चावल, नमक व मछली का उल्लेख नहीं** है। ऋग्वेद में सुरापान की निन्दा, जबकि सोमपान की प्रशंसा की गई है।

- **वस्त्र**

ऋग्वैदिक काल में 3 प्रकार के वस्त्र प्रचलित थे -

1) **नीवी** - शरीर के निचले हिस्से में पहना जाने वाला वस्त्र।

2) **वास** - शरीर के मध्य भाग में पहना जाने वाला वस्त्र।

3) **आधिवास** - शरीर को ऊपर से ढकने वाला वस्त्र जैसे - शाल, चादर आदि।

- **दास-प्रथा**

इस काल में **दास प्रथा विद्यमान** थी। ऋग्वेद में पुरूष और स्त्री दासों का उल्लेख मिलता है, किन्तु दासों को केवल घरेलू कार्यों में लगाया जाता था, कृषि कार्यों में नहीं।

❒ धार्मिक जीवन

ऋग्वैदिक आर्यों का प्रारम्भिक जीवन कबायली था, अतः उनके देवी-देवता भी **प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक** थे। ऋग्वैदिक काल में देवताओं की तुलना में **देवियों का महत्व कम** था। यास्क ने अपने ग्रंथ निरुक्त में ऋग्वैदिक देवताओं की संख्या 33 बताई है तथा उन्हें आकाश, अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी के देवता के रूप में विभाजित किया है -

1) **आकाश के देवता** - द्यौ, सूर्य, वरुण, मित्र, पूषन, विष्णु, उषा, अश्विन, सविता, अदिति आदि।

2) **अन्तरिक्ष के देवता** - इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु, पार्जन्य, आप आदि।

3) **पृथ्वी के देवता** - अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वति, अरण्यनी आदि।

इन्द्र - यह ऋग्वैदिक आर्यों का **सबसे महत्वपूर्ण देवता** था। ऋग्वेद में इन्द्र पर **सर्वाधिक 250 सूक्त** मिलते हैं। इन्द्र **युद्ध तथा वर्षा का देवता** कहलाता था। इन्द्र की कुछ उपाधियां **पुरन्दर** (किलो को तोड़ने वाला), पुरभिद् (बादलों को भेदने वाला), सोमापा (सोम का पान करने वाला), वृत्तासुर हन्ता (वृत्तासुर राक्षस का वध करने वाला) आदि थीं।

अग्नि - अग्नि **दूसरा महत्वपूर्ण देवता** था, जिस पर **200 सूक्त** हैं। ऋग्वेद का पहला मंत्र ही अग्नि की स्तुति से आरंभ होता है। अग्नि देवता मानवों व देवताओं के बीच मध्यस्थ का कार्य करते थे। यह एकमात्र ऐसे देवता थे, जिसे आकाश, अंतरिक्ष तथा पृथ्वी तीनों देवताओं में शामिल किया जा सकता है।

वरुण - वरुण जल या समुद्र का देवता कहलाता था। इसे ऋत् (प्राकृतिक संतुलन का रक्षक) कहा गया है। वरुण का एक नाम **ऋतस्य गोपा** (नैतिक नियमों का संरक्षक) था। वरुण को इरानी ग्रंथ जिंद अवेस्ता में **अहुरमज्दा** कहा गया है।

सोम - ऋग्वेद का **9वां मण्डल पूर्णतः सोम देवता को समर्पित** है। सोम को वनस्पति का अधिपति माना गया है।

हिरण्य गर्भ - इसकी उत्पत्ति समुद्र मंथन से हुई थी। समुद्र मंथन **वासुकी** नामक सर्प का प्रयोग किया गया था। हिरण्य गर्भ से विश्वकर्मा का उद्भव हुआ, जो ब्रह्मा की प्रथम कृति है।

इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण देवी-देवता इस प्रकार थे -

पुषन्	पशुओं का देवता।	**पार्जन्य**	बादलों का देवता।	**मरुत**	आँधी का देवता।
द्यौ	आर्यों का सबसे प्राचीन देवता।	**अश्विन**	चिकित्सक देवता।	**ब्रहस्पति**	यज्ञ का देवता।
विष्णु	तीन पाँवों का देवता।	**रुद्र**	क्रोधी स्वभाव का देवता।	**सूर्य**	तेजमान घोड़े का प्रतीक।
मित्र	उदित होता हुआ सूर्य।	**उषा**	प्रातःकाल की देवी।	**निशा**	रात्रि की देवी।
सविता	प्रखर सूर्य (गायत्री को समर्पित)।	**सरस्वति**	ज्ञान की देवी।	**अरण्यनी**	जंगल की देवी।
अदिति	सार्वभौम प्रकृति की देवी।	**इला**	आहुति की देवी।	**उर्वशी**	अप्सरा।

ऋग्वैदिक काल में **प्रारंभ** में **बहुदेववाद** का प्रचलन था, **फिर एकेश्वरवाद** की प्रमुखता स्थापित हो गई। इसे मैक्समूलर ने **हीनोथिज्म** कहा है। **उपासना की मुख्य रीति** - स्तुति पाठ करना, प्रार्थनाएं करना, यज्ञ बलि अर्पित करना आदि थीं। यज्ञों की तुलना में **स्तुति व प्रार्थना** का ही विशेष महत्व था। इस काल में उपासना का प्रमुख **उद्देश्य लौकिक** था, न कि पारलौकिक।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

उत्तरवैदिक काल (1000 ई. पू. - 600 ई. पू.)

❐ राजनीतिक जीवन

उत्तरवैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की सबसे प्राचीन संस्था विदथ समाप्त हो गई। इस काल में छोटे-छोटे जन मिलकर **जनपद** में परिवर्तित हो गए। जैसे - पुरू व भरत मिलकर **कुरू** और तुर्वश व क्रिवि मिलकर **पांचाल** बन गए। इससे राजा के अधिकारों में भी वृद्धि हुई, उस पर अब सभा और समिति का नियंत्रण समाप्त हो गया। हालांकि **अथर्ववेद** में **सभा** और **समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां** कहा गया है।

राजा की उत्पत्ति का सिद्धांत सर्वप्रथम **ऐतरेय ब्राह्मण** में मिलता है। राजा के अधिकारों में वृद्धि के परिणामस्वरूप अलग-अलग दिशाओं के राजा के नाम अलग-अलग होने लगे। मध्य में **राजा**, पूर्व में **सम्राट**, पश्चिम में **स्वराट्**, उत्तर में **विराट्** तथा दक्षिण में **भोज** कहा जाने लगा, जो राजा चारों दिशाओं को विजित कर लेता था, उसे **एकराट्** कहा जाता था। भारत का प्रथम एकराट् राजा **महापदमनन्द** को कहा गया है।

अथर्ववेद में राजा **परीक्षित** का उल्लेख है, जो मृत्युलोक का देवता था। उसी प्रकार उपनिषदों में भी कई राजाओं के नामों का उल्लेख है। जैसे - कैकेय के अश्वपति, **काशी के अजातशत्रु**, विदेह के जनक, कुरू के उद्दालक आरूणि तथा पांचाल के प्रवाहण जैवलि आदि। इनमें से कैकेय जनपद का राजा **अश्वपति दार्शनिक** था।

उत्तरवैदिक काल में राजा का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार राज्याभिषेक होता था, जो राजसूय यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता था। **राजसूय यज्ञ** का विस्तृत वर्णन **शतपथ ब्राह्मण** में मिलता है। राजसूय यज्ञ के समय राजा **रत्नियों को हवि** प्रदान करता था, उसके प्रति सम्मान प्रकट करता था तथा समर्थन की आशा करता था। राजसूय यज्ञ में 17 प्रकार के जलों से राजा का अभिषेक किया जाता था।

रत्निन् राज्य के **उच्च पदाधिकारी** होते थे। इन्हें रत्निन् इसलिए भी कहा जाता था, क्योंकि ये कान में रत्न धारण करते थे। **शतपथ ब्राह्मण** में सर्वाधिक **12 रत्नियों का उल्लेख** है -

1) **सेनानी** - यह सबसे प्रमुख रत्निन् था।
2) **पुरोहित** - इसका स्थान दूसरा था।
3) **युवराज** - राजा का पुत्र।
4) **महिषी** - यह पटरानी थी।
5) **सूत** - राजा का सारथी।
6) **ग्रामणी** - ग्राम का मुखिया।
7) **क्षत्ता**- प्रतिहारी या द्वारपाल।
8) **संग्रहीता** - कोषाध्यक्ष।
9) **भागदुध** - कर एकत्र करने वाला अधिकारी।
10) **स्थपति** - मुख्य न्यायाधीश।
11) **अक्षवाप**- द्यूत-क्रीड़ा में राजा का मित्र।
12) **पालागल** - विदूषक का पूर्वज, राजा का साथी एवं वन का अधिकारी।

इसके अतिरिक्त **तक्षण,** अर्थात् **बढ़ई** का भी उल्लेख मिलता है। सूत एवं ग्रामीण को **राजनोराजकर्तृ** (राजा बनाने वाला) कहा गया है।

जहां **ऋग्वैदिक काल** में राजा **बलि** नामक **स्वैच्छिक उपहार** प्राप्त करता था, वहीं **उत्तरवैदिक** काल में राजा अपनी प्रजा से **नियमित कर** वसूलने लगा था। इसे **बलि / शुल्क / भाग** कहा जाता था। कर केवल वैश्य वर्ग ही देता था, जिसकी मात्रा **1/16** भाग थी। शतपथ ब्राह्मण में वैश्य को **अन्यस्यबलिकृत** (दूसरों को बलि कर देने वाला) तथा **अन्यस्याद्य** (दूसरे के द्वारा उपभोग में आने वाला) कहा गया है। इस काल में राजा का एक नाम **विशमत्ता** (विश को खाने वाला) पड़ गया, क्योंकि वह विश (वैश्य) से कर वसूलता था।

उत्तरवैदिक काल में **न्याय प्रशासन** के विषय में **सबसे कम जानकारी** मिलती है। इस काल में राजा ही न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था। सभा के द्वारा भी न्यायिक कार्य किया जाता था। ब्राह्मण को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था। अपराध सिद्धि के लिए जल परीक्षा एवं अग्नि परीक्षा प्रचलित थी। इस काल में राजा **स्थायी सेना नहीं** रखता था। युद्ध के समय कबीले के जवानों को सेना में भर्ती कर लिया जाता था, इस प्रकार निर्मित सेना को **मिलीसिया** कहा जाता था।

❐ सामाजिक जीवन

◆ वर्णाश्रम व्यवस्था

उत्तरवैदिक काल में **जाति व्यवस्था स्थापित नहीं** हुई थी। इस काल में सामाजिक व्यवस्था का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था थी। यद्यपि वर्ण व्यवस्था की नींव ऋग्वैदिक काल में पड़ चकी थी परन्तु, यह स्थापित उत्तरवैदिक काल में ही हुई। समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य और शूद्र थे। यज्ञ का अनुष्ठान बढ़ जाने के कारण ब्राह्मणों की शक्ति में वृद्धि हुई। दूसरा स्थान क्षत्रीय वर्ण का था, किन्तु **ऐतरेय ब्राह्मण** में **क्षत्रीयों को ब्राह्मणों से श्रेष्ठ** कहा गया है। तीसरा स्थान वैश्यों का था, जिनकी सबसे बड़ी आकांक्षा ग्रामणी बनना था। शूद्रों की दशा समाज में सबसे निम्न थी, उन्हें उपनयन संस्कार व शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। वैदिक ग्रंथों में शूद्रों को अन्यस्यप्रेष्यः (तीनों वर्णों का सेवक) कहा गया था। शूद्रों में रथकार का स्थान ऊँचा था, जिसे उपनयन संस्कार का अधिकार था। उत्तरवैदिक काल में परिवार में पिता का अधिकार बढ़ता गया, वह पुत्र को उत्तराधिकार से वंचित कर सकता था। राजपरिवार में ज्येष्ठाधिकार का प्रचलन प्रबल होता गया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **स्त्रियों की दशा**

ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा इस काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को ही समस्त दु:खों का कारण माना गया है। **मैत्रायणी संहिता** में स्त्रियों को **पांसा** और **सुरा** के साथ तीन प्रमुख बुराइयों में गिनाया गया है।

वृहदारण्यक उपनिषद् में उल्लेखित **याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद** जहां एक ओर यह दर्शाता है कि समाज में कुछ स्त्रियां उच्चतम् शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं, वहीं इस बात के भी संकेत मिलते हैं कि शायद उसकी भी सीमा थी। एक वाद-विवाद के दौरान याज्ञवल्क्य ने गार्गी से कहा कि अधिक बहस न करो, अन्यथा तुम्हारा सिर तोड़ दिया जाएगा। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की दशा बहुत खराब हो चुकी थी, क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में स्त्री को अर्द्धांगिनी कहा गया है।

उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों का **उपनयन संस्कार बंद** हो गया, उन्हें **सभा** और **विदथ में भाग लेने से रोक** दिया गया। स्त्रियों का **बाल विवाह होने लगा**। उन्हें सम्पत्ति का अधिकार पहले से ही प्राप्त नहीं था। **नियोग प्रथा** थी, जबकि सती प्रथा एवं पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। इस काल में बहुत सी विदुषी स्त्रियों का भी उल्लेख है। याज्ञवल्क्य की दो पत्नियां मैत्रेयी और कात्यायनी थी।

- **गोत्र प्रथा**

गोत्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में हुआ है, किन्तु व्यवस्थित रूप से गोत्र प्रथा उत्तरवैदिक काल में ही स्थापित हुई। गोत्र शब्द का अर्थ है - गोष्ठ, अर्थात् वह स्थान जहां समूचे कुल का गोधन पाला जाता था, परन्तु बाद में इसका अर्थ एक ही मूल पुरूष से उत्पन्न लोगों का समुदाय हो गया। आगे गोत्र से बाहर विवाह करने की प्रथा चल पड़ी तथा एक ही गोत्र वाले लोगों के बीच आपस में विवाह निषिद्ध हो गया।

- **आश्रम व्यवस्था**

उत्तरवैदिक ग्रंथों में **केवल तीन आश्रमों का उल्लेख** है। चतुर्थ आश्रम (सन्यास) उत्तरवैदिक काल में सुप्रतिष्ठित नहीं हुआ था। **जाबालोपनिषद्** में सर्वप्रथम **चारों आश्रमों का उल्लेख** मिलता है, जबकि छांदोग्य उपनिषद् में केवल तीन आश्रमों का। सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सर्वोच्च था। जीविकोपार्जन हेतु वेद-वेदांत पढ़ाने वाला अध्यापक **उपाध्याय** कहलाता था।

1) **ब्रह्मचर्य आश्रम (25 वर्ष तक)** - ब्रह्मचर्य आश्रम विद्याध्ययन का काल था, जिसका प्रारम्भ उपनयन संस्कार से होता था। बौधायन धर्मसूत्र के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रीय व वैश्य वर्ण के बालक का उपनयन संस्कार क्रमश: वसंत ऋतु में 8 वर्ष, ग्रीष्म ऋतु में 11 वर्ष व शरद ऋतु में 12 वर्ष की अवस्था में होता था। आश्रम में जीवन पर्यन्त रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक एवं बालिकाओं को क्रमश: नैष्ठिक एवं ब्रह्मवादिनी कहा जाता था।
2) **गृहस्थ आश्रम (25 से 50 वर्ष तक)** - शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् समावर्तन संस्कार के पश्चात् ही ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ माना गया है। यह समाज के सभी वर्णों में मान्य था। गृहस्थ आश्रम में ही मनुष्य तीन ऋणों (ऋषि, पितृ एवं देव ऋण) से मुक्ति पाता था। इसी आश्रम में ही पंचमहायज्ञ (ब्रह्म / ऋषि, देव, पितृ, भूत एवं मनुष्य यज्ञ) तथा **त्रि-वर्ग** (धर्म, अर्थ एवं काम) का विधान था।
3) **वानप्रस्थ आश्रम (50 से 75 वर्ष तक)** - जब मनुष्य लौकिक जीवन के कार्यों से मुक्ति पा लेता था, तब वह पारलौकिक जीवन की ओर उन्मुख होता था। अत: वानप्रस्थ भौतिक जीवन से मुक्ति का साधन था, परन्तु अब भी व्यक्ति का समाज से सम्बन्ध बना रहता था।

- **खान-पान, रहन-सहन, मनोरंजन**

ऋग्वेद काल की अपेक्षा आर्यों के खान-पान, रहन-सहन ओर मनोरंजन में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। **आर्यों को अब चावल, गेहूं, नमक, मछली, हाथी, बाघ आदि का ज्ञान** हो गया।

❐ आर्थिक जीवन

उत्तरवैदिक काल में आर्यों के जीवन में ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा अधिक स्थायित्व आया। इस काल में कृषि का महत्व बढ़ा, जबकि पशुपालन का महत्व कम हो गया। इसका प्रमुख कारण लोहे का प्रयोग था। उत्तरवैदिक ग्रंथों में लोहे को **श्याम अयस्** अथवा **कृष्ण अयस्** कहा गया है। **लोहे के प्राचीनतम् साक्ष्य 1000 ई. पू. के आसपास अतरंजीखेड़ा (एटा जिला) से प्राप्त होता है।**

- **पशुपालन**

उत्तरवैदिक काल में गाय, बैल, भेंड़, बकरी, गधे, सुअर आदि पशु प्रमुख रूप से पाले जाते थे। **हाथी का पालना भी शुरू** हो गया था। हाथी पर अंकुश रखने वाले को **हस्तिप** कहा जाता था। यज्ञों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर **गोवध करने वाले को मृत्युदण्ड** दिया जाता था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **कृषि**

उत्तरवैदिक काल में आर्य स्थायी रूप से बस गए थे। अत: इस काल में आर्यों का प्रमुख व्यवसाय कृषि हो गया था। अतरंजीखेड़ा से जौ, चावल व गेहूं और हस्तिनापुर से चावल व गन्ने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। हल के लिए **सीर** तथा गोबर की खाद के लिए **करीश** शब्द का प्रयोग हुआ है। इस काल में चावल के लिए **ब्रीहि** व **तंदुल**, गेहूं के लिए **गोधूम** तथा उड़द के लिए **माष** शब्द का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त सरसों, अलसी, गन्ना (इच्छु), सन आदि का भी उत्पादन होता था।

इस काल में सिंचाई के साधनों के रूप में तालाबों व कुओं के अतिरिक्त **अथर्ववेद में नहरों का भी उल्लेख** हुआ है। अथर्ववेद में अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि से फसलों की रक्षा के लिए मंत्रों का उल्लेख है।

- **उद्योग-धंधे**

उत्तरवैदिककालीन व्यवसायों की सूची वाजसनेयी संहिता व तैत्तरीय ब्राह्मण में मिलती है। इस काल का प्रमुख व्यवसायी **कुलाल** (कुम्भकार) था। साथ ही स्वर्णकार, मणिकार, रजकार, चर्मकार, बढ़ई आदि का भी उल्लेख है। बुनाई का कार्य मुख्यत: स्त्रियां करती थीं।

इस काल में लोहे के लिए **कृष्णअयस्**, ताँबे के लिए **लोहित-अयस**, ताँबे या काँसे के लिए **अयस**, चांदी के लिए **रूक्म** या **रूप्य** और सीसा के लिए **सीस** शब्द का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार आर्यों को **प्रथमत: लोहा व चांदी का ज्ञान उत्तरवैदिक काल में** हुआ।

इस काल में **रत्तिका** अथवा **गुंजा** (लाल दाना) तौल की इकाई, जिसे **तुलाबीज** भी कहा गया है। **निष्क्, शतमान, पाद, कृष्णल** आदि माप की इकाई, जबकि **द्रोण** अनाज मापने की इकाई था। इस काल में मछुआरे के लिए **धीवर या कैवर्त्त**, ऋण के लिए **कुसीद**, उधार देने वाले के लिए **कुसीदिन्** शब्द का प्रयोग किया जाता था।

- **व्यापार**

उत्तरवैदिक आर्यों को समुद्र का ज्ञान हो गया था। उत्तरवैदिक ग्रंथों में समुद्र एवं समुद्र यात्रा की भी चर्चा है। इस प्रकार इस काल में अप्रत्यक्ष रूप से विदेशी व्यापार का उल्लेख मिलता है। वाणिज्य व्यापार में अब भी वस्तु-विनिमय प्रणाली थी। अभी भी मुद्राओं का नियमित प्रचलन नहीं हुआ था। यद्यपि निष्क्, शतमान, पाद तथा कृष्णल का उल्लेख मिलता है, किन्तु इनका प्रयोग मुद्रा के रूप में नहीं, बल्कि माप की इकाई के रूप में होता था।

- **नगर**

उत्तरवैदिक ग्रंथ **तैत्तरीय अरण्यक** में नगरों के रूप में **हस्तिनापुर** व **कौशाम्बी** का उल्लेख मिलता है, किन्तु ये विकासशील नगर थे। इन्हें **आद्य नगरीय स्थल** ही कहा जा सकता है।

❐ धार्मिक जीवन

उत्तरवैदिककालीन आर्यों के धार्मिक जीवन में मुख्यत: 3 परिवर्तन दिखाई देते हैं -

1) देवताओं की महत्ता में परिवर्तन। **2)** आराधना की रीति में परिवर्तन। **3)** धार्मिक उद्देश्यों में परिवर्तन।

1) देवताओं की महत्ता में परिवर्तन - उत्तरवैदिक काल में **प्रजापति** (सृजन का देवता) को **सर्वोच्च स्थान** प्राप्त हो गया। प्रजापति में दो पूर्ववर्ती देवता विश्वकर्मा व हिण्यगर्भ समाहित हो गए। रूद्र और विष्णु का भी महत्व बढ़ गया। **रूद्र पशुओं के देवता** थे, जबकि **विष्णु** को लोग अपना **पालक व रक्षक** मानने लगे। ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है कि सभी देवताओं के उग्र रूप से रूद्र की उत्पत्ति हुई। इस काल में इन्द्र, वरूण व पूषन का महत्व कम हो गया। **वरूण** केवल **जल के देवता**, जबकि **पूषन शूद्रों के देवता** माने गए। उत्तरवैदिक काल में यद्यपि मूर्ति पूजा आभास मिलता है, किन्तु **मूर्तिपूजा का प्रचलन गुप्तकाल में** ही माना जाता है।

2) आराधना की रीति में परिवर्तन - इस काल में **स्तुति पाठ व प्रार्थना की जगह यज्ञों का महत्व बढ़ गया**। यज्ञों में बड़े पैमाने पर पशुबलि दी जाती थी तथा मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्व था। यज्ञ करने वाला यजमान तथा कराने वाला पुरोहित या ब्राह्मण कहलाता था। पुरोहित को दान-दक्षिणा में गायें, दासियां, सोना, कपड़ा और घोड़े दिए जाते थे। **राजसूय यज्ञ** करने वाले पुरोहित को दक्षिणा में **24 लाख गायें** मिलती थीं, किन्तु **दक्षिणा में भूमि दान उत्तरवैदिक काल में नहीं**, बल्कि **मौर्योत्तर काल से प्रारंभ** हुआ। उत्तरवैदिककालीन महत्वपूर्ण यज्ञ इस प्रकार थे -

a) राजसूय यज्ञ - यह राजा के **राज्याभिषेक** से सम्बंधित था, जिसमें वरूण व इन्द्र का अभिषेक किया जाता था।

b) अश्वमेध यज्ञ - यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण यज्ञ था। इसे राजा अपनी **साम्राजय विस्तार** हेतु करता था। इसमें चार अनुष्ठाता, चार रानियां और उनके 400 अनुचर इनमें हिस्सा लेते थे। वर्ष की समाप्ति पर 600 साड़ों के साथ कुछ घोड़ों की बलि दी जाती थी।

c) वायपेय यज्ञ - यह यज्ञ राजा के यौवन व शक्ति प्रदर्शन का प्रतीक था, जिसमें **रथदौड़ का आयोजन** होता था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

d) **अग्निहोतृ यज्ञ** – यह यज्ञ प्रातः और सायं अग्नि उपासना के साथ सम्पन्न किया जाता था।

e) **सौत्रामणि यज्ञ** – इसे **सोम यज्ञ** भी कहा जाता था, हालांकि सूत्रामन इन्द्र की उपाधि थी। इस यज्ञ में **पशु और सुरा की आहुति** दी जाती थी।

f) **पुरूषमेध यज्ञ** – इस यज्ञ में सर्वाधिक **25 यूपों** (यज्ञ स्तम्भ) का निर्माण किया जाता था तथा **पुरूषों की बलि** दी जाती थी।

g) **पंचपशु यज्ञ** – इसमें 5 पशुओं की बलि दी जाती थी, जिसमें भेड़, बकरा, घोड़ा, बैल व मनुष्य होता था, किन्तु **गाय नहीं**।

3) **धार्मिक उद्देश्यों में परिवर्तन – शतपथ ब्राह्मण** में पहली बार **पुनर्जन्म के सिद्धांत** का उल्लेख मिलता है। अब **लौकिक के साथ-साथ पारलौकिक उद्देश्य भी** महत्वपूर्ण हो गए।

- **उपनिषदीय प्रतिक्रिया**

वैदिक काल के अन्तिम दौर में **पुरोहितों के प्रभुत्व तथा याज्ञिक कर्मकाण्डों के विरूद्ध** उपनिषदीय प्रतिक्रिया हुई, जिसका चरम विकास जैन एवं बौद्ध आन्दोलनों में दिखाई पड़ता है। उपानिषदीय विचारकों ने यज्ञादि अनुष्ठानों को ऐसी कमजोर नौका बताया, जिसके द्वारा भवसागर रूपी जीवन को पार नहीं किया जा सकता। **मुण्डकोपनिषद** में **यज्ञों को टूटी-फूटी नौकाओं के समान** कहा गया है। उपनिषदों में **जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष** प्राप्त करना माना गया है, जो **ज्ञान मार्ग से ही प्राप्त** हो सकता था। यहां **ज्ञान** का तात्पर्य था – **ब्रह्म एवं आत्मा के बीच अद्वैतवाद** का ज्ञान।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

छठी सदी ई. पू. से तीसरी सदी ई. पू. तक का इतिहास

सूत्र काल | महाकाव्य काल | महाजनपद काल | विदेशी आक्रमण | जैन व बौद्ध धर्म

सूत्र काल

सूत्रकालीन सभ्यता की जानकारी हमें सूत्र साहित्य से प्राप्त होती है। सूत्र साहित्य की रचना वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा संक्षिप्त करने के लिए की गई थी। **सूत्र साहित्य** के अन्तर्गत **6 वेदांग** तथा **4 उपवेद** शामिल किए जाते हैं। इस काल की सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्था आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में दिखाई देती है, जिसे निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत समझा जा सकता है –

❐ अर्थिक जीवन

- **आहत सिक्के**

सूत्र काल से ही **नियमित सिक्कों का प्रचलन** प्रारंभ हुआ। सिक्कों के अध्ययन को **न्यूमिस्मेटिक्स** कहा जाता है। भारत के **प्राचीनतम सिक्के पांचवीं शताब्दी** ई. पू. से प्राप्त होते हैं, **जिन्हें आहत सिक्के** या **पंचमार्क मुद्रा** कहा जाता है। ये मुख्यत: **चांदी** के होते थे। इन्हें आहत इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये धातु के टुकड़ों पर पेड़, मछली, सांड़, हाथी, अर्द्धचन्द्र आदि की आकृति का ठप्पा मारकर बनाए जाते थे।

बौद्ध ग्रंथों में इन सिक्कों के लिए **कहापण** या **कार्षापण** का शब्द मिलता है, जो मुख्यत: चांदी व ताँबे के होते थे। इस समय **सोने का कोई भी सिक्का नहीं** मिलता। बौद्ध ग्रंथों में **निशाका** तथा **मशाका** नामक **स्वर्ण सिक्कों** का भी उल्लेख है। इन मुद्राओं की **सबसे पुरानी निधियां पूर्वी उत्तर-प्रदेश, मगध** और **तक्षशिला** से मिली हैं।

- **व्यापार व वाणिज्य**

सूत्र काल में नगरों के उदय और मुद्राओं की अधिकता के कारण व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई। व्यापारिक मार्गों पर स्थित नगरों, जैसे – कम्बोज, कोसल, वाराणसी आदि की व्यापारिक स्थिति महत्वपूर्ण थी। श्रावस्ती नगर, कौशाम्बी और वाराणसी दोनों से जुड़ा था।

इस समय के बन्दरगाहों में भारत के **पश्चिमी तट** का सबसे प्रसिद्ध, पुराना एवं बड़ा बन्दरगाह **भड़ौच** / भृगुकच्छ / बैरीगाजा था। इसके अतिरिक्त **महाराष्ट्र** में पश्चिम तट पर **सोपारा** तथा **बंगाल** में पूर्वी तट पर **ताम्रलिप्ति** भी प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

कम्बोज एवं गांधार से घोड़े उत्तरापथ से लाकर बनारस में बेचे जाते थे। इस काल की एक **बौद्ध पुस्तक बावेरू जातक** में मध्य एशिया को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में **मोरों** एवं **कौओं** का उल्लेख है।

- **श्रेणी संगठन**

इस काल में **व्यवसायियों** ने अपने-अपने **संगठन** बना लिए, जिसे **श्रेणी** कहा जाता था। **श्रेणी एक ही कार्य करने वाले लोगों का समूह था।** इसके प्रमुख को श्रेष्ठिन् (सेट्ठी) अथवा जेत्थक कहा जाता था। बड़े नगरों में व्यापारियों की बड़ी श्रेणियां होती थीं, इसके प्रधान को महाश्रेष्ठि कहा जाता था। **व्यापारियों के कारवां का प्रधान सार्थवाह** होता था, जिसे व्यापरियों का नेता भी कहा जाता था।

श्रेणियों के पास कार्यकारी तथा न्यायिक दोनों प्रकार के अधिकार होते थे। वे बैंक का कार्य भी करती थी तथा नाप-तौल, वस्तुओं का मूल्य, मजदूरी आदि निश्चित किया करती थी। श्रेणियां अपने सदस्यों के समाजिक जीवन को नियंत्रित करती थी, इसके नियमों को श्रेणीधर्म कहा जाता था। इस काल में शिल्पियों की 18 श्रेणियों का उल्लेख मिलता है, जिनमें लोहार, बढ़ई, चर्मकार और रंगकार की श्रेणियां प्रमुख थीं। **वाराणसी** में **वेस्स या वणिक लोगों की गली** थी, वहीं पर **हाथी दांत के शिल्पियों की गली** का उल्लेख है। शिल्पियों एवं व्यापारियों से कर भी वसूला जाता था। शिल्पियों से महीने में एक दिन **विष्टि (बेगार)** कराया जाता था। व्यापारियों से उनके माल की बिक्री पर चुंगी कर वसूल किया जाता था। चुंगी कर वसूलने वाला अधिकारी **शौल्किल** या **शुल्काध्यक्ष** कहलाता था।

❐ समाजिक जीवन

- **जाति व्यवस्था**

सूत्र काल में जाति व्यवस्था की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त होती है। इस काल में जातियों का **आधार कर्म न होकर जन्म** हो गया। प्रथम तीन वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रीय व वैश्य को एक साथ द्विज कहा गया और उन्हें शूद्रों से अलग माना जाने लगा।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **अस्पृश्यता**

सूत्र काल में शूद्रों की स्थिति सबसे दयनीय थी। उनका प्रमुख कार्य ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना होता था। इस काल में शूद्रों के साथ छूआछूत तथा अस्पृश्यता का बरताव किया जाने लगा। **अस्पृश्यता की उत्पत्ति, प्रतिलोम विवाह** (उच्च जाति की कन्या एवं निम्न जाति का पुरुष) **के फलस्वरूप** हुई, जिनमें चाण्डाल (शूद्र पिता व ब्राह्मण माता से उत्पन्न पुत्र) की स्थिति सबसे दयनीय थी। इस काल में शूद्रों को यज्ञ, मंत्रोच्चारण आदि का अधिकार नहीं था। अन्तर्वर्ण विवाह एवं खान-पान पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया।

पाणिनि ने अष्टध्यायी में दो प्रकार के शूद्रों का उल्लेख किया है - **निरवसित** (नगर के बाहर रहने वाले) तथा **अनिरवसित** (नगर के सीमा में रहने वाले)। इनमें से पहले प्रकार के शूद्र ही अस्पृश्य माने जाते थे। वशिष्ट ने भी शूद्रों को शमशान के समान अपवित्र कहा है।

- **स्त्रियों की स्थिति**

सूत्र काल में स्त्रियों की दशा उत्तर वैदिक काल की तुलना में और भी खराब हो गई।

❒ धार्मिक जीवन

सूत्र काल में **4** प्रकार के **आश्रमों, 4 पुरुषार्थों, 16** प्रकार के **संस्कारों** तथा **8** प्रकार के **विवाहों** का विधिवत वर्णन मिलने लगता है।

- **आश्रम व्यवस्था**

उत्तर वैदिककालीन ग्रंथ **छान्दोग्य उपनिषद** में **3 आश्रम** (ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ व वानप्रस्थ) का, जबकि **चौथे आश्रम** (सन्यास) का सर्वप्रथम उल्लेख सूत्रकालीन ग्रंथ **जावाली उपनिषद** में प्राप्त होता है। इस प्रकार **4 आश्रमों का सर्वप्रथम उल्लेख जावाली उपनिषद** में हुआ है।

- **पुरुषार्थ**

उत्तर वैदिककाल में **त्रिवर्ग (धर्म, अथ, काम)** का, जबकि सूत्र काल में **चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)** का प्रथमत: उल्लेख मिलता है।

- **षोडश संस्कार**

संस्कार का अर्थ है - परिष्कार अथवा शुद्धिकरण। इसके माध्यम से व्यक्ति को समाज के योग्य नागरिक के रूप में तैयार किया जाता था। **16 संस्कार** जन्मपूर्व से लेकर मृत्युपर्यन्त तक चलते रहते थे। 16 संस्कारों का सर्वप्रथम उल्लेख अश्वालायन कृत **गृह्य सूत्र** में प्राप्त होता है।

- **विवाह**

अश्वालायन के गृह्य सूत्र में **8 प्रकार के विवाहों** का वर्णन मिलता है, जिनमें से ब्रह्म विवाह, दैव विवाह, आर्ष विवाह, प्रजापत्य विवाह को धार्मिक मान्यता प्राप्त थी, जबकि असुर विवाह, गंधर्व विवाह, राक्षस विवाह व पैशाच विवाह को धार्मिक मान्यता प्राप्त नहीं थी। इनमें से **सबसे अधिक प्रचलित ब्रह्म विवाह** था। **आर्ष** विवाह में कन्या का पिता वर से **एक जोड़ी गाय-बैल** लेकर अपनी कन्या का विवाह वर से कर देता था। **असुर** विवाह को **विक्रय विवाह** भी कहते थे, क्योंकि इसमें कन्या का पिता वर से कन्या का मूल्य लेकर बेच देता था। **गंधर्व** विवाह को **प्रेम विवाह** या **स्वयंवर** विवाह भी कहा जा सकता है। **राक्षस** विवाह को **अपहरण विवाह** कहा जा सकता है, जिसे क्षत्रियों में मान्यता प्राप्त थी।

महाकाव्य काल

महाकाव्य काल से तात्पर्य **रामायण** तथा **महाभारत** के समय से है। ये दोनों **आर्षमहाकाव्य** माने जाते हैं। यद्यपि इनके समय को लेकर विवाद हैं, परन्तु इन दोनों का **अंतिम संकलन 400 ई. में गुप्तकाल** में किया गया है।

❒ रामायण

इसके रचियता महाऋषि **वाल्मीकि** हैं। रामायण को भारत का **आदिमहाकाव्य**, जबकि **वाल्मिकी** को **आदिकवि** माना जाता है। रामायण में प्रारम्भ 6000 श्लोक थे, परन्तु बाद में 12,000 और अंतत: 24,000 श्लोक हो गए, तब इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता कहा जाने लगा। रामायण का **तमिल तथा बांग्ला भाषा में अनुवाद क्रमश: कम्बन तथा कृत्तिवास** ने किया है। 20वीं शताब्दी में भी **रामास्वामी पेरियार** ने तमिल भाषा में **सच्ची रामायण** की रचना की थी।

❒ महाभारत

इसका **संकलन महार्षि वेदव्यास** ने किया है। प्रारंभ में महाभारत में 8800 श्लोक थे, तब इसे **जय संहिता**, फिर 24,000 श्लोक हो गए, तब इसे **भारत** तथा अंतत: जब 1,00,000 श्लोक हो गए, तब इसे **महाभारत** या **शतसाहस्त्री संहिता** कहा जाने लगा। महाभारत **विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य** है। इसमें कुल **18 पर्व** हैं, जिनमें से **6वें पर्व (भीष्म पर्व) का भाग गीता** है, जिसमें कर्म, भक्ति एवं ज्ञान का संगम मिलता है, किन्तु **सर्वाधिक प्रधानता कर्म** को दी गई है। श्रीमद्भागवत **गीता संस्कृत भाषा** में लिखित है, जिसमें ही **सर्वप्रथम अवतारवाद** का उल्लेख मिलता है। महाभारत का **तमिल तथा बांग्ला भाषा में अनुवाद क्रमश: पेरून्देवनार तथा विद्वानों की मंडली** ने किया है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

महाजनपद काल

लगभग छठी शताब्दी ई. पू. में गंगा-यमुना दोआब एवं बिहार में **लोहे के प्रचूर प्रयोग के कारण** अधिशेष उत्पादन होने लगा था। इससे उत्तर वैदिक काल के जनपद अब महाजनपदों में परिवर्तित हो गए, इसीलिए इस काल को गार्डन चाइल्ड द्वारा भारत की **द्वितीय नगरीय क्रांति** कहा गया है। **प्रथम नगरीय क्रांति** इससे करीब 1000 वर्ष पूर्व **सैंधव सभ्यता** के समय में दिखाई देती है।

बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** एवं जैन ग्रंथ **भगवती सूत्र** में **16 महाजनपदों** का उल्लेख मिलता है। इनका वर्णन निम्नलिखित है -

- **अंग** (वर्तमान में **बिहार** के भागलपुर व मुंगेर जिला)

अंग की राजधानी **चम्पा** थी। इस नगर का वास्तुकार महागोविन्द था। आगे अंग के राजा ब्रह्मदत्त को पराजित करके बिम्बिसार ने अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया।

- **वज्जि** (वर्तमान में **बिहार** राज्य)

वज्जि 8 कुलों का संघ था, जिनमें 3 कुल लिच्छिवि, विदेह तथा वज्जि थे। लिच्छिवियों की राजधानी **वैशाली** थी, जिसकी पहचान वर्तमान में बिहार राज्य के बसाढ़ नामक स्थान से की गई है। **वैशाली विश्व का प्रथम गणतंत्र** भी माना जाता है।

- **काशी** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** का बनारस जिला)

काशी की राजधानी **वाराणसी** थी। आगे यहां के राजा ब्रह्मदत्त को पराजित करके कोसल के राजा कंस ने काशी को अपने राज्य में मिला लिया।

- **कोसल** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** का श्रावस्ती जिला)

सरयु नदी कोसल को दो भागों में बांटती थी - **उत्तरी कोसल** की राजधानी **श्रावस्ती/साकेत/अयोध्या/सहेत महेत** थी, जबकि **दक्षिणी कोसल** की राजधानी **कुशावती** थी। श्रावस्ती का आकार **अर्द्ध चन्द्राकार** था। कोशल के प्रमुख राजाओं में कंस, महाकोशल, प्रसेनजित तथा विडूढूब थे। कोसल में शाक्यों का कपिलवस्तु गणराज्य भी शामिल था। विडूढूब ने शाक्यों के कपिलवस्तु स्थित लुम्बिनी (पिपरहवा) पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, परन्तु जब वह वापस लौट रहा था, तो अचिरावती (राप्ति) नदी की बाढ़ में उसकी पूरी सेना नष्ट हो गई।

- **मल्ल** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** व **बिहार** राज्य)

मल्ल के दो भाग थे - **उत्तरी मल्ल** की राजधानी **कुशीनगर** (उत्तर प्रदेश), जबकि **दक्षिणी मल्ल** की राजधानी **पावा** (बिहार) थी। **कुशीनगर व पावा में क्रमशः महात्माबुद्ध तथा महावीर की मृत्यु** हुई थी।

- **वत्स** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** का इलाहाबाद जिला)

वत्स की राजधानी **कौशाम्बी** थी। हस्तिनापुर के राजा निचक्षु ने हस्तिनापुर के गंगा के प्रवाह में बह जाने के बाद कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाई थी। यहां का सबसे प्रमुख राजा **उदयन** था, जिसकी शत्रुता अवन्ति के राजा प्रद्योत से थी। उदयन को प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता से प्रेम हो गया था, जिसका अपहरण कर उसे अपनी राजधानी कौशाम्बी लाया, बाद में प्रद्योत ने इस विवाह को अनुमति देकर मैत्री सम्बंध स्थापित कर लिया। **भास** ने अपनी रचना **स्वप्न वासवदत्तम्** में इसका उल्लेख किया है। भास के अनुसार उदयन का विवाह मगध के राजा दर्शक की बहन (अजातशत्रु की पुत्री) पद्मावती से भी हुआ था। उदयन को बौद्ध भिक्षु **पिण्डोला** ने बौद्ध मत में दीक्षित किया था।

- **कुरू** (वर्तमान में **मेरठ, दिल्ली** व **थानेश्वर** का क्षेत्र)

कुरू की राजधानी **इन्द्रप्रस्थ** थी। महाभारतकालीन **हस्तिनापुर** का नगर भी इसी राज्य में स्थित था। बुद्ध काल में यहां का राजा कोरव्य था। पहले कुरू एक **राजतंत्रात्मक** राज्य था, किन्तु **बाद में यहां गणतंत्र** की स्थापना हुई।

- **पांचाल** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** के बरेली, बदायूं व फर्रूखाबाद जिले)

पांचाल के दो भाग थे - **उत्तरी पांचाल** की राजधानी **अहिच्छत्र**, जबकि **दक्षिणी पांचाल** की राजधानी **काम्पिल्य** थी। कान्यकुब्ज का प्रसिद्ध नगर इसी राज्य में स्थित था। द्रौपदी भी पांचाल की ही थी। मूलतः यह एक **राजतंत्र** था, किन्तु कौटिल्य के समय तक यह गणराज्य हो गया था।

- **अवन्ति** (वर्तमान में **मध्य प्रदेश** के उज्जैन व खरगौन जिले)

अवन्ति के दो भाग थे- **उत्तरी अवन्ति** की राजधानी **उज्जैन/उज्जयिनी/अवन्तिका**, जबकि **दक्षिणी अवन्ति** की राजधानी **महिष्मती/महेश्वर** थी। बुद्धकालीन अवन्ति का राजा **चण्डप्रद्योत** था। चण्डप्रद्योत को पीलिया नामक रोग हो गया था, जिसके उपचार हेतु **बिम्बिसार** ने अपने **राजवैद्य जीवक** को भेजा था। बौद्ध पुरोहित **महाकच्चायन** के प्रभाव से **चण्डाप्रद्योत बौद्ध** बन गया। आगे मगध सम्राट शिशुनाग ने अवन्ति को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **शूरसेन** (वर्तमान में **उत्तर प्रदेश** का मथुरा जिला)

शूरसेन की राजधानी **मथुरा** थी। प्राचीन यूनानी लेखक इस राज्य को शूरसेनोई तथा इसकी राजधानी को मेथोरा कहते थे। **कृष्ण यहीं के राजा** थे। बुद्ध काल में यहां का राजा अवन्ति-पुत्र था।

- **चेदि** (वर्तमान में **मध्य प्रदेश** का बुन्देलखण्ड क्षेत्र)

चेदि की राजधानी **सोत्थिवती/शक्तिमती** थी। महाभारत काल में यहां का शासक शिशुपाल था, जिसका वध कृष्ण के द्वारा किया गया।

- **मत्स्य** (वर्तमान में **राजस्थान** के जयपुर, अलवर व भरतपुर जिले)

मत्स्य की राजधानी **विराटनगर** थी। इस महाजनपद का संस्थापक राजा विराट था।

- **अश्मक** (वर्तमान में **आन्ध्र प्रदेश** राज्य)

अश्मक की राजधानी **पोतना/पेाटिल** थी। 16 महाजनपदों में **केवल अश्मक** ही **नर्मदा नदी के दक्षिण में गोदावरी** के तट पर स्थित था।

- **गांधार** (वर्तमान में **पाकिस्तान** के पेशावर व रावलपिण्डी का क्षेत्र)

गांधार की राजधानी **तक्षशिला** थी। इस जनपद का दूसरा प्रमुख नगर **पुष्कलावती** था। बुद्ध काल में यहां का राजा पुष्कर-सारिन था, जिसने अवन्ति के शासक चण्डप्रद्योत को हराया था।

- **कम्बोज** (वर्तमान में **पाकिस्तान** व **भारत** का क्षेत्र)

कम्बोज की राजधानी **राजपुर/हाटक** थी। कौटिल्य ने कम्बोज के निवासियों को **वार्ताशस्त्रोपजीवी**, अर्थात् कृषि, पशुपालन, वाणिज्य तथा शस्त्र द्वारा जीविका चलाने वाला कहा है। कम्बोज उत्तरापथ में स्थित था तथा अपने **श्रेष्ठ घोड़ों** के लिए विख्यात था।

- **मगध** (वर्तमान में **बिहार** के पटना, गया व शाहाबाद जिले)

मगध में छठी सदी ई. पू. में क्रमश: **3 वंशों** के राजाओं ने शासन किया -

1) हर्यंक वंश (पितृहन्ता वंश)। **2) नाग** वंश। **3) नन्द** वंश।

❒ हर्यंक वंश (पितृहन्ता वंश) - 544 ई. पू. से 412 ई. पू.

इस वंश का संस्थापक बिम्बिसार था।

- **बिम्बिसार**
  - जैन साहित्य में बिम्बिसार को **श्रेणिक** कहा गया है।
  - बिम्बिसार ने **राजगृह** (गिरिब्रज) नामक नगर की स्थापना की तथा इसे अपनी **राजधानी** बनाई। राजगृह **तीनों ओर से पहाड़ियों** से घिरा हुआ था।
  - बिम्बिसार ने **विजयों व वैवाहिक सम्बंधों** के द्वारा अपने वंश का विस्तार किया। इसने 3 राजवंशों में वैवाहित संबंध स्थापित किए -
    1) लिच्छिवि गणराज्य के शासक चेटक की पुत्री **चेलना** के साथ विवाह किया।
    2) कोसल नरेश प्रसेनजित की बहन **महाकोशला** से विवाह किया, जिससे दहेज में काशी का प्रान्त प्राप्त हुआ।
    3) मद्र देश (कुरू के समीप) की राजकुमारी **क्षेमा** से विवाह किया।
  - बिम्बिसार ने अंग देश के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित कर उसे अपने राज्य में मिला लिया।
  - बिम्बिसार ने अपने राज्यवैद्य जीवक को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत की पीलिया (पाण्डु) रोग के उपचार हेतु भेजा था।
  - बिम्बिसार बौद्ध तथा जैन दोनों मतों का पोषक था तथा गोतम बुद्ध व महावीर का समकालीन था।
  - बिम्बिसार की **हत्या** इसके **पुत्र अजातशत्रु** ने कर दी।
- **अजातशत्रु**
  - अजातशत्रु को **कुणिक** भी कहा जाता है।
  - अजातशत्रु का कोसल नरेश प्रसेनजित से युद्ध हुआ, जिसमें पहले तो प्रसेनजित की हार हुई, परन्तु बाद में दोनों में समझौता हो गया। प्रसेनजित ने अपनी पुत्री **वाजिरा** का विवाह अजातशत्रु से कर दिया।
  - अजातशत्रु का वज्जि संघ के साथ भी युद्ध हुआ, जिसमें उसने अपने कूटनीतिज्ञ **मंत्री वत्सकार** की सहायता से लिच्छिवियों की शक्ति पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार काशी और वैशाली को मिला लेने के बाद मगध का साम्राज्य और विस्तृत हो गया।
  - अजातशत्रु **आजीवक सम्प्रदाय** तथा **बौद्ध** व **जैन मतों का पोषक** था।
  - अजातशत्रु के शासनकाल के 8वें वर्ष में **बुद्ध की मृत्यु** हुई थी। बुद्ध के अवशेषों पर उसने **राजगृह में स्तूप का निर्माण** करवाया था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- अजातशत्रु के काल में **राजगृह की सप्तपर्णि गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति** का आयोजन किया गया।
- अजातशत्रु की **हत्या** इसके **पुत्र उदयिन** ने कर दी।

◆ **उदयिन/उदयभद्र**

- उदयिन ने **गंगा और सोन नदियों के संगम** पर **पाटलिपुत्र/कुसुमपुर** नामक नगर की स्थापना की तथा राजगृह से अपनी **राजधानी** वहीं स्थानान्तरित की।
- उदयिन की हत्या एक व्यक्ति ने छूरा भोंक कर की।
- उदयिन के बाद उसके तीन पुत्रों अनिरूद्ध, मुण्डक और नागदशक ने बारी-बारी से राज्य किया। पुराणों अथवा कथाकोश में नागदशक का एक नाम दर्शक मिलता है। बाद में **जनता** ने इन **पितृहन्ताओं को शासन से हटाकर शिशुनाग** नामक एक योग्य आमात्य को **राजा बनाया**।

❒ शिशुनाग वंश - 412 ई. पू. से 344 ई. पू.

◆ **शिशुनाग**

- शिशुनाग ने **अवन्ति राज्य को जीतकर** उसे मगध साम्राज्य में मिला लिया।
- शिशुनाग ने अपनी नई **राजधानी वैशाली** में स्थापित की थी।

◆ **कालाशोक/काकवर्ण**

- कालाशोक ने अपनी **राजधानी पुनः पाटलिपुत्र** में स्थानान्तरित की तथा इसके बाद पाटलिपुत्र में ही मगध की राजधानी रही।
- **कालाशोक** के शासनकाल में **वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति** का आयोजन हुआ।
- कालाशोक की हत्या किसी व्यक्ति ने छुरा भोंककर कर दी।

❒ नन्द वंश - 344 ई. पू. से 324 ई. पू.

◆ **महानन्दिन**

- शिशुनाग वंश के बाद मगध का राज्य नन्द वंश के हाथों में आ गया। **महानन्दिन** ने इस वंश का स्थापना की, परन्तु इसका **वध** एक **शूद्र दासी पुत्र महापद्मनन्द** ने कर दिया।

◆ **महापद्मनन्द**

- महापद्मनन्द मगध साम्राज्य का **सबसे शक्तिशाली शासक** था। पुराणों में इसे **एकछत्र/एकराट** कहा गया है। इसके अतिरिक्त महापद्मनन्द की अन्य उपाधियां **उग्रसेन, अपरोपरशुराम, सर्वक्षत्रांतक** आदि थीं।
- महापद्मनन्द ने **कलिंग की विजय** की तथा वहां **तिनसुलिया** नामक **नहर** भी खुदवाई। इसका उल्लेख बाद में कलिंग के शासक **खारवेल** ने अपनी **हाथी गुम्फा अभिलेख** में किया है। इसी अभिलेख से पता चलता है कि **महापद्मनन्द कलिंग से जिनसेन की जैन प्रतिमा** उठा लाया था।
- व्याकरणाचार्य **पाणिनि महापद्मनन्द के मित्र** थे।

◆ **धनानन्द**

- धनानन्द **नन्द वंश का अन्तिम सम्राट** था। जनता पर **अत्यधिक कर** लगाने के कारण **जनता** उससे **असंतुष्ट** थी। इसका फायदा उठाकर **चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की मदद से धनानन्द के युद्ध मंत्री भद्दशाल को पराजित कर मौर्य वंश की स्थापना** की।
- धनानन्द के समय में ही 326 ई. पू. में **सिकन्दर ने भारत में आक्रमण** किया था।
- **नन्द वंश के राजा जैन मत के पोषक** थे। धनानन्द के जैन अमात्य शकटाल तथा स्थूलभद्र थे। वर्ष, उपवर्ष, वररूचि, कात्यायन जैसे विद्धान भी नंद काल में ही उत्पन्न हुए थे।

❒ बुद्धकालीन प्रमुख गणराज्य

बुद्ध काल में सोलह महाजनपदों के अलावा गंगा घाटी में कई गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं, जो इस प्रकार है-

1) **कपिलवस्तु के शाक्य** - **नेपाल** के सिद्धार्थनगर जिला में स्थित पिपरहवा। यहीं बुद्ध का जन्म हुआ था।
2) **सुमसुमार पर्वत के भग्ग** - **उत्तर प्रदेश** के मिर्जापुर जिला में स्थित चुनार।
3) **अलकप्प के बुलि** - **बिहार** के शाहाबाद, आरा व मुजफ्फरपुर जिलों में स्थित।
4) **केसपुत्त के कालाम** - **उत्तर प्रदेश** के कोसल के पश्चिम में स्थित। **आलारकालाम** नामक आचार्य इसी गणराज्य के थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

5) **रामगाम के कोलिय** - **उत्तर प्रदेश** के गोरखपुर जिला में स्थित।

6) **कुशीनारा के मल्ल** - **उत्तर प्रदेश** के कुशीनगर जिला में स्थित। यहीं बुद्ध की मृत्यु हुई थी।

7) **पावा के मल्ल** - **बिहार** के नालन्दा जिला में स्थित। यहीं महावीर की मृत्यु हुई थी।

8) **पिप्पलिवन के मोरिय** - **उत्तर प्रदेश** के गोरखपुर जिला में स्थित।

9) **वैशाली के लिच्छिवि** - **बिहार** के वैशाली जिला में स्थित। यहीं महावीर का जन्म हुआ था।

10) **मिथिला के विदेह** - **बिहार** के भगलपुर व दरभंगा जिलों में स्थित।

विदेशी आक्रमण

❒ ईरानी/पारसीक (हखामनी वंश) आक्रमण

- प्राचीन काल से भारत व ईरान का सांस्कृतिक सम्बन्ध था। ईरानी ग्रंथ **जिन्द अवेस्ता** में भारत की सिन्धु नदी को **हिन्दू नदी** तथा संप्तसेंधव प्रदेश को **हफ्तहेंदव प्रदेश** कहा गया है।
- भारत पर सबसे पहला विदेशी आक्रमण ईरानियों या फारसियों द्वारा किया गया।
- **558 ई. पू.** - **530 ई. पू.** के मध्य ईरान के शासक **साइरस द्वितीय** ने सर्वप्रथम भारत पर आक्रमण किया, किन्तु वह भारत के किसी भू-भाग को जीतने में असफल रहा।
- **516 ई. पू.** में **डेरियस/दारा प्रथम** ने आक्रमण कर भारत के पश्चिमोत्तर भाग को अपने **20वें प्रान्त** में शामिल किया।
- **इतिहास के पिता** कहे जाने वाले **हेरोडोटस** ने अपनी पुस्तक **हिस्टोरिका** में लिखा है कि इस प्रान्त से दारा को **360 टैलेण्ट स्वर्ण धूलि** की आय प्राप्त होती थी।
- पारसीक सम्पर्क के फलस्वरूप भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में **खरोष्ठी लिपि** का जन्म हुआ, जो ईरानी व आरमेइक लिपि से उत्पन्न हुई थी।
- भारत और ईरान के सम्बन्ध के कारण यहां ईरानी मुद्रा **डेरिक** (स्वर्ण मुद्रा) व **सिगलोई** (रजत मुद्रा) प्रचलित हुई।
- कुछ विद्धानों के अनुसार मौर्य वंश के शासक अशोक ने हखामनी सम्राटों से प्रेरणा लेते हुए ही स्तम्भों व शिलाओं पर घोषणाएं खुदवाई थीं तथा स्तम्भों के **शीर्ष पर घण्टा की आकृति** बनवाई थी।

❒ यूनानी/ग्रीक आक्रमण

- **सिकन्दर** का जन्म 356 ई. पू. में यूनान के **मकदूनिया/मेसिडोनिया** प्रान्त में हुआ था। वह 336 ई. पू. में अपने पिता **फिलिप** की मृत्यु के पश्चात् यूनान का शासक बना। सिकन्दर के गुरू का नाम **अरस्तू** था।
- सिकन्दर विश्व विजेता बनने की इच्छा की पूर्ति हेतु विजय अभियान पर निकला। इस क्रम में उसने भारत पर 326 ई. पू. में आक्रमण किया। इस अभियान में सिकन्दर के सहयोगी सेनापति **नियार्कस**, **आनेसिक्रटस**, **अरिस्टोवुल्स**, **सेल्यूकस**, **क्रेटरस** आदि थे। इस समय मगध का शासक **धनानन्द** था।
- भारत में सर्वप्रथम सिकन्दर के सम्मुख सिंध व झेलम नदी के बीच स्थित **तक्षशिला के राजा आम्भी ने आत्मसमर्पण** कर दिया तथा आगे के विजय अभियान में सिकन्दर की सहायता की।
- **झेलम/वितस्ता का युद्ध (326 ई. पू.)** - सिकन्दर का भारत में सबसे सशक्त विरोध झेलम तथा चिनाब के मध्यवर्ती प्रदेश के शासक **पोरस** (पूरू) ने किया। युद्ध में अद्‌भुत वीरता दिखाने के बावजूद भी पोरस पराजित हुआ। बाद में सिकन्दर ने पोरस को उसका राज्य वापस कर दिया।
- सिकन्दर की सेना ने **व्यास नदी** से आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। इस दौरान सिकन्दर **19 महीने** भारत में रहा तथा कुछ महत्वपूर्ण नगरों की स्थापना की, जैसे - **निकैया** (विजयनगर), **बुकेफाल** (अपने घोडे के नाम पर) तथा **सिकन्दरिया** (सिंध)।
- वापस लौटने से पूर्व सिकन्दर ने अपने सम्पूर्ण विजित क्षेत्र को 4 प्रशासनिक इकाइयों में बांट दिया -
  1) **प्रथम प्रांत** - सिंधु नदी के पश्चमी में स्थित भू-भाग **फिलिप** के अधीन।
  2) **द्वितीय प्रांत** - सिंधु व झेलम के बीच स्थित भू-भाग **आम्भी** के अधीन।
  3) **तृतीय प्रांत** - झेलम व व्यास नदी के बीच स्थित भू-भाग **पोरस** के अधीन।
  4) **चतुर्थ प्रांत** - सिंधु नदी के निचला भू-भाग **पिथोन** के अधीन।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- सिकन्दर को वापस लौटते समय **मालव, क्षुद्रक, अश्वक** आदि गणराज्यों के विरोध का सामना करना पड़ा। इनमें से **अश्वक गणराज्य की स्त्रियों ने भी सिकन्दर के विरूद्ध युद्ध में भाग लिया** था। अंततः इन सभी गणराज्यों को जीतते हुए सिकन्दर सिन्धु नदी के मुहाने पर पहुंचा तथा अपनी सेना को दो भाग में विभक्त किया।
- सेना का एक भाग, **जल सेनापति नियार्कस** के नेतृत्व में जल मार्ग से वापस लौटा, जबकि दूसरा भाग, सिकन्दर के नेतृत्व में स्थल मार्ग से वापस लौटा। रास्ते में **323 ई. पू. में बेबीलोन (ईराक) में सिकन्दर की मृत्यु** हो गई।
- सिकन्दर के आक्रमण का भारत को सर्वप्रमुख लाभ यह हुआ कि सिकन्दर के आक्रमण की तिथि 326 ई.पू. ने भारत के **क्रमागत इतिहास** को लिखने में बड़ी सहायता की। साथ ही भारत में यूनानी संपर्क के परिणामस्वरूप यूनानी मुद्राओं के अनुकरण पर **उलूक शैली के सिक्के** भी ढाले जाने लगे।

जैन धर्म

जैन शब्द संस्कृत के **जिन** शब्द से बना है, जिसका अर्थ है - विजेता (जितेन्द्रिय)। जैन महात्माओं को **निर्ग्रन्थ** (बन्धन रहित) तथा जैन संस्थापकों को **तीर्थंकर** (भवसागर से पार उतारने वाला) कहा गया है।

जैन धर्म में **24 तीर्थंकर** तथा **63 शलाका पुरूष** (महान पुरूष) की मान्यता है। जैन धर्म के **प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव** या **आदिनाथ** थे। **ऋषभदेव** और **अरिष्टनेमि** (22वें तीर्थंकर) का उल्लेख **ऋग्वेद** में मिलता है। वायुपुराण, विष्णुपुराण व भागवतपुराण में **ऋषभदेव** का उल्लेख **नारायण के अवतार** के रूप में मिलता है। ऋषभदेव एक राजा थे, जो अपने पुत्र भरत के पक्ष में राजगद्दी त्यागकर यति बन गए थे। पौराणिक मान्यता है कि इसी भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

24 तीर्थंकरों में से **अंतिम दो तीर्थंकर** (23वें व 24वें) को ही **ऐतिहासिक रूप से सत्य** माना जाता है।

❐ पार्श्वनाथ

23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के **पिता अश्वसेन** (काशी के राजा) थे। पार्श्वनाथ को ज्ञान की प्राप्ति **सम्मेत पर्वत** पर हुई थी। जैन अनुश्रुति के अनुसार इन्होंने 70 वर्ष तक धर्म का प्रचार किया तथा अपने अनुयायियों को **चातुर्याम शिक्षा** या **चार आचरण का पालन** करने को कहा -

1) सत्य - सदा सत्य बोलना। **2) अहिंसा** - हिंसा न करना। **3) अस्तेय** - चोरी न करना। **4) अपरिग्रह** - सम्पत्ति न रखना।

❐ महावीर

महावीर **24वें** तथा **अंतिम तीर्थंकर** थे। जैन धर्म का **मूल संस्थापक ऋषभदेव** को, जबकि **वास्तविक संस्थापक महावीर** को माना जाता है। महावीर का **जन्म 599 ई. पू.** या **540 ई. पू.** में **वैशाली** के निकट **कुण्डग्राम** में हुआ था, जबकि **मृत्यु** 72 वर्ष की आयु में **527 ई. पू.** या **468 ई. पू.** में **पावापुरी** में (**मल्ल** राजा सुस्तपाल के राज्य में) हुई थी।

महावीर का **बचपन का नाम** - वर्धमान, **पिता** - सिद्धार्थ (ज्ञातृक क्षत्रियों के प्रधान), **माता** - त्रिशला/विदेहदत्ता (लिच्छिवी नरेश चेटक की बहन), **पत्नी** - यशोदा (कुण्डिन्य गोत्र की कन्या), **पुत्री** - प्रियदर्शना/अणोज्या, **दामाद/जामाता** - जामालि था।

पिता की मृत्यु के बाद महावीर ने बड़े भाई नन्दिवर्धन से अनुमति लेकर **30 वर्ष** की अवस्था में गृह त्याग किया। जैन ग्रंथ **आचारांग सूत्र** में उनकी कठोर तपस्या का वर्णन मिलता है। नालन्दा में इनकी भेंट **मक्खलिपुत्तगोशाल** नामक संन्यासी से हुई। वह उनका शिष्य बन गए, किन्तु 6 वर्षों बाद उनका साथ छोड़कर **आजीवक सम्प्रदाय** की स्थापना की। आजीव सम्प्रदाय के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा नियंत्रित एवं संचालित होती है। मनुष्य के कर्मों का उसके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद वैशाख मास के 10वें दिन **जृम्भिक ग्राम** के समीप **ऋजुपालिका नदी** के तट पर **साल वृक्ष** के नीचे उन्हें **कैवल्य (पूर्ण ज्ञान)** की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् वे **केवलिन**, **अर्हत्** (योग्य) तथा **निर्ग्रन्थ** (बन्धन रहित) कहे गए। अपनी साधना में अटल रहने तथा अतुल पराक्रम दिखाने के कारण उन्हें **महावीर** कहा गया।

ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त महावीर ने अपना **प्रथम उपदेश राजगृह में विपुलाचल पहाड़ी पर वाराकर नदी के तट पर** दिया। इनका **प्रथम शिष्य जामालि** तथा **प्रथम शिष्या चन्दना** बनी। समकालीन शासकों बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयन, चण्डप्रद्योत की भी आस्था जैन धर्म में थी।

❐ जैन धर्म की शिक्षाएं

◆ सृष्टि की व्याख्या

जैन धर्म के अनुसार **सृष्टि का वास्तविक कारण ईश्वर नहीं** है, बल्कि **सृष्टि की रचना व पालन-पोषण सार्वभौमिक विधान से** हुआ है। जैन धर्म के अनुसार संसार अनेक चक्रों में बंटा हुआ है तथा प्रत्येक चक्र की 2 अवधियां हैं -

1) उत्सर्पिणी अर्थात् विकास की अवधि। **2) अवसर्पिणी** अर्थात् ह्रास की अवधि।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

जैन धर्म के अनुसार यह सृष्टि अनादि तथा वास्तविक है, जिसमें प्रलय का कोई स्थान नहीं है। **सृष्टि/संसार की रचना जीव तथा अजीव से** मिलकर हुई है। **जीव चेतन तत्व** है, जबकि **अजीव अचेतन (जड़) तत्व** है। **अजीव** का विभाजन पांच भागों में किया गया है - **पुद्गल** (पदार्थ), **काल** (समय), **आकाश** (स्थान), **धर्म** (गति) तथा **अधर्म** (अगति)। इनमें से **काल** को **अनास्तिकाय द्रव्य** माना गया है।

जैन धर्म में **संसार दुःखमूलक** माना गया है। संसार के सभी प्राणी अपने-अपने संचित कर्मों के अनुसार ही कर्मफल भोगते हैं। **कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण** है। कर्मफल से छुटकारा पाकर ही व्यक्ति निर्वाण की ओर अग्रसर होता है। इसके लिए आवश्यक है कि पूर्वजन्म के संचित कर्म को समाप्त किया जाए और वर्तमान जीवन में कर्मफल से विमुख रहे। जैन धर्म में **पुनर्जन्म** व **कर्म सिद्धान्त** की मान्यता है।

- **आस्रव, बंधन, संवर तथा निर्जरा की व्याख्या**

जैन धर्म के अनुसार कर्म, बंधन का कारण है। अज्ञानता के कारण कर्म जीव की ओर आकर्षित होने लगता है, इसे **आस्रव** कहते हैं। कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना **बंधन** है। त्रिरत्नों का अनुसरण करने से कर्मों का जीव की ओर बहाव रूक जाता है, जिसे **संवर** कहते हैं। इसके बाद पहले से व्याप्त कर्म समाप्त होने लगते हैं इस अवस्था को **निर्जरा** कहा गया है। जब जीव से कर्म का अवशेष बिल्कुल समाप्त हो जाता है तब वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार कर्म का जीव से वियोग मुक्ति है। मोक्ष के पश्चात् जीव आवागमन के चक्र से छुटकारा पा लेता है तथा **सिद्धशिला** नामक कल्पित स्थान में **अनन्त चतुष्टय** - अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य व अनन्त सुख को प्राप्त करता है।

- **त्रिरत्न**

जैन धर्म के अनुसार मोक्ष/निर्वाण की प्राप्ति हेतु त्रिरत्नों का पालन करना आवश्यक है। जैन धर्म में **त्रिरत्न - सम्यक् दर्शन/धारणा, सम्यक् ज्ञान** तथा **सम्यक् आचरण/चरित्र** को माना गया है। इनमें से आचरण पर सर्वाधिक बल दिया गया है तथा इस सम्बंध में भिक्षुओं के लिए पंच महाव्रत तथा ग्रहस्थों के लिए पंच अणुव्रत के पालन का विधान है -

- **पंच महाव्रत तथा पंच अणुव्रत**

पंच महाव्रत के अन्तर्गत **सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह** तथा **ब्रह्मचर्य** का पालन करना जरूरी माना गया है। इनमें से प्रारंभ के 4 व्रत पार्श्वनाथ के समय से ही प्रचलित थे, जबकि 5वां व्रत ब्रह्मचर्य को महावीर ने जोड़ा था। पंच अणुव्रत के अंतर्गत भी इन्हीं के पालन की बात की गई है, किन्तु इनकी कठोरता में पर्याप्त कमी की गई है।

- **सप्तभंगीनय/स्याद्वाद/अनेकान्तवाद**

जैन धर्म में सप्तभंगीनय/स्याद्वाद/अनेकान्तवाद की मान्यता है। इन दार्शनिक सिद्धान्तों का तात्पर्य यह है कि अपने ज्ञान को त्रुटि से बचाने हेतु कथनों से पूर्व स्यात् शब्द का प्रयोग किया जाता चाहिए। चूंकि किसी भी वस्तु या सत्ता के संदर्भ में स्यात् शब्द का प्रयोग कर 7 तरीकों से अनेक प्रकार से कहा जा सकता है, इसलिए इस सिद्धान्त को सप्तभंगीनय तथा अनेकान्तवाद भी कहा जाता है। दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण हर ज्ञान 7 विभिन्न स्वरूपों में व्यक्त किया जा सकता है -

1) **स्यात् अस्ति** - शायद है।
2) **स्यात् नास्ति** - शायद नहीं है।
3) **स्यात् अस्ति च नास्ति** - शायद है और नहीं है।
4) **स्यात् अव्यक्तम्** - शायद कहा नहीं जा सकता।
5) **स्यात् अस्ति च अव्यक्तम्** - शायद है और कहा नहीं जा सकता।
6) **स्यात् नास्ति च अव्यक्तम्** - शायद नहीं है और कहा नहीं जा सकता।
7) **स्यात् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तम्** - शायद है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता।

❐ जैन धर्म में मतभेद

महावीर स्वामी के ज्ञान प्राप्ति के 12वें वर्ष में उनका **जामालि** से मतभेद हो गया। इस मतभेद के कारण जामालि ने संघ छोड़ दिया और एक नए सिद्धांत **बहुरतवाद** (कार्य पूरा होने पर ही पूरा माना जाएगा) का प्रतिपादन किया। जैन धर्म में दूसरा विद्रोह जामालि के दो वर्षों बाद **तीसगुप्त** ने किया।

❐ जैन धर्म का प्रचार

महावीर ने अपने जीवनकाल में ही **11 अनुयायियों के एक संघ की स्थापना** की, जो **गणधर** कहे गए। इन्हें अलग-अलग समूहों का अध्यक्ष बनाया गया। इनमें इन्द्रभूति और सुधर्मन को छोड़कर सभी की मृत्यु महावीर स्वामी के जीवनकाल में हो गई। **महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद सुधर्मन जैन संघ का प्रथम अध्यक्ष बना।**

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

सुधर्मन की मृत्यु के बाद **जम्बू** 44 वर्ष तक संघ का अध्यक्ष रहा। धनानन्द के समय में **सम्भूति विजय** संघ के अध्यक्ष थे। सम्भूति विजय की मृत्यु चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण के समय हुई। इसके बाद क्रमशः **भद्रबाहु** तथा **स्थूलभद्र** जैन संघ के अध्यक्ष बने। जब भद्रबाहु जैन संघ के अध्यक्ष थे, उसी समय मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ा, जिसके फलस्वरूप **भद्रबाहु चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर्नाटक चले गए। चन्द्रगुप्त मौर्य** ने **श्रवणबेलगोला** में **संलेखना/कायाक्लेश/निषिद्धि पद्धति से अपने प्राण त्यागे** थे।

❐ जैन धर्म का विकास

महावीर स्वामी के समय में जैन धर्म का सर्वाधिक विकास हुआ। नन्दवंश का प्रतापी शासक **महापद्मनन्द** कट्टर जैन धर्मानुयायी था। **चन्द्रगुप्त मौर्य** भी जैन धर्म का अनुयायी था, उसके समय में पाटलिपुत्र में प्रथम जैन संगीति का आयोजन हुआ। अशोक का पौत्र **सम्प्रति** भी जैन धर्मानुयायी था। उसी प्रकार कलिंग के चेदि वंश के राजा **खारवेल** भी कट्टर जैन अनुयायी था, उसका **हाथीगुम्फा अभिलेख** जैन धर्म का प्राचीनतम् अभिलेखीय साक्ष्य है। इस अभिलेख में उल्लेख है कि खारवेल ने अपने शासक के 12वें वर्ष में मगध पर आक्रमण किया, जहां शुंग वंश का शासन था और मगध को आक्रांत कर महापद्मनन्द द्वारा कलिंग से ले जायी गई **जिनसेन की मूर्ति** वापस ले आया। खारवेल ने उदयगिरि पहाड़ी में जैन साधुओं के लिए एक गुफा का निर्माण भी करवाया था।

पूर्व मध्यकाल में दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट व गंग वंश के शासकों ने, गुजरात व खजुराहो में क्रमशः चालुक्य व चन्देल वंश शासकों ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया। राष्ट्रकूट शासक **इन्द्र चतुर्थ** ने भी संलेखना पद्धति से अपना शरीर त्यागा था। राष्ट्रकूट शासक **अमोघवर्ष** भी जैन धर्म के स्याद्वाद का अनुयायी था। इसके शासन काल में जिनसेन व गुणभद्र नामक जैन आचार्य हुए। गंग वंश के शासक **रचमल्ल के सेनापति चामुण्डराय** ने 974 ई. में **श्रवणबेलगोला** के पास एक **बाहुबली** जिन मूर्ति का निर्माण करवाया, जो **गोमतेश्वर की मूर्ति** कहलाती है। यह 70 फीट ऊँची है। बाहुबली को ऋषभदेव का पुत्र माना जाता है। श्रावणबेलगोला में 12 वर्ष के अन्तराल में **महामस्तकाभिषेक** समारोह का आयोजन किया जाता है।

गुजरात के चालुक्य/सोलंकी वंश के शासक **जयसिंह सिद्धराज** व **कुमारपाल** ने भी जैन धर्म को प्रश्रय दिया। इन दोनों के दरबारी कवि **हेमचन्द्र** ने **प्राकृत अपभ्रंश भाषा** में **परिशिष्टपर्वन्** नामक जैन ग्रंथ की रचना की। इस वंश के शासक **भीमदेव प्रथम के मंत्री विमलशाह** ने राजस्थान के माउण्ट आबू में संगमरमर से **दिलवाड़ा** के जैन मंदिर का निर्माण कराया, जिसके गर्भगृह में ऋषभदेव या आदिनाथ की मूर्ति है।

खजुराहो के चन्देल वंश शासक **धंग** के शासनकाल में भी खजुराहो में जैन मंदिरों का निर्माण हुआ।

❐ जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय

◆ श्वेताम्बर एवं दिगम्बर

चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में मगध क्षेत्र में अकाल पड़ा। इस समय जैन सम्प्रदाय के प्रमुख भद्रबाहु थे। भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत चले गए। **स्थूलभद्र** अपने अनुयायियों के साथ मगध में ही रूके रहे और उन्होंने श्वेत वस्त्र धारण करना प्रारम्भ कर दिया। इसी कारण वे **श्वेताम्बर** कहलाए, जबकि **भद्रबाहु** के अनुयायी **दिगम्बर** कहलाए। श्वेताम्बर जैनियों को **यति, आचार्य** तथा **साधु** कहा जाता था, जबकि दिगम्बर जैनियों को **झुल्लक, ऐल्लक** और **निर्ग्रन्थ** कहा जाता था।

श्वेताम्बर अनुयायी ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त भी भोजन आवश्यक समझते थे, जबकि दिगम्बर नहीं। श्वेताम्बर मत के अनुसार महावीर स्वामी का विवाह हुआ और पुत्री भी उत्पन्न हुई, जबकि दिगम्बरों का मानना था कि वे अविवाहित थे। श्वेताम्बर मानते थे कि 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे, जबकि दिगम्बरों के अनुसार वे पुरूष थे।

कालान्तर में श्वेताम्बर और दिगम्बर भी अनेक उपसम्प्रदायों में विभाजित हो गए। श्वेताम्बर के प्रमुख उपसम्प्रदाय – पुजेरा/डेरावासी एवं ढुढ़िया/स्थानकवासी हैं, जबकि दिगम्बर के प्रमुख उपसम्प्रदाय – बीस पंथी, तेरापंथी, समैयापंथी/तारणपंथी, तोतापंथी एवं गुमानपंथी हैं।

❐ जैन संगति/सम्मेलन

◆ प्रथम जैन सभा

समय – चतुर्थ शताब्दी ई. पू.। **स्थान** – पाटलिपुत्र। **अध्यक्ष** – स्थूलभद्र।

इस सभा में जैन धर्म के ग्रंथ **12 अंगों का संकलन** किया गया, किन्तु भद्रबाहु के अनुयायियों ने भाग नहीं लिया। इसी सभा में **जैन धर्म का विभाजन श्वेताम्बर एवं दिगम्बर** नामक दो सम्प्रदायों में हो गया। स्थूलभद्र के अनुयायी श्वेताम्बर कहलाए, जबकि भद्रबाहु के अनुयायी दिगम्बर कहलाए।

पाटलीपुत्र की सभा के बाद, महावीर स्वामी की मृत्यु के 840 वर्षों बाद एक सभा का आयोजन किया गया। यह सभा दो भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की अध्यक्षता में दो अलग-अलग स्थानों पर हुई। पहली **मथुरा** में **आर्य स्कन्दिल** की अध्यक्षता में तथा दूसरी **वल्लभी** में **नागार्जून सूरी** की

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

अध्यक्षता में हुई। इनमें धर्मग्रंथों का संकलन किया गया, परन्तु पृथक्-पृथक् दो स्थानों पर स्वतंत्र रूप से सभा आयोजित होने के कारण धर्मग्रंथों में विभेद आ गया। इस विभेद के निवारण हेतु पुनः वल्लभी में द्वितीय जैन सभा का आयोजन दिवर्धिगण की अध्यक्षता में हुआ।

- **द्वितीय जैन सभा**

समय - 513 या 526 ई.। **स्थान** - वल्लभी। **अध्यक्ष** - देवर्धिगण या क्षमाश्रमण।

इसी समय जैन साहित्य **(आगम ग्रंथ) 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, 4 मूल सूत्र एवं अनुयोग सूत्र का संकलन** हुआ।

❐ जैन साहित्य

जैन धर्म की प्रमुख देन साहित्य एवं कला के क्षेत्र में है। जैन के प्राचीनतम ग्रंथों को **पूव्व** कहा जाता है। इनकी संख्या **14** है। जैन साहित्य को आगम कहा जाता है ये **अर्धमागधी** या मागधी या प्राकृत में लिखे गए हैं। इसके अन्तर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीण, 6 छेद सूत्र, 4 मूल सूत्र एवं अनुयोग सूत्र आते हैं। जैन धर्म से सम्बन्धित प्रमुख साहित्य निम्नलिखित हैं -

आचारांग सूत्र इसमें जैन भिक्षुओं द्वारा अनुसरण किए जाने वाले नियमों का वर्णन है।

भगवती सूत्र इसमें महावीर सहित अनेक जैन मुनियों की जीवन गाथाओं का वर्णन है। साथ ही स्वर्ग तथा नरक का भी उल्लेख है।

वृहत्कल्प सूत्र यह छेद सूत्र का भाग है, जिसकी रचना **भ्रद्रबाहु** ने की थी, जिसे **कल्पसूत्र** भी कहा जाता है।

नायाधम्मकहा इसमें महावीर की शिक्षाएं संग्रहित हैं।

परिशिष्टपर्वन् प्राकृत अपभ्रंश भाषा में **हेमचंद्र** द्वारा लिखित।

न्यायावतारः सिद्धसेन दिवाकर द्वारा लिखित।

आवश्यकचूर्णि इस पर हरिभद्र ने टीका लिखि है।

थेरी गाथा

❐ जैन तीर्थंकर व प्रतीक

तीर्थंकर	नाम	प्रतीक
1	ऋषभदेव/आदिनाथ	वृषभ
2	अजितनाथ	गज
19	मल्लिनाथ	कलश
21	नेमिनाथ	नीलोत्पल
22	अरिष्टनेमि	शंख
23	पार्श्वनाथ	सर्पफण
24	महावीर	सिंह

❐ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➢ जैन धर्म को व्यापक सफलता प्राप्त नहीं हुई, क्योंकि इसमें मोक्ष प्राप्ति हेतु कठिन तपस्या पर बल दिया गया था। साथ ही इसमें आत्मा को भी पदार्थों में भी स्वीकार किया गया है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

बौद्ध धर्म

❐ गौतम बुद्ध

बौद्ध धर्म के **संस्थापक गौतम बुद्ध** माने जाते हैं। उनका **जन्म 563 ई. पू.** में नेपाल की तराई में **कपिलवस्तु** के निकट **लुम्बिनी** नामक स्थान पर हुआ था। कपिलवस्तु की पहचान पिपरहबा नामक क्षेत्र से की गई है तथा लुम्बिनी को बौद्ध ग्रंथों में रूम्मिनदेई भी कहा गया है। गौतम बुद्ध का **बचपन का नाम** - सिद्धार्थ (गोत्र - गौतम), **पिता** - शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण के प्रधान), **माता** - महामाया (कोलिय गणराज्य की कन्या), **पत्नी** - यशोधरा/गोपा/बिम्बा/भद्रकच्छा (शाक्य कुल की), **पुत्र** - राहुल था। बुद्ध के जन्म के सात दिनों के उपरान्त ही उनकी माता का देहान्त हो गया, अत: उनका पालन-पोषण मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया। बुद्ध की **मृत्यु** 80 वर्ष की अवस्था में **483 ई. पू.** में मल्लों की राजधानी **कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)** में हुई थी।

बुद्ध के जन्म के समय ही दो ब्राह्मणों **कालदेव** व **कौण्डिन्य** ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक चक्रवर्ती राजा अथवा सन्यासी होगा। गौतम बुद्ध ने निम्नलिखित **4 दृश्य देखे**, जिसके परिणामस्वरूप उनके मन में वैरागय की भावना उठी -

1) वृद्ध व्यक्ति को देखना।
2) बीमार व्यक्ति को देखना।
3) मृत व्यक्ति को देखना।
4) प्रसन्न मुद्रा में सन्यासी को देखना।

बुद्ध ने **29 वर्ष** की अवस्था में **सारथी चाण** तथा **घोड़ा कन्थक** की सहायता से गृह त्याग किया। बौद्ध ग्रंथों में इस घटना को **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है। इसके बाद बुद्ध वैशाली पहुंचे, जहां उनकी मुलाकात **आलारकालाम** नामक सन्यासी से हुई, जो **सांख्य दर्शन** का आचार्य था। बुद्ध ने इन्हें अपना गुरू बनाया, किन्तु बुद्ध इनसे संतुष्ट नहीं हुए। आगे राजगृह के समीप इनकी मुलाकात **रूद्रक रामपुत्र** नामक धर्माचार्य से हुई। तदुपरान्त वे उरूवेला (बोध गया) पहुंचे तथा तपस्या प्रारम्भ की। उनके साथ 5 ब्राह्मण सन्यासी भी तपस्या कर रहे थे। जातक कथाओं से पता चलता है कि उरूवेला के सेनानी की पुत्री सुजाता द्वारा लाई गई भोज्य सामग्री को ग्रहण कर लेने के कारण पांचों ब्राह्मण इनका साथ छोड़कर **सारनाथ (ऋषिपत्तन)** चले गए। बुद्ध ने तपस्या जारी रखी 8वें दिन उन्हें **उरूवेला (बोध गया)** में **निरन्जना नदी** के किनारे **पीपल वृक्ष** के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई। इसके उपरान्त वे **बुद्ध, तथागत** (सत्य है जिसका ज्ञान) तथा **शाक्यमुनि** कहलाए।

ज्ञान प्राप्ति के बाद बोध गया में ही इन्होंने दो बंजारों **तपस्सु** और **भल्लिक** की अपना सेवक बना लिया। सर्वप्रथम बुद्ध गया से **सारनाथ** (ऋषिपत्तन या मृगदाव) पहुंचे, जहां पहले से ही पांचों ब्राह्मण मौजूद थे। यहीं पर बुद्ध ने अपना **प्रथम उपदेश** इन्हीं पांचों ब्राह्मणों को दिया। इस घटना को **धर्मचक्रपवर्तन** कहा गया। फिर बुद्ध वाराणसी आ गए तथा यश नामक श्रेष्ठिपुत्र को अपना शिष्य बनाया। यहीं यश की माता व पत्नी महात्मा बुद्ध की प्रथम उपासिकाएं बनी। यहां से बुद्ध पुन: सारनाथ आ गए, जहां बुद्ध ने प्रथम वर्षा काल व्यतीत किया।

आगे बुद्ध **राजगृह** गए बुद्ध राजगृह पहुंचे जहां बिम्बसार ने इनका स्वागत किया और इन्हें **वेणुवन विहार** दान में दिया। राजगृह में ही सारिपुत्र, मोद्गलायन, उपालि, अभय आदि इनके शिष्य बने। यहां से बुद्ध लुम्बिनी पहुंचे और अपने परिवार के लोगों को उपदेश दिया। उनका चचेरा भाई देवदत्त शिष्य बन गया। आगे **देवदत्त** ने ही **बुद्ध के विरूद्ध विद्रोह** कर स्वयं संघ का प्रमुख बनने का असफल प्रयास किया था।

फिर बुद्ध **कोसल (श्रावस्ती)** आ गए, जहां का एक व्यापारी अनाथ पिण्डक शिष्य बना एवं **जेतवन विहार** बुद्ध को दान में दिया। श्रावस्ती में एक व्यापारी की पुत्री विशाखा ने इनकी शिष्यता ग्रहण की तथा संघ के लिए **पुव्वाराम (पूर्वाराम) विहार** बनवाया। यहीं डाकू अंगलिमाल ने बुद्ध की शिष्यता ग्रहण की। कोसल नरेश प्रसेनजित भी इनके शिष्य बने। **बुद्ध ने अपना सर्वाधिक समय व वर्षाकाल कोसल (श्रावस्ती) में व्यतीत किया और यहीं उनके सर्वाधिक संख्या में शिष्य बने।**

इसके बाद बुद्ध **वैशाली** आए, जहां लिच्छियों ने उन्हें **कुटाग्रशाला विहार** दान में दिया। वैशाली में ही बुद्ध ने अपने शिष्य **आनन्द के कहने पर महिलाओं को संघ में प्रवेश** दिया। **प्रजापति गौतमी सर्वप्रथम संघ में शामिल** हुई। यहीं गौतमी की पुत्री नन्दा, बुद्ध की पत्नी यशोधरा, वैशाली की नगर वधू आम्रपाली भी बुद्ध की शिष्या बनी।

कोसाम्बी का शासक **उदयन** बौद्ध भिक्षु **पिण्डोला** के प्रभाव से बौद्ध बन गया तथा बौद्ध भिक्षुओं हेतु **घोषिताराम विहार** दान में दिया। **बुद्ध** अपने जीवनकाल में **अवन्ति नहीं जा सके**। यहां उन्होंने **मोगलिपुत्ततिस्य** भेजा, जिन्होंने **चण्डप्रद्योत** को बौद्ध धर्म में दीक्षा दी।

जीवन के अन्तिम वर्ष में बुद्ध अपने शिष्य **चुन्द** (लोहार या सुनार) के यहां **पावा** पहुंचे। यहां **सूकरमाद्दव** भोज्य सामग्री खाने से **अतिसार** रोग से पीड़ित हो गए। फिर बुद्ध पावा से **कुशीनगर** चले गए और वहीं पर **सुभद्द को अन्तिम उपदेश** दिया। 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में ही इनकी मृत्यु हो गई, जिसे बौद्ध ग्रंथों में **महापरिनिर्वाण** कहा गया है। बुद्ध की मृत्यु के बाद उनका शरीर धातु के 8 भाग किए गए तथा प्रत्येक भाग पर स्तूप बनवाए गए।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ बौद्ध धर्म के सिद्धांत

◆ चार आर्य सत्य

बौद्ध धर्म का मूल आधार चार आर्य सत्य हैं। ये हैं - दु:ख, दु:ख समुदाय, दु:ख निरोध तथा दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा।

1) **दु:ख** - बुद्ध के अनुसार जगत में सर्वत्र दु:ख है।

2) **दु:ख समुदाय** - दु:ख समुदाय अर्थात् दु:ख उत्पन्न होने के कारण हैं। सभी कारणों का मूल है अविद्या तथा तृष्णा। दु:ख के कारणों को बौद्ध सिद्धान्त **प्रतीत्य समुत्पाद (कारणता सिद्धान्त)** में **द्वादश निदान** के अन्तर्गत समझाया गया है। द्वादश निदान के अन्तर्गत दु:ख हेतु 12 तत्वों को क्रमिक रूप से उत्तरदायी माना गया है, जिनमें से पूर्ववर्ती तत्व अपने परवर्ती तत्व का कारण है। ये 12 तत्व या चक्र इस प्रकार हैं - अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नाम-रूप, षडायतन, स्पर्श, तृष्णा, उपादान, भव, जाति, जरा तथा मरण।

चूंकि तृष्णा का **मूल कारण अविद्या** है। अत: इस चक्र के अंत एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु अविद्या का अन्त आवश्यक है। ज्ञान ही अविद्या का अन्त करके व्यक्ति को निर्वाण (मोक्ष) की ओर ले जाने में समर्थ है। प्रतीत्य समुत्पाद बौद्ध दर्शन का मूल तत्व है। **क्षणिकवाद** नामक बौद्ध सिद्धान्त प्रतीत्य समुत्पाद से ही उत्पन्न हुआ है।

3) **दु:ख निरोध** - दु:ख के निरोध या निवारण के लिए तृष्णा का उन्मूलन आवश्यक है।

4) **दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा** - आष्टांगिक मार्ग ही दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा है।

◆ आष्टांगिक मार्ग

अष्टांगिक मार्ग के अन्तर्गत निम्नलिखित 8 आचरणों के पालन पर बल दिया गया है - सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति व सम्यक् समाधि।

आष्टांगिक मार्ग के अनुशीलन से व्यक्ति निर्वाण की ओर अग्रसर होता है। बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग के अन्तर्गत अधिक सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करना या अत्यधिक काया-क्लेश में संलग्न होना दोनों को वर्जित किया है। उन्होंने इस सम्बंध में **मध्यम प्रतिपदा (मध्यम मार्ग)** को अपनाया।

बौद्ध धर्म मूलत: **अनीश्वरवादी** है। यह **अनात्मवादी** भी है, परन्तु **पुनर्जन्म की हिन्दू एवं जैन धर्म की भाँति इसमें मान्यता** है। इसी के कारण **कर्मफल का सिद्धांत** भी तर्कसंगत होता है। मिलिन्दपन्हो में कहा गया है कि जिस प्रकार पानी में एक लहर उठकर दूसरे को जन्म देकर स्वयं समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार कर्मफल चेतना के रूप में पुनर्जन्म का कारण होता है।

बौद्ध धर्म में निर्वाण के लिए **सदाचार तथा नैतिक जीवन पर अत्यधिक बल** दिया गया है। सदाचार व नैतिक जीवन के अन्तर्गत **10 शीलों के पालन** करने की बात कही गई है, जो हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, दोपहर के बाद भोजन न करना, व्यभिचार न करना, मद्य का सेवन न करना, आरामदायक शय्या का त्याग व आभूषणों का त्याग।

बौद्ध धर्म के अनुसार **जीवन का चरम लक्ष्य निर्वाण** प्राप्ति है। निर्वाण का अर्थ है - दीपक का बुझ जाना अर्थात् जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना। बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण इसी जीवन में प्राप्त हो सकता है। परन्तु महापरिनिर्वाण मृत्यु के बाद ही सम्भव है।

बौद्ध धर्म में मानव शरीर को **पंचस्कन्धों** (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार व विज्ञान) से निर्मित माना गया है। उसी प्रकार बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न - बुद्ध, धम्म** व **संघ** हैं।

◆ बौद्ध संघ

बौद्ध धर्म में संघ का महत्वपूर्ण स्थान है। यह त्रिरत्न का एक अनिवार्य अंग है। सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश देने के बाद बुद्ध ने पांच ब्राह्मण शिष्यों के साथ संघ की स्थापना की। बौद्ध संघ का संगठन **गणतांत्रिक प्रणाली** पर आधारित था। संघ में प्रवेश पानी के लिए गृहस्थ जीवन का त्याग और कम से कम 15 वर्ष की आयु का होना आवश्यक था। माता-पिता की आज्ञा के बिना कोई भी व्यक्ति इसमें प्रवेश नहीं पा सकता था। अस्वस्थ्य, शारीरिक विकलांग, ऋणी, सैनिक और दासों का संघ में प्रवेश वर्जित था। संघ के सभी निर्णय बहुमत के आधार पर होते थे। किसी विषय में मतभेद होने पर मतदान होता था। न्यूनतम उपस्थिति (कोरम) 20 थी। जब किसी विशेष अवसर पर सभी भिक्षु-भिक्षुणियां धर्मवार्ता के लिए एकत्रित होकर धर्मवार्ता करते थे तो उसे **उपोसथ** कहते थे। संघ में प्रविष्ट होने को **उपसम्पदा** कहा जाता था। गृहस्थ जीवन का त्याग **प्रवज्या** कहलाता था।

बौद्ध संघ में **स्त्रियों** को भी शामिल किया गया था, जो कि **पुरूषों के पर्यवेक्षण में** कार्य करती थीं, **किन्तु** वे पुरूषों पर **अधीन नहीं** थीं। बौद्ध के अनुयायी दो वर्गों में बंटे हुए थे - **भिक्षु व भिक्षुणी** तथा **उपासक व उपासिकाएं**। गृहस्थ जीवन में रहकर ही बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों को उपासक कहा जाता था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❒ बौद्ध संगीतियां

बौद्ध धर्म में 4 बौद्ध संगीतियों का आयोजन बौद्ध साहित्य की रचना एवं संकलन के लिए किया गया था।

- **प्रथम बौद्ध संगीति**

काल – 483 ई. पू.। **स्थान** – राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)। **अध्यक्ष** – महाकस्सप। **शासक** – अजातशत्रु।

इसमें बुद्ध के प्रमुख शिष्य **आनन्द** तथा **उपालि** ने क्रमशः **सुप्तपिटक** व **विनयपिटक** नामक बौद्ध ग्रंथों की रचना की। सुप्तपिटक में **बुद्ध के उपदेश**, जबकि विनयपिटक में बौद्ध **धर्म के आचार-विचार व नियम** संकलित हैं।

- **द्वितीय बौद्ध संगीति**

काल – 283 ई. पू.। **स्थान** – वैशाली (बालुकाराम विहार)। **अध्यक्ष** – सुबुकामी। **शासक** – कालाशोक।

इस संगीति में बौद्ध भिक्षुओं में कुछ बातों, जैसे दोपहर भोजन के बाद विश्राम करना, खाने के बाद छाछ पीना, ताड़ी पीना, गद्देदार बिस्तर का प्रयोग, सोने-चांदी का दान लेना आदि को लेकर मतभेद हो गया। जो लोग इस परिवर्तन के पक्ष में थे, वे **महासंघिका/सर्वास्तिवादी/पूर्वी भिक्षु/वज्जिपुत्र** कहलाए। इनका नेतृत्य **वैशाली** में **महाकस्सप** ने किया। जो लोग परिवर्तन के विरोधी थे, वे **स्थविरवादी/थेरावादी/पश्चिमी भिक्षु** कहलाए। इनका नेतृत्व **उज्जैन** में **महाकच्चायन** ने किया। बौद्ध संघ का यह विभेद बढ़ता गया तथा चतुर्थ बौद्ध संगीति में बौद्ध संघ का विभाजन हीनयान तथा महायान के रूप में हो गया।

- **तृतीय बौद्ध संगीति**

काल – 247 ई. पू.। **स्थान** – पाटलिपुत्र (अशोकाराम विहार)। **अध्यक्ष** – मोगलिपुत्ततिस्य। **शासक** – अशोक।

इसमें **मोगलिपुत्ततिस्य** ने **अभिधम्मपिटक** की रचना की तथा इसका एक ग्रंथ **कथावस्तु** का संकलन किया। इस संगीति में स्थविर सम्प्रदाय का ही बोलबाला था।

- **चतुर्थ बौद्ध संगीति**

काल – 102 ई. पू.। **स्थान** – कश्मीर का कुण्डलवन। **अध्यक्ष** – वसुमित्र। **शासक** – कनिष्क।

इस बौद्ध संगीति के **उपाध्यक्ष अश्वघोष** थे। इस सभा में महासंघिकों का बोलबाला था। इस संगीति में **विभाषाशास्त्र** नामक एक अन्य ग्रंथ की रचना हुई। इसी समय में बौद्धों ने **संस्कृत** के रूप में भाषा को अपना लिया। इसी समय बौद्ध धर्म स्पष्ट रूप से **हीनयान** तथा **महायान** नामक दो सम्प्रदायों में विभाजित हो गया। हीनयान में वस्तुतः स्थविरवादी तथा महायान में महासंघिक थे।

- **हीनयान**

हीनयान का शाब्दिक अर्थ है – निम्न मार्ग। ये लोग बौद्ध धर्म के प्राचीन आदर्शों को मूलरूप में बनाए रखना चाहते थे। हीनयान में बुद्ध को एक महापुरूष माना जाता था। हीनयान का आदर्श अर्हत् पद को प्राप्त करना था, जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण प्राप्त करते हैं, उन्हें अर्हत् कहा जाता है। हीनयान व्यक्तिवादी धर्म है, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयत्नों से ही मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। हीनयान में मांस खाना वर्जित है। हीनयानी कोई तीर्थ नहीं मानते। हीनयायी मूर्तिपूजक नहीं थे। हीनयान के ग्रंथ सामान्यतः पालिभाषा में हैं। हीनयानियों का प्रचार-प्रसार मुख्यतः दक्षिण भारत, लंका, बर्मा और थाईलैण्ड में हुआ।

- **महायान**

महायान का शाब्दिक अर्थ है – उत्कृष्ट मार्ग। इसे बोधिसत्वयान भी कहते हैं। ये लोग बौद्ध धर्म के प्राचीन आदर्शों में समय के साथ परिवर्तन या सुधार चाहते थे। महायान में बुद्ध को देवता माना जाता था। महायान का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व मोक्ष प्राप्ति के बाद भी दूसरे परन्तु प्राणियों की मुक्ति का निरन्तर प्रयास करते हैं। महायान में मांस खाने पर कोई प्रतिबंध नहीं था। महायानी चार तीर्थों को मानते हैं- लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर। महायानी मूर्तिपूजक थे। बुद्ध की मूर्तियों को निर्मित करने का प्रथम श्रेय पहली शताब्दी ई. में मथुरा कला को दिया जाता है। महायान के ग्रंथ सामान्यतः संस्कृत भाषा में है। महायानियों का प्रचार-प्रसार मुख्यतः उत्तर भारत, चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया में हुआ।

- **बोधिसत्व**

महायान का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व ऐसे व्यक्ति हैं जो निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं परन्तु अन्य लोगों के निर्वाण में सहायता करने के लिए आते हैं। ये मानव अथवा पशु किसी रूप में भी हो सकते हैं। प्रमुख बोधिसत्व निम्नलिखित हैं –

1) **अवलोकितेश्वर** – यह प्रधान बोधिसत्व हैं। इसे **पद्मपाणि** हाथ में कमल लिए हुए भी कहते हैं। इसका प्रधान गुण दया है।
2) **मंजुश्री** – इनके एक हाथ में खड्ग तथा दूसरे हाथ में किताब रहती है। इनका प्रमुख कार्य बुद्धि को प्रखर करना है।
3) **वज्रपाणि** – ये कठोर बोधिसत्व हैं तथा पाप एवं असत्य के सहारक हैं। इन्हें हाथ में बज्र लिए हुए प्रदर्शित किया गया है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

4) **क्षितिग्रह** – ये शुद्ध स्थानों के अभिभावक हैं।

5) **अमिताभ** – इन्हें संसार के अधिपति तथा स्वर्ग के निवासी के रूप में दर्शाया गया है।

6) **मैत्रेय** – ये कलशधारण करते हैं तथा **भावी बोधिसत्व** हैं।

- **हीनयान के सम्प्रदाय**

हीनयान के दो सम्प्रदाय **वैभाषिक** एवं **सौत्रान्तिक** हैं।

- **महायान के सम्प्रदाय**

महायान के प्रमुख सम्प्रदाय माध्यमिकवाद/शून्यवाद तथा योज्ञाचार/विज्ञानवाद हैं। **माध्यमिकवाद/शून्यवाद** के प्रवर्तक **नागार्जुन** है, जिनकी प्रमुख रचना **माध्यमिककारिका** है। इस सम्प्रदाय के अन्य विद्वान आर्यदेव, चन्द्रकीर्ति, शान्तिदेव, शान्तिरक्षित आदि हैं। जबकि **योगाचार/विज्ञानवाद** के प्रवर्तक **मैत्रेय/मैत्रेयनाथ** हैं। इस सम्प्रदाय के अन्य विद्वान असंग तथा बसुबंधु हैं। **नागार्जुन** ने कनिष्क के समय **चीन जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार** किया था।

- **अन्य प्रमुख सम्प्रदाय**

1) **वज्रयान सम्प्रदाय** – यह सम्प्रदाय मूलत: बंगाल एवं बिहार में प्रचलित था। बौद्ध धर्म में छठी शताब्दी ई. में अनेक दोष आने शुरू हो गए, जिसके फलस्वरूप वज्रयान नामक नए सम्प्रदाय का उदय हुआ। इसमें **बुद्ध की अनेक पत्नियों की कल्पना** की गई है जिनमें **तारा, चक्रेश्वरी देवी** आदि प्रमुखत: है।

2) **कालचक्रयान** – यह सम्प्रदाय मुख्यत: बंगाल एवं बिहार में प्रचलित था।

3) **सहजयान** – इस सम्प्रदाय की स्थापना दसवीं शताब्दी बंगाल में में हुई थी।

❐ बौद्ध साहित्य

- **पालीभाषा में लिखित बौद्ध ग्रंथ**

1) **सुप्तपिटक** – सुत्त का अर्थ धर्म उपदेश है। इस पिटक में बौद्ध धर्म के उपदेश संगृहीत हैं। ये पांच निकायों में विभाजित हैं – दीघ निकाय, मिज्झम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय।

2) **विनयपिटक** –इसमें भिक्षु और भिक्षुणियों के संघ एवं दैनिक जीवन सम्बंधी आचार-विचार, नियम संगृहीत है। इसके अन्तर्गत **पातिमोक्ख (प्रतिमोक्ष)** में अनुशासन सम्बंधी विधि-निषेधों तथा उसके भंग होने पर किए जाने वाले प्रायश्चितों का वर्णन है। वर्षा ऋतु के दौरान बौद्ध मठों में **पवरन** नामक समारोह आयोजित किया जाता था, इस दिन मठों में प्रवास कर रहे भिक्षुओं द्वारा अपराधों की स्वीकारोक्ति की जाती थी।

3) **अभिधम्म पिटक** – इस पिटक में बौद्ध दार्शनिक सिद्धांतों का वर्णन है। यह प्रश्नोत्तर के रूप में है।

4) **जातक कथाएं** – इनकी संख्या 549 हैं, जिनमें **बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएं** हैं। जातक कथाएं भारतीय कथा साहित्य का **सबसे प्राचीन संग्रह** हैं।

5) **दीपवंश एवं महावंश** – इनमें **सिंहलद्वीप** (श्रीलंका) का इतिहास उल्लेखित है।

6) **मिलिन्दपन्हो** – इसके रचियता **नागसेन** हैं। इस ग्रंथ में यूनानी राजा मिनेण्डर व बोद्ध भिक्षु नागसेन के मध्य वार्तालाप का वर्णन है।

- **संस्कृत भाषा मे लिखित बौद्ध ग्रंथ**

1) **बुद्धचरित** – इस महाकाव्य की रचना **अश्वघोष** ने की थी।

2) **सोन्दरानन्द** – इस महाकाव्य की भी रचना **अश्वघोष** ने की थी।

3) **सारिपुत्र प्रकरण** – इस नाटक की रचना **अश्वघोष** ने की थी।

4) **वज्र-सूची** – इसकी भी रचना **अश्वघोष** ने की थी।

5) **विशुद्धिमग्ग** – इसकी रचना **बुद्धघोष** ने की थी।

6) **अभिधम्म घोष** – इसकी रचना **वसुबन्धु** ने की थी।

7) **ललित विस्तर** – यह महायान से संबंधित ग्रंथ है, जिसमे **बौद्ध लिपि का प्राचीनतम् साक्ष्य** प्राप्त होता है।

8) **वज्रच्छेदिका** – यह भी महायान से संबंधित ग्रंथ है।

➢ बौद्ध धर्म के अन्तर्गत **दिङ्नाग** महत्वपूर्ण बौद्ध दार्शनिक हुए, जिन्हे **तर्कशास्त्र का प्रवर्तक** कहा जाता है, उसी प्रकार बौद्ध दार्शनिक **धर्मकीर्ति** को **भारत का कांट** कहा जाता है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

मौर्य साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य के विषय में जानकारी के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं –

1) कौटिल्य का अर्थशास्त्र।
2) मेगास्थनीज की इण्डिका।
3) अन्य विदेशी लेखकों के विवरण।
4) विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस तथा उस पर ढुंढिराज की टीका।
5) बौद्ध ग्रंथ – दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान आदि।
6) जैन ग्रंथ – हेमचंद्र कृत परिशिष्टपर्वन् आदि।
7) सोमदेव कृत कथासरित्सागर।
8) क्षेमेन्द्र कृत वृहत्कथामंजरी।
9) रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख।
10) अशोक के अभिलेख।

❐ कौटिल्य का अर्थशास्त्र

मौर्यों का इतिहास जानने हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत कौटिल्य का अर्थशास्त्र है। कौटिल्य के अन्य नाम **विष्णुगुप्त** व **चाणक्य** है। अर्थशास्त्र, **राजनीति** व **लोक-प्रशासन** पर लिखी गई पहली प्रमाणिक पुस्तक है। इससे मौर्यकालीन **शासन पद्धति की जानकारी** प्राप्त होती है। कौटिल्य को **भारत का मैकियावेली** तथा अर्थशास्त्र को **द प्रिंस** भी कहा जाता है।

अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 180 प्रकरण तथा 6000 श्लोक हैं। यह ग्रंथ अन्य पुरूष की शैली में लिखी गई है। सर्वप्रथम 1909 में **डॉ. शाम शास्त्री** ने इसे प्रकाशित करवाया था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में न तो इसके लेखक, न किसी मौर्य शासक और न ही मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र का उल्लेख है। इसमें सैन्य प्रशासन एवं नगर प्रशासन का भी वर्णन नहीं मिलता। इसकी तिथि के विषय में विद्वानों में मतभेद है, परन्तु इसे मौर्यकालीन रचना माना जाता है।

- **सप्तांग सिद्धांत**

कौटिल्य ने राज्य के सप्तांग सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्य को 7 तत्वों से निर्मित माना है, जो हैं –

1) **स्वामी (राजा)** – राज्य रूपी शरीर के **सिर** के समान।
2) **अमात्य (अधिकारी)** – राज्य रूपी शरीर के **आंख** के समान।
3) **जनपद (भू-भाग)** – राज्य रूपी शरीर की **जंघा** के समान।
4) **दुर्ग (किला)** – राज्य रूपी शरीर की **बाहों** के समान।
5) **कोष (धन)** – राज्य रूपी शरीर के **मुख** के समान।
6) **दण्ड (सेना)** – राज्य रूपी शरीर के **मस्तिष्क** के समान।
7) **मित्र** – राज्य रूपी शरीर के **कान** के समान।

- **तीर्थ**

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य के **18 तीर्थ** या अधिकारियों का वर्णन किया है।

- **गूढ़ पुरूष**

ये राज्य के **गुप्तचर** थे। इस प्रकार अर्थशास्त्र गुप्तचर प्रणाली का वर्णन करने वाला प्रथम ग्रंथ है। गुप्तचर विभाग का नाम अर्थशास्त्र में **महामात्यपसर्प** मिलता है।

- **जहाजरानी**

जहाजरानी का सर्वप्रथम उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। इसके अनुसार जहाजरानी पर राज्य का नियंत्रण था। **स्ट्रैबो** ने भी जहाजरानी पर राज्य के नियंत्रण की बात कही है।

- **शूद्र**

कौटिल्य ने पहली बार शूद्रों को भी **आर्य** कहा। इस प्रकार शूद्रों को भी ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों के साथ सेना में भर्ती होने की छूट मिल गई।

- **दास प्रथा**

कौटिल्य ने **9 प्रकार** के दासों का वर्णन किया है। इसमें से **अर्हितक** अस्थायी दास थे।

- **भू-राजस्व**

अर्थशास्त्र के अनुसार भू राजस्व **1/6 भाग** लेना चाहिए। पूरे प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में भू-राजस्व की मात्रा यही मानी गई है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

❒ मेगास्थनीज की इण्डिका

मेगास्थनीज, सीरिया व बेबिलोन के शासक **सेल्यूकस निकेटर का राजदूत** था, जो **चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में** 304 ई. पू. से 299 ई. पू. के बीच रहा। उसके ग्रंथ इण्डिका से चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है। हालांकि यह ग्रंथ अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है, फिर भी इसके उद्धरण अनेक यूनानी लेखकों एरियन, स्ट्रैबो, प्लूटार्क, प्लिनी, जस्टिन एवं डायोडोरस आदि के उद्धरणों में प्राप्त होते है। **स्ट्रैबो** ने मेगास्थनीज के वृत्तांत को **पूर्णतया असत्य एवं अविश्वसनीय** कहा है। **इण्डिका** एक अन्य यूनानी लेखक **एरियन** की भी कृति मानी जाती है।

सर्वप्रथम 1846 ई. में डॉ. स्वानवेग ने इन समस्त उद्धरणों को संग्रहीत करके प्रकाशित किया, जबकि 1891 ई. में मैक्रिण्डल महोदय ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया था। मेगास्थनीज की इण्डिका में निम्नलिखित महत्वपूर्ण वर्णन प्राप्त होते हैं –

- **शासक का वर्णन**

मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त को **सैन्ड्रोकोट्स** कहा है। उसके अनुसार शासक के चारों ओर सशस्त्र **महिलाएं अंगरक्षकों** के रूप में रहती थीं।

- **पाटलिपुत्र नगर का वर्णन**

चन्द्रगुप्त की राजधानी **पोलिब्रोथा** (पाटलिपुत्र) गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर स्थित पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर था। यह 80 स्टेडिया (16 किमी) लम्बा तथा 15 स्टेडिया (3 किमी) चौड़ा था। इसके चारों ओर 185 मी. चौड़ी तथा 30 हाथ गहरी खाई थी। नगर चारों ओर से एक ऊँची दीवार से घिरा था, जिसमें 64 तोरण द्वार तथा 570 बुर्ज थे। मेगास्थनीज के अनुसार भव्यता और शान-शौकत में **सूसा** तथा **एकबतना** के राजमहल भी उसकी तुलना नहीं कर सकते थे।

- **नगर प्रशासन का वर्णन**

मेगास्थनीज ने इण्डिका में पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन का उल्लेख किया है। उसके अनुसार पाटलिपुत्र का प्रशासन **6 समितियों द्वारा** होता था।

- **सैन्य प्रशासन का वर्णन**

मेगास्थनीज ने सैन्य प्रशासन का भी वर्णन किया है। उसके अनुसार सैन्य प्रशासन **6 समितियों द्वारा** किया जाता था।

- **राजस्व प्रशासन का वर्णन**

मेगास्थनीज के अनुसार राजा भू-राजस्व का 1/4 भाग लेता था। ध्यातव्य है कि कौटिल्य भू-राजस्व की मात्रा 1/6 भाग बताता है।

- **उत्तरापथ का वर्णन**

मेगास्थनीज ने उत्तरापथ का वर्णन किया है। यह सड़क सिंध को बंगाल के सोनार गांव से जोड़ती थी। इस सड़क का निर्माण **चन्द्रगुप्त मौर्य** द्वारा करवाया गया था। आगे मध्यकाल में **शेरशाह सूरी** ने इसे पक्की सड़क के रूप में परिवर्तित किया, उसके समय में इसका नाम शेरशाह सूरी मार्ग था। ब्रिटिश गवर्नर जनरल **ऑकलैण्ड** (1836 ई. - 1842 ई.) ने इसे **जी. टी. रोड** नाम दिया।

- **सोने की खान का वर्णन**

मेगास्थनीज के अनुसार भारत में सोने की उत्कृष्ट खाने थीं। उसके अनुसार वहां सोना निकालने वाली चीटियां भी होती थीं, जो कि सोने को बुरादे के रूप में खानों से बाहर लाती थी। उसने सोने की प्रसिद्ध खान का स्थान **दर्दिस्तान** (कश्मीर) बताया है।

- **मेगास्थनीज के भ्रामक विवरण**

मेगास्थनीज ने भारत की वस्तुस्थिति को सही ढंग से समझ न पाने के कारण निम्नलिखित भ्रामक विवरण दिए हैं –

1) **7 जातियों का वर्णन** – मेगास्थनीज ने लिखा है कि भारत में 7 प्रकार की जातियां (दार्शनिक, कृषक, अहीर, कारीगर, सैनिक, निरीक्षक व सभासद) थीं, परन्तु हम जानते हैं कि सूत्रकाल से ही 4 प्रकार के वर्ण थे।

2) **दास प्रथा के न होने का वर्णन** – मेगास्थनीज के अनुसार भारत में दास प्रथा विद्यमान नहीं थी, जबकि कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का वर्णन किया है। इसी प्रकार त्रिपिटक में भी 3 प्रकार के दासों का वर्णन है।

3) **अकाल न पड़ने का वर्णन** – मेगास्थनीज ने लिखा है कि भारत में अकाल नहीं पड़ते थे, जबकि चन्द्रगुप्त मौर्य के समय अकाल पड़ने का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार अशोक कालीन सोहगौरा ताम्रपत्र अभिलेख (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) तथा महास्थान अभिलेख (पश्चिम बंगाल) में अकाल के समय राज्य द्वारा अनाज वितरण का वर्णन है।

4) **लेखन कला के अभाव का वर्णन** – मेगास्थनीज के अनुसार भारत में लेखन कला का अभाव था, परन्तु हम जानते हैं कि इसके पहले ही वेदों तथा सूत्र साहित्यों की रचना हो चुकी थी।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

❒ अन्य विदेशी लेखक

इण्डिका के उद्धरण निम्नलिखित लेखकों की रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं।

- **स्ट्रैबो**

स्ट्रैबो ने एक महत्वपूर्ण **भौगोलिक कृति** की रचना की है। स्ट्रैबो ने सैल्यूकस और चन्द्रगुप्त के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित होने तथा चन्द्रगुप्त मौर्य की महिला अंगरक्षकों का उल्लेख किया है।

- **डियोडोरस**

डियोडोरस का भारत विषयक विवरण सबसे प्रारम्भिक यूनानी विवरण है।

- **प्लिनी**

प्लिनी की पुस्तक का नाम Natural History है।

- **एरियन**

इसने सिकन्दर के अभियान तथा भारत के भूगोल के विषय में लिखा है।

- **प्लूटार्क**

प्लूटार्क के अनुसार **चन्द्रगुप्त मौर्य युवावस्था में सिकन्दर से मिला** था।

- **जस्टिन**

जस्टिन की पुस्तक का नाम Epitome है। जस्टिन ने लिखा है कि सिकन्दर की मृत्यु के बाद भारत ने अपनी गर्दन से दासता का जुआ उतार कर फेंक दिया और अपने गवर्नरों (यूनानी क्षत्रपों) की हत्या कर डाली। इस मुक्ति युद्ध का नायक सेन्ड्रोकोट्स (चन्द्रगुप्त) था।

❒ विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस

विशाखदत्त द्वारा रचित संस्कृत नाटक मुद्राराक्षस में **चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा** अपने पुरोहित कौटिल्य की सहायता से **नन्द वंश की सत्ता को पलटने का वर्णन** है। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त के लिए **वृषल** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ कुछ विद्वान शूद्र मानते हैं। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को धनानन्द का पुत्र, जबकि ढुंढिराज द्वारा मुद्राराक्षस पर लिखी गई टीका में चन्द्रगुप्त धनानन्द का पौत्र कहा गया है।

❒ बौद्ध ग्रंथ

बौद्ध ग्रंथ **दीपवंश, महावंश** (सिंहली ग्रंथ) में अशोककालीन **तृतीय बौद्ध संगीति** की जानकारी प्राप्त होती है। इसी प्रकार दीव्यावदान् से भी मौर्य साम्राज्य के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। बौद्ध ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य को **क्षत्रिय** वर्ण का मान गया है।

❒ जैन ग्रंथ

जैन ग्रंथ हेमचन्द्र कृत परिशिष्टपर्वन् में चन्द्रगुप्त मौर्य को मयूरपोषकों के सरदार की लड़की का लड़का बताया गया है। इससे चन्द्रगुप्त मौर्य की क्षत्रिय उत्पत्ति सिद्ध होती है। जैन ग्रंथ आवश्यक सूत्र की हरिभद्रीय टीका में भी चन्द्रगुप्त को **क्षत्रिय** बताया गया है।

❒ सोमदेव कृत कथासरित्सागर

इस पुस्तक में भी चन्द्रगुप्त मौर्य को **नन्द वंश** का घोषित किया गया है।

❒ क्षेमेन्द्र कृत वृहत्कथा मंजरी

इस ग्रंथ में चन्द्रगुप्त मौर्य को **नन्द वंश** का बताया गया है।

❒ रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

शक शासक रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई.) **संस्कृत भाषा** का सबसे बड़ा अभिलेख है। इस अभिलेख में उल्लेखित है कि **चन्द्रगुप्त मौर्य** ने सौराष्ट्र प्रान्त में **सुदर्शन झील** का निर्माण कराया था, उस समय यहां का प्रशासक **पुष्यगुप्त वैश्य** था। आगे **अशोक** के समय में सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया गया, उस समय यहां का राज्यपाल **तुषास्फ** (यवन) था। **रूद्रदामन** के समय में भी इस झील का पुनर्निर्माण कराया गया, उस समय यहां का राज्यपाल **सुविशाख** था। **स्कंदगुप्त** के समय यहां के राज्यपाल **पर्णदत्त** के पुत्र एवं गिरिनार नगर के प्रशासक **चक्रपालित** ने भी इस झील के बांध का पुनर्निर्माण करवाया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

अशोक के अभिलेख

अशोक का इतिहास मुख्यत: उसके अभिलेखों से ही ज्ञात होता है। अभी तक उसके 47 से अधिक अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। इतिहासकार **डी. आर. भण्डारकर** महोदय ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया है।

सर्वप्रथम 1750 ई. में **टीफेन थेलर** ने दिल्ली–मेरठ अभिलेख खोजा था, जबकि **सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने** अशोक के दिल्ली–टोपरा अभिलेख **(ब्राह्मी लिपि) को पढ़ने में सफलता प्राप्त** की थी। हालांकि जेम्स प्रिंसेप ने इस अभिलेख में उल्लेखित देवानामपियदस्सी की पहचान श्रीलंका के शासक तिस्स से की थी, किन्तु सर्वप्रथम 1915 ई. **विलियम जोन्स** ने मास्की अभिलेख में उल्लेखित अशोक नाम प्राप्त होने से इन अभिलेखों को मौर्य साम्राज्य के तृतीय शासक अशोक से संबंधित बताया।

अशोक के अभिलेखों का विभाजन निम्नलिखित वर्गों में किया जा सकता है–

1) **शिलालेख** – इसे वृहद् शिलालेख एवं लघु शिलालेख दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

2) **स्तम्भलेख** – इसे भी दीर्घ स्तम्भलेख एवं लघु स्तम्भलेख में बांटा जा सकता है।

3) **गृहालेख** – ये गुफाओं में उत्कीर्ण लेख हैं।

इन सभी अभिलेखों की **भाषा प्राकृत** है, जबकि **लिपि ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरमेइक** एवं **यूनानी** है। लघु शिलालेख, दीर्घ एवं लघु स्तम्भलेख तथा गुहालेखों की लिपियां केवल ब्राह्मी है। भारत के बाहर पाये गए कुछ वृहद् शिलालेखों की लिपियां ही खरोष्ठी, आरमेइक एवं यूनानी हैं। उदाहरणार्थ –

शहबाजगढ़ी एवं मानसेहरा से प्राप्त अभिलेख (पाकिस्तान)	– खरोष्ठी लिपि में
तक्षशिला एवं लघमान से प्राप्त अभिलेख (पाकिस्तान)	– आरमेइक लिपि में
कंधार (शरेकुना) से प्राप्त अभिलेख (अफगानिस्तान)	– आरमेइक व यूनानी लिपि में (**द्विभाषिक लेख**)

❐ शिलालेख

इसे दीर्घ शिलालेख एवं लघुशिलालेख दो वर्गों में बांटा जाता है –

◆ दीर्घ शिलालेख

यह 14 विभिन्न लेखों का एक समूह है, जो 8 भिन्न–भिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। इन शिलालेखों में प्रशासनिक एवं धम्म से सम्बन्धित अनेक बातों का उल्लेख है। ये निम्नलिखित 8 स्थानों से प्राप्त हुए हैं –

1) शहबाजगढ़ी (पाकिस्तान)। 2) मानसेहरा (पाकिस्तान)। 3) कालसी (उत्तराखण्ड)। 4) सोपारा (महाराष्ट्र)।
5) गिरनार (गुजरात)। 6) एर्रगुडि (आंध्र प्रदेश)। 7) धौली (उड़ीसा)। 8) जौगढ़ (उड़ीसा)।

अशोक के दीर्घ शिलालेखों पर कुल 1 से 14 लेख खुदे हुए हैं, जो निम्नलिखित हैं –

प्रथम लेख इस लेख में **जीव हत्या पर निषेध** के बारे में लिखा गया है। इस अभिलेख के लिखे जाने समय तक केवल तीन पशु प्रतिदिन मारे जाते हैं – **दो मोर** एवं **एक मृग**, इसमें भी मृग हमेशा नहीं मारा जाता। ये तीनों भी भविष्य में नहीं मारे जाएंगे।

दूसरा लेख इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी राजा के विजित राज्य व अन्य सीमान्त प्रदेश, जैसे – **चोल, पाण्ड्य, सातियपुत्त, केरलपुत्त** (चेर) व **ताम्रपर्णी** (श्रीलंका) तथा **यवनराजा** (एन्टीयोक) व **चार अन्य पड़ोसी** राजाओं के प्रदेशों में प्रियदर्शी ने मनुष्य एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबंध किया।

तीसरा लेख इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी राजा ने आज्ञा जारी की कि मेरे साम्राज्य में सभी जगह **प्रादेशिक, रज्जुक** और **युक्त** प्रति पांचवें वर्ष राज्य का दौरा करें, ताकि वे प्रजा को धर्म तथा कार्यों की शिक्षा दे सकें। माता–पिता की आज्ञा मानना, मित्रों, सम्बन्धियों, ब्राह्मणों एवं श्रमणों के प्रति उदार भाव रखना, जीवों की हत्या न करना, अल्प व्यय और अल्प संचय अच्छी बात है।

चौथा लेख इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी के धर्म आचरण से भेरी घोष, धम्म घोष में बदल गया। प्रजा में धम्म की शिक्षा द्वारा जीवित प्राणियों के हत्या का त्याग, सम्बन्धियों, ब्राह्मणों व श्रमणों का आदर, माता–पिता का आज्ञा पालन इतना बढ़ गया है, जितना पहले कई सौ वर्षों तक नहीं हुआ।

पांचवां लेख इस लेख में उल्लेखित है कि प्रियदर्शी ने अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष में **धम्महामात्र** नामक अधिकारियों की नियुक्ति की, जो धम्म के प्रचार तथा जनता के कल्याण व सुख के लिए कार्य करते थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

छठां लेख **चुस्त प्रशासन** हेतु इस लेख में अशोक कहता है कि हर समय, चाहे मैं भोजन करता रहूं या अन्त:पुर में रहूं या शयनकक्ष में, चाहे बाग में रहूं या सवारी पर। सब जगह प्रतिवेदक मुझे प्रजा के हाल से परिचित रखें।

सातवां लेख इसमें अशोक कहता है – सभी सम्प्रदाय के लोग सब जगह निवास करें, सभी धर्म संयम व चित्त की शुद्धि चाहते हैं।

आठवां लेख इसमें उल्लेखित है कि अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष में **आखेटक यात्राओं की जगह धम्म यात्रा** का प्रारम्भ **बोध गया** से किया।

नवां लेख इसमें अशोक कहता है कि लोग विविध **मंगलाचार** करते हैं, लेकिन उनका फल अल्प होता है, जबकि धम्म रूपी मंगलाचार अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें दासों एवं सेवकों के प्रति शिष्ट व्यवहार, गुरूजनों का आदर, प्राणियों के प्रति संयमपूर्ण व्यवहार और ब्राह्मणों व श्रमणों को दान देना आदि शामिल है।

दसवां लेख इसमें अशोक ने **यश और कीर्ति की जगह धम्म का पालन** करने पर बल दिया है।

ग्यारहवां लेख इसमें अशोक कहता है कि धम्म जैसा कोई दान नहीं, धम्म जैसी कोई प्रशंसा नहीं, धम्म जैसा कोई बंटवारा नहीं और धम्म जैसी कोई मित्रता नहीं।

बारहवां लेख इसमें अशोक **धार्मिक सहिष्णुता व धम्मसार पर बल** देते हुए कहता है कि सभी धम्मों का सार संयम है, लोग अपने सम्प्रदाय की प्रशंसा और दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा न करें।

तैरहवां लेख इसमें उल्लेखित है कि देवताओं के प्रिय राजा प्रियदर्शी ने अपने राज्याभिषेक के **9वें वर्ष कलिंग पर विजय** प्राप्त की, क्योंकि व्यापारिक दृष्टिकोण से दक्षिण की ओर जाने वाले सभी मार्ग यहीं से होकर जाते थे। किन्तु यहां हुई हिंसा से उसका मन द्रवित हो उठा तथा उसने भेरीघोष (युद्ध विजय) की जगह धम्मघोष (धम्म विजय) की नीति अपनाई।

अशोक ने अपने राज्य में तथा 600 योजना दूर तक अन्य सीमांत प्रदेशों में धम्म का प्रचार किया। धम्म का प्रचार दक्षिण में **चोल, पाण्ड्य, सातियपुत्र, केरलपुत्र** (चेर) व **ताम्रपर्णी** प्रदेशों में तथा **यवन** (सीरिया) के राजा **अन्तियोक** (एण्टियोकस), **मिस्र** के राजा **तुलामाया** (टोल्मी द्वितीय फिलाडेल्फस), **मकदूनिया** के राजा **अंतेकिन** (एण्टिगोनस गोनेटस), **साइरीन** के राजा **मक** (मगस) व **एपिरस** के राजा **आलिक्य सुंदर** (अलेक्जेण्डर) के यहां भी किया।

इसी तरह अशोक के राज्य में यवनों (ग्रीक), कम्बोजों, नाभकों, नाभपंक्तियों, भोजों, पितनिकों, आन्ध्रों व पारिन्दों में सब जगह लोग धम्म का पालन करते थे।

चौदहवां लेख इसमें उल्लेखित है कि कई बार लापरवाही या लिपिकार की भूल से लेखों में कुछ गलतियां हो जाती हैं।

➢ धौली तथा जौगढ़ के शिलालेखों पर 11वें, 12वें तथा 13वें शिलालेख उत्कीर्ण नहीं किए गए हैं। उनके स्थान पर दो अन्य लेख खुदे हुए हैं, जिन्हें पृथक कलिंग लेख कहा गया है।

प्रथम पृथक लेख इसमें अशोक कहता है कि **सारी प्रजा मेरी संतान है**। अशोक ने कलिंग के समीप के महामात्यों तथा नगर के न्याय अधिकारियों को **निष्पक्ष न्याय** करने को कहा है। अशोक कहता है कि मनुष्यों को कभी भी अकारण कैद या यातना न दी जाए। मैं निष्पक्ष न्याय हेतु सभी प्रांतों में **प्रति पांचवें वर्ष (उज्जैन व तक्षशिला में प्रति तीसरे वर्ष)** महामात्य नामक अधिकारी भेजूंगा।

द्वितीय पृथक लेख इसमें भी अशोक कहता है कि **सारी प्रजा मेरी संतान है**।

- **लघु शिलालेख**

लघु शिलालेख में अशोक के **व्यक्तिगत जीवन की जानकारी** मिलती है। ये निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त हुए हैं –

1) रूपनाथ (जबलपुर)। **2)** गुर्जरा (दतिया)। **3)** सारोमारो (शहडोल)। **4)** पनगुडरिया (सिहोर)।

अन्य महत्वपूर्ण लघु शिलालेख

1) **मास्की अभिलेख (कर्नाटक)** – इसमें अशोक ने स्वयं को **बुद्ध शाक्य** कहा है। इसी अभिलेख में उसका नाम **अशोक** मिलता है। इसके अतिरिक्त **नेत्तूर, उडेगोलम्, सन्नाती** (सभी कर्नाटक) तथा **गुर्जरा** (दतिया) से प्राप्त अभिलेखों में अशोक नाम मिलता है।

2) **भाब्रू/वैराट अभिलेख (राजस्थान)** – इसमें अशोक ने स्वयं को **मगधाधिराज** कहा है तथा बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न** (बुद्ध, धम्म व संघ) के प्रति आस्था प्रकट की है।

3) **एर्रगुडि (आन्ध्र प्रदेश)** – इस अभिलेख में लेखन शैली अन्य अभिलेखों के विपरीत बाएं से दाएं एवं दाएं से बाएं (बूस्ट्रोफेन) है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ स्तम्भ लेख

इसमें अशोककालीन प्रशासन तथा धम्म से संबंधित बातों का उल्लेख है। इसे भी दो वर्गों में बांटा जाता है –

◆ वृहद्स्तम्भ लेख

इन लेखों की संख्या 7 है, जो 6 भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं –

1) **दिल्ली-मेरठ** – यह पहले मेरठ में था, जिसे बाद में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया।

2) **दिल्ली-टोपरा** – यह पहले हरियाणा के टोपरा में था, जिसे बाद में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया। यह एक मात्र ऐसा स्तम्भ लेख है, जिस पर अशोक के सातों स्तम्भलेख उत्कीर्ण हैं, जबकि शेष स्थानों पर केवल 6 लेख ही उत्कीर्ण मिलते हैं।

3) **लौरिया-अरराज (बिहार)।**

4) **लौरिया-नन्दनगढ़ (बिहार)।**

5) **रामपुरवा (बिहार)।**

6) **कौशाम्बी/प्रयाग स्तम्भ लेख (उत्तर प्रदेश)** – इसमें अशोक की रानी **कारूवाकी** तथा पुत्र **तीवर** का का उल्लेख है। इसे **रानी का अभिलेख** भी कहा जाता है। यह पहले कौशम्बी में था, जिसे अकबर के शासनकाल में जहांगीर द्वारा इलाहाबाद के किले में रखा गया।

◆ लघु स्तम्भ लेख

लघु स्तम्भ लेखों पर अशोक की राजघोषणाएं खुदी हैं। ये निम्नलिखित स्थानों से मिलते हैं-

1) **सांची लघुस्तम्भ लेख (रायसेन, मध्य प्रदेश)** – इसमें अशोक अपने **महामात्रों को संघ भेद रोकने का आदेश** देता है।

2) **सारनाथ लघु स्तम्भ लेख (उत्तर प्रदेश)** – इसमें भी अशोक अपने **महामात्रों को संघ भेद रोकने का आदेश** देता है।

3) **रूम्मिनदेई स्तम्भ लेख (नेपाल)** – इस अभिलेख से पता चलता है कि अशोक अपने राज्याभिषेक के **20वें वर्ष** में रूम्मिनदेई (लुम्बिनी) आया और उसने यहां धार्मिक कर **बलि** को **समाप्त** कर दिया तथा **भाग** को घटाकर **1/8** कर दिया।

4) **निगालिसागर स्तम्भ लेख (नेपाल)** – इस अभिलेख से पता चलता है कि अशोक अपने राज्याभिषेक के **12वें वर्ष** निगालिसागर आया तथा यहां **कनकमुनि के स्तूप का संवर्द्धन** किया।

❐ गुहा लेख

गुहा लेखों की **भाषा प्राकृत** एवं **लिपि ब्राह्मी** है। अशोक ने बिहार स्थित **बाराबर की पहाड़ी** में **आजीवक सम्प्रदाय** के लिए **सुदामा गुफा, कर्ण चौपार गुफा, लोमऋषि गुफा तथा विश्व झोपड़ी गुफा** का निर्माण करवाया।

अशोक के पौत्र **दशरथ** ने भी बिहार स्थित **नागार्जुनी पहाड़ी** में **आजीवक सम्प्रदाय** के लिए **गोपी गुफा**, **वडथिका गुफा तथा वपियका गुफा** का निर्माण करवाया।

❐ मौर्यकालीन अन्य अभिलेख

1) **महास्थान अभिलेख (पश्चिम बंगाल)** – मौर्य काल में महास्थान क्षेत्र पुण्ड्रनगर क्षेत्र कहलाता था। इस अभिलेख में इस क्षेत्र में महामात्यों द्वारा **अकाल** के समय लोगों की सहायता हेतु **अनाज वितरण** की व्यवस्था का वर्णन है।

2) **सोहगौरा ताम्रलेख (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)** – इसमें भी **अकाल** के समय राज्य द्वारा **अनाज वितरण** की व्यवस्था का वर्णन है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.-298 ई. पू.)

मौर्य साम्राज्य का **संस्थापक** चन्द्रगुप्त मौर्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य को **भारत का प्रथम सम्राट** कहा जाता है।

- **चन्द्रगुप्त मौर्य के विभिन्न नाम**

यूनानी ग्रंथों में चन्द्रगुप्त मौर्य के 3 नामों का उल्लेख मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य को स्ट्रैबो, एरियन व जस्टिन ने **सैन्ड्रोकोट्स**, एप्पियानस व प्लूटार्क ने **एन्ड्रोकोट्स** तथा नियार्कस ने **सैन्ड्रोकोप्ट्स** कहा है। सर्वप्रथम 1793 ई. में **विलियम जोन्स** ने बताया कि ये तीनों नाम चन्द्रगुप्त मौर्य के ही हैं।

- **प्रारम्भिक जीवन**

समकालीन स्रोतों के अनुसार अन्तिम नन्द शासक धननन्द द्वारा अपमानित किए जाने पर, चाणक्य ने उसे समूल नष्ट करने का प्रण किया। संयोगवंश विंध्याचल के जंगलों में उसकी भेंट **राजकीलम्** नामक खेल-खेलते हुए एक बालक से हुई, उससे प्रभावित होकर चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को 1000 कार्षापण में खरीद लिया तथा उसे **तक्षशिला** ले जाकर 7-8 वर्षों तक विविध कलाओं की शिक्षा दी। शिक्षा-दीक्षा के पश्चात् चाणक्य की कूटनीति और चन्द्रगुप्त के रण कौशल द्वारा नन्द वंश के अन्तिम राजा धननन्द का उन्मूलन किया गया।

- **पश्चिमोत्तर भारत व मगध विजय**

कौटिल्य की प्रेरणा से चन्द्रगुप्त मौर्य ने सर्वप्रथम मगध राज्य पर आक्रमण किया, परन्तु पराजित हुआ। इसके उपरान्त कौटिल्य व चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तर-पश्चिम राज्यों को यूनानी क्षत्रपों से जीता तद्पुरान्त पुनः मगध पर आक्रमण कर धनानन्द के सेनापति **भद्दसाल** को पराजित किया। मुद्राराक्षस व परिशिष्टपर्वन् में उल्लेखित है कि मगध को विजित करने में चन्द्रगुप्त मौर्य ने **पर्वतक** नामक राजा से सहायता ली थी।

- **सेल्यूकस से युद्ध (305 ई. पू. -304 ई. पू.)**

सिकंदर की मृत्यु के पश्चात् सेल्यूकस बेबीलोन व सीरिया के प्रान्त का राजा बना। बैक्ट्रिया विजय के बाद उसने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया, किन्तु वह चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित हुआ। 304 ई. पू - 303 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्युकस के मध्य संधि हो गई। इस संधि के फलस्वरूप सेल्यूकस ने अपनी पुत्री **हेलेना** का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दिया। इस वैवाहिक सम्बंध का विस्तृत उल्लेख केवल एप्पियानस ने किया है। प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्यूकस को **500 हाथी** उपहार में दिए। सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य को दहेज में 4 राज्य प्रदान किए -

1) एरिया (हेरात)। **2) अराकोशिया** (कंधार)। **3) जेड्रोशिया** (मकरान तट)। **4) पेरीपेनिषदाई** (काबुल)।

सेल्यूकस ने अपने एक राजदूत **मेगास्थनीज** को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा।

- **सम्पूर्ण भारत की विजय**

प्लूटार्क के अनुसार इस संधि के बाद चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर **जम्बू द्वीप** (भारत) को रौंद डाला। चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में मैसूर तक तथा पश्चिमी में ईरान की सीमा में स्थित हिन्दुकुश पर्वत से पूरब में बंगाल तक विस्तृत था।

जैन ग्रंथ राजावली कथा में उल्लेख मिलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र **सिंहसेन** को सिंहासन सौंपकर **चन्द्रगिरी पर्वत** कर्नाटक चला गया और वहीं तपस्या करके **संलेखना पद्धति** से अपनी जीवनलीला समाप्त कर दी।

बिन्दुसार (298 ई. पू.-273 ई. पू.)

यूनानी लेखकों ने बिन्दुसार को **अमित्रचेट्स/अमित्रघात** कहा है, जिसका अर्थ है शत्रुओं का नाश करने वाला। इसका एक अन्य नाम **सिंहसेन** भी प्राप्त होता है। परिशिष्टपर्वन् में बिन्दुसार की माता का नाम **दुर्धरा** मिलता है।

बिन्दुसार के समय में **तक्षशिला** में वहां के अमात्यों के विरोध में एक **विद्रोह** हुआ, जिसे दबाने हेतु **मालवा या उज्जैन के प्रशासक अशोक** को भेजा गया। अशोक ने इस विद्रोह को शांत कर दिया।

बिन्दुसार के दरबार में **सीरिया** के शासक **एण्टियोकस प्रथम** ने **डाइमेकस** नामक राजदूत को भेजा। बिन्दुसार ने एक पत्र लिखकर एण्टियोकस से 3 वस्तुएं - अंगूरी मदिरा, अंजीर व दार्शनिक की मांग की। एण्टियोकस ने दार्शनिक को छोड़कर अन्य वस्तुओं को बिन्दुसार के पास भेजा।

बिन्दुसार के दरबार में **मिस्र** के शासक **टॉल्मी द्वितीय फिलाडेल्फस** ने भी **डायनोसिस** नामक राजदूत को भेजा।

बिन्दुसार धर्म सहिष्णु था तथा **आजीवक सम्प्रदाय** के **पिंगलवत्स** से उसके मधुर सम्बन्ध थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

अशोक (273 ई. पू. - 232 ई. पू.)

समकालीन स्रोतों में अशोक की माता के अनेक नाम प्राप्त होते हैं, जिनमें से एक प्रमुख नाम सुभद्रांगी भी है। उसी प्रकार उसकी पत्नी कारूवाकी, पुत्र तीवर, कुणाल व महेन्द्र, पुत्री संघमित्रा व चारूमति का भी उल्लेख मिलता है। कल्हण की राजतरगिणी में अशोक के एक अन्य पुत्र का नाम जालौक मिलता है। किन्तु प्रयाग अभिलेख में अशोक पत्नि **कारूवाकी** व पुत्र **तीवर** का ही उल्लेख है।

- **राज्यभिषेक (269 ई. पू.)**

अशोक 273 ई. पू. में गद्दी पर बैठा, किन्तु उसका राज्याभिषेक 4 वर्ष बाद 269 ई. पू. में ही हो सका। बौद्ध ग्रंथों महावंश के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या करके गद्दी प्राप्त की। बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि **राधागुप्त** की सहायता से अशोक ने अपने बड़े एवं सौतेले भाई **सुसीम** (सुमन) को हटाकर गद्दी प्राप्त की। परन्तु ये बातें पूर्णत: सत्य प्रतीत नहीं होती, क्योंकि अशोक के पांचवें शिलालेख में उसके जीवित भाइयों एवं परिवार का उल्लेख मिलता है।

- **कलिंग विजय (261 ई. पू.)**

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 8 वर्ष बाद अर्थात् - 9वें वर्ष में कलिंग की विजय की। इसका उल्लेख उसके **13वें शिलालेख** मिलता है। डॉ. हेमचन्द्र राय चौधरी के अनुसार मगध का सम्राट बनने के बाद यह अशोक का प्रथम तथा आखिरी युद्ध था।

- **अन्य विजय**

अशोक ने **खस** एवं **नेपाल** की भी विजय की। खस की पहचान संदिग्ध है। राजतरंगिणी में पता चलता है कि अशोक ने कश्मीर में **श्रीनगर** तथा नेपाल में **देवपत्तन** नामक नगर बसाया।

- **अशोक का धर्म**

अशोक पहले ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। **कल्हण** की **राजतरंगिणी** के अनुसार वह पहले **शैव** उपासक था, किन्तु एक दिन उसने अपने बड़े भाई **सुमन** के पुत्र **निग्रोथ** को भिक्षा के लिए जाते हुए देखा और उससे बहुत प्रभावित हुआ। अशोक ने निग्रोथ के प्रवचन को सुनकर बौद्ध धर्म अपना लिया। बाद में वह **मोग्गलिपुत्त तिस्स** के प्रभाव में आ गया। इसके विपरीत उत्तर भारत की अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक को बौद्ध धर्म में **उपगुप्त** ने दीक्षित किया। इस समय तक अशोक ने साधारण रूप से बौद्ध धर्म स्वीकार किया था, किन्तु कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने विधिवत बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु उसने **10वें वर्ष बोध गया**, **12वें वर्ष निगालि सागर** एवं **20वें वर्ष लुम्बिनी** की यात्रा की। उसी प्रकार अशोक ने **भाब्रु अभिलेख** में बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न** - बुद्ध, धम्म व संघ **के प्रति आस्था** भी प्रकट की है।

इसके बावजूद भी अशोक को **बौद्ध भिक्षु नहीं**, बल्कि **बौद्ध उपासक** ही कहा जा सकता है, क्योंकि उसने कभी-भी गृह त्याग नहीं किया। उसने धम्म के जिन गुणों का निर्देश किया है, वे **दीघनिकाय** के **सिंगालोवाद सुत्त** में प्राप्त होते हैं। अशोक ने धम्म पालन से प्राप्त होने वाले स्वर्गीय सुखों का उल्लेख **विमानवत्थु** नामक पालि ग्रंथ में किया है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि **अशोक** यद्यपि **व्यक्तिगत रूप से बौद्ध उपासक** था, **किन्तु उसका धर्म लोककल्याण तथा नैतिकता पर आधारित** था। अशोक ने अपने **दूसरे** तथा **सातवें स्तम्भ लेख** में **धम्म की व्याख्या** इस प्रकार की है कि 'धम्म - कल्याणकारी कार्य करना, पाप रहित होना, साधुता, मृदुता, मधुरता, दया, दान तथा सुचिता है।' अशोक के अनुसार जीव हत्या न करना, माता-पिता व बड़ों की आज्ञा मानना, गुरूजनों के प्रति आदर, मित्र, संबंधियों, ब्राह्मणों के प्रति दानशीलता, दासों, भृत्यों के प्रति उचित व्यवहार ही धर्म है। अशोक ने अपने **12वें शिलालेख** में **धार्मिक सहिष्णुता तथा धम्म की सारवृद्धि पर जोर** दिया है।

- **धम्म का प्रचार**

अशोक ने धम्म प्रचार हेतु युक्त, रज्जुक व प्रादेशिक नामक अधिकारी नियुक्त किए। साथ ही अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष **धम्ममहामात्र** नामक अधिकारी की नियुक्ति की। उसने धम्म के प्रचार हेतु कई देशों में धर्म प्रचारक भेजे थे, जिनका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ महावंश में मिलता है।

धर्म प्रचारक	देश
महेन्द्र व संघमित्रा	श्रीलंका
मज्झिम	हिमालय
मज्झान्तिक	कश्मीर व गान्धार
रक्षित	बनवासी (कर्नाटक)
महारक्षित	यूनान
धर्मरक्षित	अपरान्तक
महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
महादेव	महिषमण्डल (मैसूर)
सोना व उत्तरा	सुवर्ण भूमि

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

मौर्यकालीन प्रशासन

❒ केन्द्रीय प्रशासन

यह भारत की **प्रथम केन्द्रीय प्रशासन प्रणाली** है। प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजा होता था। वह कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका का प्रमुख था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा की परिषद् (मंत्रिपरिषद्) का उल्लेख है। मंत्रिपरिषद् के सदस्यों का चुनाव अमात्यों में से **उपधा परीक्षण** के बाद होता था। मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को 12,000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। अर्थशास्त्र में मंत्रिण: का भी उल्लेख है। इसमें कुछ अतिमहत्वपूर्ण मंत्री होते थे। मंत्रिण: में सम्भवत: प्रधानमंत्री, पुरोहित, सेनापति, सन्निधाता और युवराज सम्मिलित थे। इन्हें 48,000 पण वार्षिक वेतन मिलता था।

◆ तीर्थ

अर्थशास्त्र में **उल्लेखित 18 तीर्थ** निम्नलिखित **हैं** –

1) **प्रधानमंत्री** – चन्द्रगुप्त मौर्य के समय कौटिल्य, बिन्दुसार के समय खल्वाटक और अशोक के समय राधागुप्त प्रधानमंत्री थे।
2) **समाहर्ता** – राजस्व विभाग अधिकारी।
3) **सन्निधाता** – कोषाध्यक्ष।
4) **सेनापति** –युद्ध मंत्री।
5) **युवराज** –राजा का उत्तराधिकारी।
6) **प्रदेष्टा** –फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश।
7) **व्यवहारिक** –दीवानी न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश।
8) **नायक** –सेना का संचालक।
9) **कर्मान्तिक** –उद्योग-धन्धों का प्रधान निरीक्षक।
10) **मंत्रिपरिषदाध्यक्ष** –मंत्रिपरिषद का अध्यक्ष।
11) **दंडपाल** –सेना की सामग्री जुटाने वाला प्रधान अधिकारी।
12) **अन्तपाल** –सीमावर्त्ती दुर्गों का रक्षक।
13) **दुर्गपाल** –भीतरी दुर्गों का रक्षक।
14) **नागरक** –नगर का प्रमुख अधिकारी।
15) **आटविक** –वन विभाग का प्रधान।
16) **प्रशास्ता** –राजकीय आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला प्रधान अधिकारी।
17) **दौवारिक** –राजमहलों की देखरेख करने वाला।
18) **अंतर्वंशिक** –सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान।

◆ अध्यक्ष

अर्थशास्त्र में **26 अध्यक्षों** का उल्लेख है। ये विभिन्न विभागों के अध्यक्ष होते थे और मंत्रियों के निरीक्षण में काम करते थे। सम्भवत: इन अध्यक्षों को ही मेगास्थनीज में **मजिस्ट्रेट** कहा है, जो निम्नलिखित हैं –

1) **पण्याध्यक्ष** – वाणिज्य विभाग का अध्यक्ष।
2) **सुराध्यक्ष** – आबकारी विभाग का अध्यक्ष।
3) **सूनाध्यक्ष** – बूचड़खाने का अध्यक्ष।
4) **गणिकाध्यक्ष** – गणिकाओं का अध्यक्ष।
5) **सीताध्यक्ष** – राजकीय कृषि विभाग का अध्यक्ष।
6) **अकराध्यक्ष** – खान विभाग का अध्यक्ष।
7) **कोष्ठगाराध्यक्ष** – कोष्ठगार का अध्यक्ष।
8) **कुप्याध्यक्ष** – वनों का अध्यक्ष।
9) **आयुधगाराध्यक्ष** – आयुधगार का अध्यक्ष।
10) **शुल्काध्यक्ष** – व्यापार कर वसूली करने वालों का अध्यक्ष।
11) **सूत्राध्यक्ष** – कताई-बुनाई विभाग का अध्यक्ष।
12) **लक्षणाध्यक्ष** – छापेखाने का अध्यक्ष। मुद्रा जारी करने का प्रमुख अधिकारी। हर टकसाल **सौवर्णिक** नामक अधिकारी के अधीन होते थे। सिक्कों की जाँच करने वाला अधिकारी **रूपदर्शक** था।
13) **लोहाध्यक्ष** – धातु विभाग का अध्यक्ष।
14) **विविताध्यक्ष** – चारागाहों का अध्यक्ष।
15) **गो-अध्यक्ष** – पशुधन विभाग का अध्यक्ष।
16) **मुद्राध्यक्ष** – पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष।
17) **नवाध्यक्ष** – जहाजरानी विभाग का अध्यक्ष।
18) **पत्तनाध्यक्ष** – बन्दरगाहों का अध्यक्ष।
19) **संस्थाध्यक्ष** – व्यापारिक मार्गों का अध्यक्ष।
20) **देवताध्यक्ष** – धार्मिक संस्थाओं का अध्यक्ष।
21) **पौतवाध्यक्ष** –माप-तौल का अध्यक्ष।
22) **मापाध्यक्ष** – दूरी और समय से सम्बन्धित साधनों का अध्यक्ष।
23) **अश्वाध्यक्ष** – घोड़ों का अध्यक्ष।
24) **हस्त्याध्यक्ष** – हाथियों का अध्यक्ष।
25) **सुवर्णाध्यक्ष** – सोने का अध्यक्ष।
26) **अक्षपटलाध्यक्ष** –महालेखाकार।

इन अध्यक्षों को 1000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। प्रथम श्रेणी के अमात्य मंत्रिण: के सदस्य, द्वितीय श्रेणी के अमात्य मंत्रिपरिषद् के सदस्य तथा तृतीय श्रेणी के अमात्य विभागीय अध्यक्ष होते थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

❒ प्रान्तीय प्रशासन

केन्द्र प्रान्तों में बंटा था। प्रान्तों का प्रशासन वायसराय रूपी अधिकारी द्वारा होता था। ये अधिकारी राजवंश के होते थे। अशोक के अभिलेखों में उन्हें **कुमार या आर्यपुत्र** कहा गया है। केन्द्रीय शासन की ही भाँति प्रान्तीय शासन में भी मंत्रिपरिषद् होती थी। प्रान्तीय मंत्रिपरिषद् का केन्द्र से सीधा सम्पर्क होता था। **अशोक** के समय **5 प्रान्तों** का उल्लेख मिलता है।

प्रान्त	राजधानी
उत्तरापथ	तक्षशिला
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
अवन्ति राष्ट्र	उज्जयिनी
प्राची (पूर्वी प्रदेश)	पाटलिपुत्र
कलिंग	तोसली

❒ मण्डल व जिला प्रशासन

प्रान्तों का विभाजन **मण्डल** में होता था, जिन पर महामात्य नामक अधिकारी होते थे। मण्डलों के अधिकारियों के नाम प्रदेष्टा या **प्रादेशिक** भी मिलते हैं। मंडल का विभाजन **जिला** में होता था, जिन्हें **आहार या विषय** भी कहते थे। यह **विषयपति / स्थानिक** होता था। मेगास्थनीज ने स्थानिक को **एग्रोनोमोई** कहा है, जो सड़क निर्माण का भी अधिकारी था। स्थानिक **समाहार्ता** के अधीन होता था। स्थानिक के अधीन **गोप** होते थे, जो पूरे 10 गांवों के ऊपर शासन करते थे। जिले और ग्राम के बीच दो प्रमुख अधिकारी स्थानिक और गोप थे। स्थानिक ग्रामों में भू-राजस्व इकट्ठा करता था, जबकि उसे लिखने का कार्य गोप का था। इस प्रकार स्थानिक की स्थिति गोप से अधिक महत्वपूर्ण थी। प्रान्तीय प्रशासन और उसके विभाजन को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है –

राजधानियां	मंडल
सुवर्णगिरी के अंतर्गत	इसिला में
पाटलिपुत्र के अंतर्गत	कौशाम्बी में
तोसली के अंतर्गत	समापा में
सौराष्ट्र के अंतर्गत	गिरिनार में

केन्द्र ⟶ **प्रांत** (प्रमुख अधिकारी कुमार या आर्यपुत्र) ⟶ **मण्डल / कमिश्नरी** (प्रमुख अधिकारी प्रदेष्टा या प्रादेशिक)

↓

द्रोणमुख (400 ग्रामों का समूह) ⟵ **स्थानीय** (800 ग्रामों का समूह) ⟵ **आहार/विषय/जिला** (प्रमुख अधिकारी विषयपति या स्थानिक)

↓

खार्वटिक (200 ग्रामों का समूह) ⟶ **संग्रहण** (10 ग्रामों का समूह इसका प्रमुख अधिकारी गोप) ⟶ **ग्राम** (प्रमुख अधिकारी ग्रामिणी)

❒ नगर प्रशासन

मेगास्थनीज की इण्डिका से ही पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन का वर्णन मिलता है। उसने नगर के प्रमुख अधिकारी को **एस्ट्रोनोमाई** कहा है। मेगास्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 30 सदस्यों के एक समूह द्वारा होता था। इसकी कुल 6 समितियां होती थीं तथा प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे, जो निम्नलिखित हैं –

1) शिल्प कला समिति। **2)** विदेश समिति। **3)** जनसंख्या समिति।
4) उद्योग व्यापार समिति। **5)** वस्तु निरीक्षक समिति। **6)** कर निरीक्षक समिति।

❒ गुप्तचर व्यवस्था

मौर्यकाल में गुप्तचरों का महत्वपूर्ण स्थान था। गुप्तचरों का **गूढ़पुरूष** तथा इसके प्रमुख अधिकारी को **सर्पमहामात्य** कहा गया है। अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन मिलता है। जो निम्नलिखित हैं –

1) संस्था – ऐसे गुप्तचर जो संस्थाओं में संगठित होकर कार्य करते थे। **2) संचरा** – इसमें भ्रमणशील गुप्तचर आते थे।
कुछ ऐसे भी गुप्तचर होते थे जो अन्य देशों में नौकरी कर लेते थे और सूचनाएं भेजते थे, जिन्हें **उभयवेतन** कहा जाता था।

❒ न्याय प्रशासन

मौर्यकाल में सर्वोच्च न्यायालय राजा का न्यायालय था, जबकि सबसे छोटा न्यायालय ग्राम न्यायालय था। इसमें ग्रामिक, ग्राम के वृद्धजनों के साथ मिलकर न्याय करते थे। मौर्यकाल में **कठोर दण्ड व्यवस्था** थी। मृत्युदण्ड, अंग विच्छेद, कारावास व जुर्माना जैसे दण्ड प्रचलित थे। मृत्युदण्ड के पूर्व तीन दिन की मुहलत दी जाती थी।

1) **धर्मस्थीय (दीवानी) न्यायालय** – इसके न्यायाधीश को **धर्मस्थ या व्यवहारिक** कहा जाता था।
2) **कण्टकशोधन (फौजदारी) न्यायालय** – इसके न्यायाधीश को **प्रदेष्टा** कहा जाता था। अशोक के समय जनपद का मुख्य न्यायाधीश **रज्जुक** नामक अधिकारी होता था।
   - **रज्जुक** – जनपद का प्रमुख अधिकारी था। इसे अशोक ने अपने राज्याभिषेक के **26वें वर्ष में न्यायिक अधिकार** भी प्रदान कर दिया। इसे राजस्व अधिकार भी प्राप्त था।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❒ राजस्व प्रशासन

कौटिल्य ने राजस्व के सात स्रोतों का वर्णन किया है, जो निम्नलिखित हैं –

1) दुर्ग – नगर से प्राप्त आय (कर)।
2) राष्ट्र – जनपदों, ग्रामों से प्राप्त आय।
3) खनि – खानों से प्राप्त आय।
4) सेतु – फल-फूल एवं शाक-सब्जियों से प्राप्त आय।
5) वन – जंगलों से प्राप्त आय।
6) ब्रज – पशुओं से प्राप्त आय।
7) वणिक पथ – स्थल मार्ग एवं जल मार्ग से प्राप्त आय।

◆ भूमि से प्राप्त होने वाली आय

1) **सीता** – राज्यभूमि पर खेती से प्राप्त होने वाली आय सीता कहलाती थी।
2) **भाग** – स्वतंत्र रूप से खेती करने वाले किसानों से प्राप्त आय। मौर्यकाल में इसकी मात्रा **1/6 से 1/4** भाग थी।

◆ मौर्यकालीन विभिन्न प्रकार के कर

प्रणय – संकट काल में प्रजा द्वारा वसूला जाने वाला कर।
विष्टि – निःशुल्क श्रम अर्थात् बेगार।
उत्संग – प्रजा द्वारा राजा को दिया जाने वाला उपहार।
बलि – एक प्रकार धार्मिक कर।
हिरण्य – यह कर अनाज के रूप में न लेकर नगद लिया जाता था।
रज्जु – भूमि की माप के समय लिया जाने वाला कर।
चोर रज्जू – चौकीदार कर।
विवीत – चारागाह कर।
शुल्क – आयात कर।
निर्यात कर – निर्यात कर को **निष्क्राम्य** कहा जाता था।
वर्तनी – सीमा पार करेन पर लिया जाने वाला कर।
गुल्मदेय – सैनिकों की फीस।
सेनाभक्त – किसी अभियान के दौरान सेना जिस गांव से गुजरती थी, उस गांव के लोग अनिवार्य रूप से सेना को रशद देते थे।

◆ राज्य नियंत्रित उद्योग

1) शराब उद्योग।
2) नमक उद्योग।
3) खान उद्योग।
4) हथियार उद्योग।
5) जहाजरानी उद्योग।

❒ सैन्य प्रशासन

प्लिनी नामक यूनानी लेखक के अनुसार चन्द्रगुप्त की सेना में 6 लाख पैदल सिपाही, 30 हजार घुड़सवार और 9 हजार रथ थे। एक-दूसरे स्रोत में कहा गया है कि मौर्यों के पास 8 हजार अश्वचलित रथ थे एवं एक नौसेना भी थी। **प्लूटार्क** ने लिखा है कि **चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर पूरे भारत को रौंद डाला।** जस्टिन ने भी इस तरह का वर्णन किया है। **जस्टिन** ने चन्द्रगुप्त की सेना को **डाकुओं का गिरोह** कहा है। मेगास्थनीज ने सैन्य प्रशासन का वर्णन किया है। उसके अनुसार सैनिकों के लिए एक पृथक् विभाग था, जिसमें कुल 30 सदस्य थे। ये पांच-पांच सदस्यों की छः समितियों में बंटे थे, जो निम्नलिखित हैं –

प्रथम समिति – जल-सेना की व्यवस्था करती थी।
दूसरी समिति – सामग्री, यातायात एवं रसद की व्यवस्था करती थी।
तीसरी समिति – पैदल सैनिकों की देख-रेख करती थी।
चौथी समिति – अश्वारोहियों के सेना की व्यवस्था करती थी।
पांचवी समिति – गज सेना की व्यवस्था करती थी।
छठीं समिति – रथों के सेना की व्यवस्था करती थी।

सेनापति युद्ध विभाग का प्रधान अधिकारी होता था, उसे 48,000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। युद्ध क्षेत्र में सेना का संचालन करने वाला अधिकारी **नायक** कहा जाता था। अर्थशास्त्र में **नवाध्यक्ष** नामक अधिकारी का उल्लेख हुआ है, जो युद्ध पोतों के अतिरिक्त व्यापारिक पोतों का भी अध्यक्ष था। **आयुधगाराध्यक्ष** नामक अधिकारी अस्त्र-शस्त्र, उनके रख-रखाव एवं सुरक्षा का प्रबन्ध करता था।

❒ सामाजिक जीवन

◆ वर्गीय विभाजन

मौर्यकालीन समाज चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र) में बंटा था। **कौटिल्य** के अनुसार शूद्र शिल्प, व्यापार, कृषि तथा पशुपालन भी कर सकते थे, वे सेना में भी भर्ती हो सकते थे। कौटिल्य ने अनेक वर्ण संकर जातियों का उल्लेख भी किया है। **मेगास्थनीज** ने भी भारतीय समाज का वर्गीकरण किया है, उसने **भारतीय समाज को 7 जातियों में विभक्त** बताया है, जो निम्नलिखित है –

1) दार्शनिक।
2) किसान।
3) अहीर / ग्वाले।
4) कारीगर / शिल्पी।
5) सैनिक।
6) निरीक्षक / गुप्तचर।
7) सभासद / शासक वर्ग।

मेगास्थनीज के अनुसार **भारत में दास नहीं** थे, जबकि कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का वर्णन किया है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **स्त्रियों की दशा**

स्त्रियों को **पुनर्विवाह, विधवा विवाह तथा नियोग की अनुमति** थी। जो विधवाएं विवाह नहीं करती थीं, उन्हें **छन्दवासिनी** कहा जाता था। फिर भी स्त्रियों की स्थिति को अधिक उन्नत नहीं कहा जा सकता। सम्भ्रांत घर की स्त्रियां प्राय: घर के अन्दर ही रहती थी, कौटिल्य ने ऐसी स्त्रियों को **अनिष्कासिनी** कहा है। **सती प्रथा** के स्पष्ट **साक्ष्य नहीं** मिलते, यद्यपि यूनानियों ने इसकी चर्चा की है। इस युग में वेश्याओं (गणिका) का भी उल्लेख मिलता है, स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियां **रूपजीवा** कहलाती थी। बहुत सी गणिकाएं गुप्तचरी का कार्य भी करती थी, इनके कार्यों का निरीक्षण **गणिकाध्यक्ष** करता था।

- **शिक्षा**

वर्णाश्रम धर्म के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। **तक्षशिला (सर्वश्रेष्ठ), उज्जैन एवं वाराणसी** शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे।

❐ आर्थिक जीवन

मौर्यकालीन अर्थ व्यवस्था **कृषि, पशुपालन और वाणिज्य व्यापार** पर आधारित थी। इनको सम्मिलित रूप से **वार्ता** कहा गया है।

- **कृषि**

अर्थ व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण योगदान कृषि क्षेत्र का था। अर्थशास्त्र में **धान** की फसल को **सबसे उत्तम** एवं **गन्ने** की फसल को **सबसे निकृष्ट** बताया गया है। राजकीय भूमि की व्यवस्था **सीताध्यक्ष** द्वारा होती थी और इससे होने वाली आय को कौटिल्य ने **सीता** कहा है। राज्य की ओर से सिंचाई का समूचित प्रबंध था, जिसे **सेतूबंध** कहा गया है।

- **उद्योग-धंधे**

इस समय का **प्रमुख उद्योग सूत कातने एवं बुनने** का था। उस समय **काशी, मालवा** जैसे क्षेत्र **सूती वस्त्रों** के लिए प्रसिद्ध थे। **काशी एवं पुण्ड्र** में **रेशमी कपड़े** भी बनते थे। **बंगाल** का **मलमल** विश्व विख्यात था। कौटिल्य ने चीनपट्ट का भी उल्लेख किया है। यह **रेशम चीन से आता था।** इस काल में खान उद्योग राज्य द्वारा नियंत्रित होता था। इसकी देखरेख के लिए **आकराध्यक्ष** की नियुक्ति की जाती थी। धातु, नमक, शराब, जहाजरानी, चमड़ा, औषधि, पत्थर तराशने व पॉलिश आदि का उद्योग प्रसिद्ध था।

- **व्यापार**

मौर्यकाल में व्यापार का सर्वोच्च अधिकारी **पण्याध्यक्ष** होता था। पण्याध्यक्ष के नियंत्रण में **संस्थाध्यक्ष** होता था, जो व्यापारिक गतिविधियों पर नजर रखता था। व्यापारिक कारवां के नेता को **सार्थवाह** कहा जाता था। इस समय का **सबसे बड़ा व प्राचीन बंदरगाह पश्चिमी तट पर भड़ौच या भृगुकच्छ** था। **पूर्वी तट का सबसे प्रसिद्ध बंदरगाह ताम्रलिप्ति या तामलुक** था। विदेश व्यापार भी उन्नत अवस्था में था, जो मुख्यत: पश्चिमी एशिया, मिश्र, चीन तथा श्रीलंका से होता था। चीन से रेशम प्राप्त होता था। ताम्रलिप्ति से मोती, नेपाल से चमड़ा, सीरिया से मदिरा तथा पश्चिम एशिया से घोड़ों का आयात होता था। भारत से मिस्र को हाथी दांत, कछुएं, सिपियां, मोती, नील, बहुमुल्य लकड़ी आदि का निर्यात होता था। देशज वस्तुओं पर 4 प्रतिशत तथा आयातित वस्तुओं पर 10 प्रतिशत बिक्री कर लिया जाता था। **मेगास्थनीज** के अनुसार **बिक्रीकर न देने वालों को मृत्युदण्ड** दे दिया जाता था। मौर्य युग में 4 प्रमुख मार्ग थे, जिनमें से सबसे प्रमुख मार्ग को **उत्तरापथ** कहा जाता था।

- **सिक्के**

मौर्यों की **राजकीय मुद्रा पण** थी, जो वस्तुत: **चांदी का सिक्का** था। अधिकारियों को वेतन आदि देने में इसी का प्रयोग होता था। इन्हें पंचमार्क सिक्के भी कहा जाता है। निष्क व सुवर्ण सोने का सिक्का, **पण**, रूप्यरूप, कार्षापण, धरण व शतमान चांदी का सिक्का तथा माषक व काकणि ताँबे का सिक्का होता था।

❐ मौर्यकालीन कला

- **स्तम्भ अभिलेख**

मौर्य कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भ अभिलेख हैं। ये स्तम्भ मथुरा व **चुनार** की पहाड़ियों से **लाल बलुवा पत्थर** लाकर बनाए गए हैं। ये स्तम्भ **एकाश्म** पत्थरों से बने हैं, जिन पर **चमकदार पॉलिश** भी की गई है। स्तम्भों का शैफ्ट शुंडाकार है। स्तम्भों के **शीर्ष पर पशुओं की आकृति** भी प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ - संकिशा स्तम्भ (हाथी शीर्ष), रामपुरवा स्तम्भ (वृषभ शीर्ष), लौरिया नन्दनगढ़ , रामपुरवा व सांची स्तम्भ (तीनों में सिंह शीर्ष)। **सारनाथ** स्तम्भ पर शीर्ष में **4 सिंह** बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त नीचे की ओर 4 पशु बैल, घोड़ा, हाथी एवं सिंह दौड़ती हुई मुद्रा में दर्शाए गए हैं। बीच-बीच में 4 चक्र बने हुए हैं, प्रत्येक **चक्र में 24 आरे** हैं। सारनाथ के शीर्ष स्तम्भ पर **32 आरे** वाला एक चक्र बना है, जो खण्डित अवस्था में है, इसे **धर्मचक्र प्रवर्तन** का प्रतीक माना जाता है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **स्तूप**

बौद्ध ग्रंथों में उल्लेखित हैं कि **अशोक ने 24,000 स्तूपों का निर्माण करवाया** था। इनमें से प्रमुख हैं –

1) **पिपरहवा स्थित स्तूप (नेपाल की तराई में स्थित)** – सर्वाधिक प्राचीन।

2) **साँची स्तूप (मध्य प्रदेश, जिला रायसेन)**– साँची में 3 स्तूपों का निर्माण हुआ है। प्रथम महास्तूप में भगवान बुद्ध के, द्वितीय में अशोककालीन धर्म प्रचारकों के तथा तृतीय में बुद्ध के दो शिष्यों सारिपुत्र तथा महामोद्गलायन के धातु अवशेष सुरक्षित हैं। **महास्तूप सभी स्तूपों में सबसे बड़ा है।** इसका निर्माण अशोक के समय ईंटों की सहायता से हुआ था तथा उसके चारों ओर लकड़ी के वेदिका बनी थी, परन्तु शुंग काल में उसे पत्थर की बना दी गई।

3) **भरहुत स्तूप (मध्य प्रदेश, जिला सतना)** – भरहुत स्तूप का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया था। इसकी खोज एलेक्जेन्डर कनिंघम ने की थी।

4) **सारनाथ का धर्मराजिका स्तूप** – इसका निर्माण मौर्योत्तर काल में हुआ।

- **चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद**

चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रासाद का साक्ष्य बिहार में **पाटलीपुत्र (पटना)** के समीप **बुलंदीबाग** एवं कुम्रहार में की गई खुदाई से प्राप्त हुआ है। इसे प्रकाश में लाने का श्रेय स्पूनर महोदय को है। यह राजप्रासाद पूर्णत: **लकड़ी से निर्मित** था। गुप्तकाल में भारत आए चीनी यात्री **फाह्यान** ने लिखा है कि पाटलीपुत्र का राजप्रासाद **देवताओं द्वारा निर्मित** था।

❐ मौर्य साम्राज्य का पतन

अशोक के बाद मौर्य उत्तराधिकारियों के कई नाम प्राप्त होते हैं, जैसे – **कुणाल, सम्प्रति** (जैन धर्म का उपासक), **दशरथ** (आजीवक धर्म का उपासक) तथा **वृहद्रथ**। इनमें से **वृहद्रथ मौर्य वंश का अंतिम शासक** था, उसके ब्राह्मण **सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में उसकी हत्या कर एक नए वंश शुंग वंश की नींव रखी।** वस्तुत: अशोक की 232 ई. पू. में मृत्यु के साथ ही साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी।

विद्वानों ने मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अनेक कारणों का उल्लेख किया है। जैसे – हरप्रसाद शास्त्री ने ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया, हेमचन्द्र रायचौधरी ने अशोक की अहिंसावादी नीति व दमनकारी शासन, डी. डी. कोशाम्बी ने वित्तीय संकट, रोमिला थापर ने अतिकेंद्रीयकृत शासन, निरंजन रायचौधरी ने विदेशी विचारों का अपनाया जाना को मौर्य साम्राज्य के पतन हेतु उत्तरदायी माना है। कुछ अन्य इतिहास कारों ने मौर्यों द्वारा उत्तर-पश्चिमी सीमा की उपेक्षा को उत्तरदायी माना है। भारत के विपरीत **चीन के राजा शीह हुआंग ती** ने सीथियनों, शको के हमले से अपने साम्राज्य की सुरक्षा हेतु **210 ई. पू. में चीन की महादीवार बनवाई** थी, परन्तु **मौर्य साम्राज्य के पतन का सबसे मान्य मत योग्य उत्तराधिकारियों का अभाव** है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

मौर्योत्तरकाल

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत का इतिहास दो भागों में बंट जाता है। एक तरफ मध्य एशिया से क्रमशः **इण्डो-ग्रीक, शक, पह्लव** व **कुषाण** शासकों के नेतृत्व में विदेशी आक्रमण हुए तथा इन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त व मध्यभारत के एक बड़े क्षेत्र पर अपना अधिकार कायम कर लिया। दूसरी तरफ भारतीय शासकों क्रमशः **शुंग, कण्व, आंध्र-सातवाहन, वाकाटक** आदि वंश के राजाओं ने भी अपने राज्य स्थापित किए। ये दोनों प्रवृत्तियां साथ-साथ हुई।

विदेशी शासक

मौर्यकाल के पतन के बाद भारत में मध्य एशिया से हिन्द-यवन/इण्डो-ग्रीक, शक/सीथियन, पह्लव/पार्थियन एवं कुषाणों ने आक्रमण किया तथा एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

❒ हिन्द-यवन/इण्डो-ग्रीक

मौर्योत्तरकाल में बैक्ट्रिया (अफगानिस्तान) के यवनों ने लगभग 183 ई. पू. में **डेमेट्रियस प्रथम** के नेतृत्व में आक्रमण कर पंजाब का एक बड़ा भाग जीत लिया तथा **साकल** को अपनी राजधानी बनाई। डेमेट्रियस ने भारतीय राजाओं की उपाधि धारण की और यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों वाले सिक्के चलाए।

इसी समय बैक्ट्रिया में **यूक्रेटाइड्स** ने अधिकार स्थापित कर लिया। फिर यूक्रेटाइड्स ने भी भारत पर आक्रमण कर **तक्षशिला** को अपनी राजधानी बनाई।

इस प्रकार भारत में यवन साम्राज्य दो कुलों में बंट गया - डेमेट्रियस एवं यूक्रेटाइड्स के वंश।

- **डेमेट्रियस वंश**

राजधानी - साकल (स्योलकोट)।

इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **मिनाण्डर** (165 ई. पू. - 145 ई. पू.) हुआ, जिसे बौद्ध साहित्य में **मिलिन्द** कहा गयाहै। मिनाण्डर के सिक्के **भड़ौंच** तथा उसका अभिलेख कौशाम्बी के पास **रेह** से प्राप्त हुआ है। बौद्ध ग्रंथ **मिलिन्दपन्हो** में मिनाण्डर के बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ वाद-विवाद के उपरांत बौद्ध धर्म का अनुयायी बनने की कथा है। इसकी राजधानी साकल शिक्षा व व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र थी।

- **यूक्रेटाइड्स वंश**

राजधानी - तक्षशिला।

इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **एण्टियालकिडास** था। इसने शुंग शासक **भागभद्र** के विदिशा स्थित दरबार में एक राजदूत **हेलियोडोरस** को भेजा, जिसने विदिशा में एक **गरूड़ स्तम्भ** स्थापित किया तथा उस पर **वासुदेव** का नाम अंकित करवाया। इसमें उल्लेखित **भागवत्** शब्द हेलियोजोरस के लिए प्रयुक्त हुआ है। इससे पता चलता है कि हेलियोडोरस ने स्वयं **भागवत् धर्म** ग्रहण किया था।

- **यूनानी सम्पर्क का प्रभाव**

1) **ज्योतिष** के क्षेत्र में भारतीयों ने यूनानियों से बहुत कुछ सीखा। सप्ताह का 7 दिनों में विभाजन एवं विभिन्न ग्रहों के नाम भी उनसे ही लिए गए। **नक्षत्रों** को देखकर भविष्य बताने की कला भी भारतीयों ने यूनानियों से ही सीखी।

3) **सिक्के** बनाने की कला में भी भारतीयों ने यूनानियों से बहुत कुछ सीखा। यूनानियों ने ही सर्वप्रथम सोने के लिखित सिक्के चलाए, जिन पर एक ओर राजाओं की तथा दूसरी ओर देवता या अन्य चिह्नों की आकृति होती थी। यूनानियों ने द्विभाषायुक्त सिक्के भी चलाए।

4) हिन्द-यवन सम्पर्क के कारण **हेलेनिस्टिक कला** का जन्म हुआ, जिसका आदर्श रूप गान्धार कला में दिखाई देता है।

5) संस्कृत नाटकों में पटाक्षेप के लिए **यवनिका** शब्द का प्रयोग होने लगा। पर्दा-प्रथा का प्रारम्भ यहीं से माना जाता है।

6) **धर्म और दर्शन** के क्षेत्र में यूनान भारत का ऋणी है। कई यूनानी राजाओं ने भारतीय धर्म को अपनाया। हेलियोडोरस नामक राजदूत ने भागवत् धर्म एवं मिनाण्डर ने बौद्ध धर्म अपना लिया। सम्भवतः **तपस्या और योग** की क्रियाएं यूनानियों ने भारतीयों से ही सीखी।

❒ शक/सीथियन

यूनानियों के बाद मध्य एशिया के शकों ने भारत पर आक्रमण किया। शकों की कुल 5 शाखाएं थीं, जिनमें से एक शाखा अफगानिस्तान में, जबकि 4 शाखाएं भारत में थीं। भारत के शक राजा अपने आप को **क्षत्रप** कहते थे।

- **तक्षशिला के शक**

इसका प्रथम शासक **माउस** था, जबकि अन्य महत्वपूर्ण शासक एजेज व एजेलिसेज हुए।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **मथुरा के शक**

इसका प्रथम शासक **राजुल/राजउल** था, जबकि अन्य महत्वपूर्ण शासक शोडास हुआ।

माना जाता है कि मथुरा के शक पहले मालवा क्षेत्र में रहते थे, जिन्हें 57 ई. पू. में **विक्रमादित्य** नामक शासक ने पराजित किया। इसके पश्चात् वे भागकर मथुरा आ गए। इसी विक्रमादित्य के नाम पर एक नवीन **संवत् विक्रम संवत्/मालव संवत् (57 ई. पू.)** की नींव पड़ी।

- **नासिक के शक**

इसका प्रथम शासक **भूमक** था, जबकि अन्य महत्वपूर्ण शासक **नहपान** हुआ। नासिक के शक शासक स्वयं को **क्षहरात** क्षत्रप कहते थे।

नहपान ने मालवा, गुजरात व महाराष्ट्र एक बहुत बड़े भाग पर अपना राज्य स्थापित किया। पेरिप्लस के अनुसार उसकी राजधानी **मिन्नगर** (भड़ौच व उज्जैन के बीच) थी। सातवाहन शासक **गौतमीपुत्र शातकर्णी** ने नहपान को पराजित कर मार डाला। **जोगलथम्बी** (जिला - नासिक) से प्राप्त बहुसंख्यक सिक्के गौतमीपुत्र शातकर्णी द्वारा पुनः अंकित किए गए। नहपान का दामाद सातवाहन शासक ऋषभदत्त या उषावदत्त था।

- **मालवा/उज्जैन के शक**

इसका प्रथम शासक **चष्टन** था, जबकि सबसे महत्वपूर्ण **रूद्रदामन** हुआ। उज्जैन के शक शासक स्वयं को **कार्दमक वंश** का कहते थे।

रूद्रदामन (130-150 ई.) के **जूनागढ़ अभिलेख (150 ई.)** से पता चलता है कि इस समय यहां का राज्यपाल **सुविशाख** था, जिसने **सुदर्शन झील** के बांध का पुनर्निर्माण करवाया। रुद्रदामन ने सातवाहन शासक **विशिष्ठपुत्र पुलुमावी** को 2 बार पराजित किया, किन्तु फिर दोनों के मध्य वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।

मालवा के शकों में **अन्तिम शक शासक रूद्रसिंह तृतीय** था, जिसे गुप्त शासक **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** ने मारकर पहली बार मालवा क्षेत्र में **व्याघ्र शैली के चांदी के सिक्के** चलवाए।

❐ पह्लव/पार्थियन

पार्थियन मध्य एशिया में ईरान से आये थे। भारत में इस वंश का प्रथम शासक **मिथ्रेडेट्स** था, जबकि सबसे महत्वपूर्ण शासक गोण्डोफर्नीज हुआ।

- **गोण्डोफर्नीज (20 ई. - 41 ई.)**

राजधानी - तक्षशिला।

गोण्डोफर्नीज के शासनकाल का **तख्तेबही अभिलेख** पेशावर जिले से प्राप्त हुआ है। इसके काल में **ईसाई संत सेंट थॉमस** भारत आए। बाद में वे दक्षिण चले गए, जहां तमिलनाडु में उन्हें मार डाला गया। इस प्रकार ईसाई धर्म भारत में **पहली सदी ई. में** आया।

❐ कुषाण

कुषाण मध्य एशिया में पश्चिमी **चीन** के **यूची जाति** के थे। लगभग 165 ई. पू. में पश्चिमी चीन से खदेड़े जाने के बाद उनकी एक शाखा अफगानिस्तान (बैक्ट्रिया) चली गई, जबकि दूसरी शाखा तिब्बत आ गई। इसी दूसरी शाखा ने भारत पर आक्रमण किया।

- **कुजुल कडफिसेस**

यह भारत में प्रथम कुषाण शासक हुआ, जिसने पश्चिमोत्तर भारत के कुछ क्षेत्र पर अधिकार स्थापित किया। कुजुल कडफिसेस ने भारत में केवल **ताँबे के सिक्के** जारी किए।

- **विम कडफिसेस**

यह भारत में द्वितीय कुषाण शासक हुआ, जिसने तक्षशिला व पंजाब पर अधिकार कर लिया। यह भारत में कुषाण शक्ति का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है। विम कडफिसेस ने **सोने व ताँबे के सिक्के** चलवाए, जिसमें यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेख अंकित हैं। इसके सिक्कों पर **शिव की आकृति, नन्दी बैल** और **त्रिशूल** आदि भी अंकित हैं, जो उसके शैव धर्म में आस्था को द्योतित करते हैं। विम कडफिसेस ने अपने सिक्कों पर **महेश्वर** की उपाधि भी धारण की है।

- **कनिष्क** (78 ई. -105 ई.)

राजधानी - पुरूषपुर/पेशावर तथा मथुरा।

कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि **78 ई.** है, जो भारत में **शक संवत्** का सूचक है।

कनिष्क का चीन के शासक **पान-चाओ** से युद्ध हुआ जिसमें पहले कनिष्क की पराजय हुई, परन्तु बाद में वह विजयी हुआ।

कनिष्क के समय में **कश्मीर** के **कुण्डलवन** में **चतुर्थ बौद्ध संगीति** का आयोजन हुआ। यहीं बौद्ध धर्म **हीनयान और महायान** में विभाजित हो गया। कनिष्क के समय से ही भारत में **मूर्ति पूजा** प्रारंभ हो गई।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

कनिष्क के काल में मूर्ति निर्माण हेतु 2 नवीन कला शैलियों का जन्म हुआ –

1) **गांधार कला शैली** – इसे **इण्डो-ग्रीक शैली** या **ग्रीक-बुद्धिष्ट शैली** भी कहा जता है। इसका केन्द्र बिन्दु गांधार था, अत: इसे गांधार कला शैली भी कहा जाता है। इसमें **बुद्ध** एवं **बोधिसत्वों** की मूर्तियां **काले, नीले** व **हरे स्लेटी पत्थर** से बनाई गई हैं। यह यूनानी देवता **अपोलो** की नकल प्रतीत होती है। इसमें **भौतिकता** का पुट स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

2) **मथुरा कला शैली** – इस कला शैली का जन्म कनिष्क के समय में मथुरा में हुआ। इस शैली में **लाल बलुआ पत्थर** का प्रयोग हुआ है। इसमें **बौद्ध, हिन्दू** एवं **जैन धर्मों** से सम्बंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया है। **बुद्ध की प्रथम मूर्ति** के निर्माण का श्रेय **पहली सदी ई.** में इसी कला शैली को दिया जाता है। इसमें **अध्यात्मिकता** का पुट अधिक है।

कनिष्क ने अपनी राजधानी **पुरूषपुर** में 400 फीट ऊँचा (13 मंजिल) एक **टावर** बनवाया था, इसके ऊपर एक लौह छत्र स्थापित किया गया तथा उसी के पास में एक विशाल **संघाराम** निर्मित किया गया था, जिसे **कनिष्क चैत्य** भी कहा जाता है। इसका निर्माण यवन वास्तुकार **अगिलस** द्वारा किया गया। कनिष्क के शासनकाल में तक्षशिला में **चीरतोपे स्तूप** तथा बामियान में **बौद्ध प्रतिमा** का निर्माण भी हुआ।

कनिष्क ने कश्मीर में **कनिष्कपुर** तथा तक्षशिला के **सिरकप** में एक नवीन नगर की स्थापना भी करवाई।

कनिष्क की राजसभा में **नौ ग्रहों (विद्वानों) का निवास** भी था, जिनमें **पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन** (चारों बौद्ध दार्शनिक) तथा **चरक** (चिकित्सक) प्रमुख थे। कनिष्क के समय नागार्जुन ने चीन जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया। कनिष्क का पुरोहित **संघरक्ष** था।

वासिष्क (102-106 ई.) यह कनिष्क का पुत्र व उत्तराधिकारी था।

हुविष्क (106-140 ई.) इसने कश्मीर में **हुष्कपुर नगर** की स्थापना करवाई। यह **शिव व विष्णु का उपासक** था। इसके सिक्कों में **चतुर्भजी विष्णु, हरिहर, उमा, बुद्ध, सूर्य, चन्द्रमा** आदि की आकृतियां मिलती हैं।

हुविष्क के बाद कुषाण साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया तथा ईरान में ससानियन वंश के राजाओं ने व भारत में नागभारशिव वंश के राजाओं ने अधिकार स्थापित कर लिया।

कुषाणों को साम्राज्य मध्य एशिया तक विस्तृत था। कुषाण शासकों ने चीन से रोम को जाने वाले **सिल्क मार्ग** पर अपना नियंत्रण स्थापित किया तथा मध्यस्थ की भूमिका में आर्थिक लाभ प्राप्त किया। कुषाणों ने ही सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के (124 ग्रेन) जारी किए। कुषाणों को सर्वाधिक ताम्र सिक्के चलाने का श्रेय भी प्राप्त है, किन्तु उन्होंने **चांदी के सिक्के नहीं** चलाए।

भारतीय शासक

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत में क्रमश: **शुंग, कण्व, सातवाहन** तथा **वाकाटक वंश** के ब्राह्मण जाति के शासकों ने भी अपना साम्राज्य स्थापित किया।

❒ शुंग वंश (185 ई. पू. - 75 ई. पू.)

शुंग मुलत: उज्जैन के निवासी व ब्राह्मण जाति के थे।

- **पुष्यमित्र शुंग**

राजधानी – पाटलिपुत्र।

शुंग का संस्थापक पुष्यमित्र था, जिसने 185 ई. पू. में अंतिम मौर्य सम्राट **वृहद्रथ** की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त की। पुष्यमित्र ने **सेनानी** की उपाधि धारण की। पुष्यमित्र शुंग के अयोध्या के गवर्नर धनदेव के अयोध्या अभिलेख, पतंजलि की पुस्तक महाभाष्य, कालीदास की पुस्तक मालविकाग्निमित्र तथा ज्योतिषी संबंधी पुस्तक गार्गी संहिता से **यवन आक्रमण** की जानकारी प्राप्त होती है। इनके अनुसार पुष्यमित्र के समय में यवनों ने चित्तौड़ के निकट **माध्यमिका नगरी** और अवध में **साकेत** का घेरा डाला, किन्तु पुष्यमित्र ने उन्हें पराजित किया। धनदेव के अयोध्या अभिलेख से पता चलता है कि पुष्यमित्र शुंग ने **2 अश्वमेघ यज्ञ** करवाए, जिनमें उसके पुरोहित **पतंजलि** थे।

पुष्यमित्र शुंग का शासनकाल **वैदिक धर्म के उत्थान का काल** माना जाता है। संभवत: इसी कारण बौद्ध ग्रंथों में पुष्यमित्र शुंग को बौद्धों का उत्पीड़क बताया गया है, परन्तु यह सत्य नहीं है क्योंकि पुष्यमित्र शुंग ने सांची में 2 स्तपों का निर्माण करवाया तथा अशोककालीन सांची के महास्तूप की काष्ठ-वेदिका के स्थान पर पाषाण-वेदिका निर्मित करवाई। इसके अतिरिक्त उसने मध्य प्रदेश के सतना जिले में भरहुत स्तूप का निर्माण भी करवाया।

अग्निमित्र पुष्यमित्र शुंग के बाद अग्निमित्र शासक बना। कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक से पता चलता है कि अग्निमित्र के समय में भी **यवन आक्रमण** हुआ, जिन्हें अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र ने सिन्धु नदी के तट पर पराजित किया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

वसुमित्र यह अग्निमित्र का उत्तराधिकारी हुआ।

ब्रजमित्र यह वसुमित्र का उत्तराधिकारी हुआ।

भागभद्र इसके विदिशा स्थित दरबार में इण्डो-ग्रीक शासक एण्टियालकीड्स ने **हेलियोडोरस** नामक राजदूत भेजा था।

देवभूति यह **शुंग वंश का अन्तिम** शासक था। इसके मंत्री **वसुदेव ने इसकी हत्या कर कण्व वंश की स्थापना** की।

❒ कण्व वंश (75 ई. पू. - 30 ई. पू.)

यह भी ब्राह्मण वंश था। इस वंश के कुल 4 शासकों के नाम प्राप्त होते हैं - वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण व सुशर्मन। 30 ई. पू. में कण्व वंश के अन्तिम शासक **सुशर्मन की हत्या सिमुक ने कर सातवाहन वंश की स्थापना** की।

❒ सातवाहन वंश (30 ई. पू. - 250 ई.)

राजधानी - प्रतिष्ठान व अमरावती (महाराष्ट्र)।

- **सिमुक**

यह भी ब्राह्मण वंश था। सातवाहन वंश का **संस्थापक** सिमुक हुआ। **मत्स्य पुराण** में सातवाहन शासकों की **वंशावली** प्राप्त होती है। यहां ध्यातव्य है कि 18 पुराणों में **सबसे प्राचीन** पुराण मत्स्य पुराण है, जिसमें सर्वप्रथम **लिंग पूजा** का उल्लेख मिलता है। पुराणों में इस वंश को **आंध्र** कहा गया है, परन्तु अभिलेखों में इन्हें **सातवाहन** कहा गया है, इसीलिए इस वंश का नाम **आंध्र-सातवाहन** वंश पड़ा। इनका साम्राज्य महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में था।

- **शातकर्णी प्रथम**

इसने **2 अश्वमेघ यज्ञ** एवं **1 राजसूय यज्ञ** किया। इसकी रानी **नागानिका के नानाघाट अभिलेख** से पता चलता है कि इसने **पहली शताब्दी ई. पू.** में ब्राह्मणों को **भूमि अनुदान** में दी। भूमिदान का यह पहला अभिलेखीय साक्ष्य है।

- **हाल**

हाल ने **प्राकृत भाषा** में **गाथासप्तशती** नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें उसकी प्रेमगाथाओं का वर्णन है। इसके काल में **गुणाढ्य** ने **प्राकृत भाषा** में **वृहत्कथा कोश** नामक ग्रंथ की रचना की। इसी काल में हाल की पत्नी मलयवती के अनुरोध पर **सर्ववर्मन्** ने **संस्कृत भाषा** में **कातंत्र** नामक व्याकरण की रचना की। सातवाहन राजाओं की **राजकीय भाषा प्राकृत** थी।

- **गौतमीपुत्र शातकर्णी (106 ई. -130 ई.)**

यह सातवाहन वंश का महानतम् शासक था। इसकी माता बलश्री के नासिक अभिलेख में गौतमीपुत्र शातकर्णी को **एकमात्र ब्राह्मण** एवं **अद्वितीय ब्राह्मण** कहा गया है। इसने शक शासक नहपान को हराकर मार डाला।

- **वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी (130 ई. -154 ई.)**

इसे शक शासक रूद्रदामन ने 2 बार पराजित करने के बाद भी छोड़ दिया तथा सातवाहन वंश के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित किए। विशिष्ठीपुत्र पुलुमावी के समय **अमरावती में बौद्ध स्तूप** का निर्माण किया गया।

- **शिवश्री शातकर्णी (154 ई. -165 ई.)**

यह पुलुमावी का भाई तथा रूद्रदामन का दामाद था।

- **यज्ञश्री शातकर्णी (165 ई. -194 ई.)**

इसके सिक्कों पर **जलयान का चित्र** अंकित है, जो जलयात्रा और समुद्री व्यापार के प्रति इसके प्रेम का परिचायक है।

यज्ञश्री शातकर्णी के पश्चात् सातवाहन वंश का पतन प्रारंभ हुआ। परिणामस्वरूप विदर्भ क्षेत्र में वाकाटकों ने, दक्षिणी महाराष्ट्र में आभीरों ने, आन्ध्र प्रदेश में इक्ष्वाकुओं ने तथा कुन्तल (कर्नाटक) में कदम्ब वंश के राजाओं ने अधिकार स्थापित कर लिया।

❒ वाकाटक वंश

यह भी ब्राह्मण वंश था। वाकाटकों ने कुल 200 वर्षों तक शासन किया।

- **विन्ध्य शक्ति (255 ई. - 275 ई.)**

यह वाकाटक वंश का संस्थापक था, जिसकी राजधानी **नन्दिवर्धन** (नागपुर) थी।

प्रवरसेन प्रथम (275 ई. -335 ई.) इसने कुल **4 अश्वमेध यज्ञ** किए।

प्रवरसेन द्वितीय (385 ई. -390 ई.) इसने **प्राकृत भाषा** में **सेतुबंध** नामक पुस्तक की रचना की।

अजन्ता की गुफा संख्या **9** एवं **10** वाकाटक काल से ही सम्बंधित है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❒ आभीर वंश

इस वंश का संस्थापक **ईश्वरसेन** था, जिसने **248 ई. - 249 ई.** के लगभग **कल्चुरि-चेदि संवत्** की स्थापना की। आभीरों का शासन चौथी सदी ई. तक चलता रहा।

❒ इक्ष्वाकु वंश

ये सातवाहनों के सामंत थे। इस वंश का संस्थापक **श्री शान्तमूल** था, जिसने अश्वमेध यज्ञ किया। इसका उत्तराधिकारी **वीरपुरूषदत्त** हुआ, जिसने **नागार्जुनीकोण्डा** के प्रसिद्ध **स्तूप** का निर्माण करवाया। इसके पश्चात् **श्रीशांतमूल द्वितीय** शासक हुआ। इक्ष्वाकु वंश के राजाओं ने तृतीय शताब्दी के अन्त तक शासन किया, तत्पश्चात् उनका राज्य कांची के पल्लवों के अधिकार में चला गया। इक्ष्वाकु लोग **बौद्ध मत** के पोषक थे।

❒ कदम्ब वंश

इस वंश का संस्थापक **मयूरशर्मन** था, जिसने **वनवासी** को अपनी **राजधानी** बनाई थी। आगे चलकर वातापी के चालुक्य वंश के शासक पुलकेशी द्वितीय ने इनकी स्वतंत्र सत्ता का अन्त कर दिया।

❒ कलिंग का चेदि वंश

इस वंश का संस्थापक **महामेधवाहन** था, किन्तु इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **खारवेल** हुआ। खारवेल के विषय में जानकारी का प्रमुख स्रोत इसका **हाथीगुम्फा अभिलेख** है, जिससे ज्ञात होता है कि खारवेल ने उड़ीसा में **महापद्मनन्द** द्वारा खुदवाई गई **तिनसुलिया नहर** का विस्तार कलिंग तक किया। हाथीगुम्फा अभिलेख में उल्लेखित है कि खारवेल ने अपने शासन के 12वें वर्ष मगध पर आक्रमण कर **वृहस्पति** नामक शुंग राजा को पराजित किया तथा महापद्मनन्द द्वारा पाटलिपुत्र ले जाई गई **जिनसेन की प्रतिमा** को पुनः कलिंग लाया गया। इसमें खारवेल द्वारा दक्षिण के 3 राज्यों (चोल, चेर एवं पाण्ड्य) को पराजित किए जाने का भी उल्लेख है। खारवेल ने **पाण्ड्य** शासक से **गधे का हल** चलवाया था।

मौर्योत्तरकालीन प्रमुख तथ्य

❒ प्रशासन

इस काल में राजत्व का पूर्ण दैवीयकरण हो गया। कुषाणों ने चीनी शासकों के अनुरूप **देवपुत्र** की उपाधि धारण की तथा रोम के शासकों के समान मृत राजाओं की मूर्तियां स्थापित करने के लिए मंदिर बनवाने की प्रथा (देवकुल) भी प्रारंभ की। इसी काल में शकों तथा पार्थियन शासकों ने संयुक्त शासन पद्धति तथा सातवाहन व कुषाण शासकों ने सेनानी शासन पद्धति (मिलिटिरी गवर्नरशिप सिस्टम) प्रारंभ की।

❒ समाज

◆ वर्ण संकर जातियों में वृद्धि

इस काल में समाज 4 वर्णों में विभाजित था - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र। इस काल के समाज की सबसे बड़ी विशेषता **संकर जातियों की संख्या में वृद्धि** थी। मौर्योत्तर काल में लम्बे समय तक विदेशियों को म्लेच्छ कहा गया, किन्तु आगे इन्हें वर्ण व्यवस्था में शामिल कर निम्न स्तर के क्षत्रियों का दर्जा दे दिया गया। इस प्रकार जातियों के अन्दर ही उपजातियों का विकास हुआ।

◆ वैश्यों की स्थिति में गिरावट एवं शुद्रों की स्थिति में सुधार

इस काल में विकेन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था के कारण आन्तरिक व्यापार में कमी आई, जिससे **वैश्यों की स्थिति में गिरावट** आई। जबकि भूमि अनुदान पद्धति से खेतों का विखण्डीकरण हुआ। चूंकि छोटे-छोटे खेतों में अधिक मजदूरों की जरूरत नहीं थी, अतः मजदूरों को दासता से मुक्त कर दिया गया। ऐसे **शुद्र** मजदूरों ने वाणिज्य व्यापार में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया, जिससे उनकी **स्थिति सुधरी तथा वैश्यों के समान हो गई।**

◆ पहनावा

मौर्योत्तर काल में पहनावा में भी कुछ नवीन परिवर्तन हुए। शकों और कुषाणों ने पगड़ी, कुरती, पाजामा और भारी लम्बे कोट चलाए। मध्य एशिया वालों ने यहां टोपी, बूट आदि चलाए, जिसका प्रयोग योद्धा करते थे।

◆ मृदभांड

मौर्योत्तर काल में नवीन प्रकार के मृदभांड जारी किए गए। कुषाणों ने लाल रंग के मृदभांडों का अधिक मात्रा में प्रयोग किया। उन्होंने फुहारों एवं टोटियों वाले पात्रों की भी शुरुआत की।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

❒ अर्थ-व्यवस्था

मौर्योत्तर काल आर्थिक दृष्टि से भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है।

◆ कृषि

इसी काल में सातवाहनों ने भूमिदान की प्रथा प्रारंभ की। अनुदान में दी गई भूमि एक हिस्सा अनुपजाऊ भूमि का होता है, जिसे अनुदान प्राप्तकर्ता उपजाऊ भूमि में तब्दील करने का प्रयास करता था। इस प्रकार इस काल में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।

◆ शिल्प

इस काल में कारीगरी एवं शिल्पों का अत्यधिक विकास हुआ। व्यापरिक प्रगति के कारण शिल्पकारों ने शिल्प श्रेणियों को संगठित किया। ये श्रेणियां व्यापार के अलावा महाजनी का कार्य भी करती थी। प्रत्येक श्रेणी का अपना तमगा, पताका एवं मुहर होती थी। उत्तर भारत में कम से कम एक दर्जन ऐसे नगर थे, जो लगभग स्वशासी संगठनों की तरह काम करते थे। इन नगरों के व्यापारियों के संघ, सिक्के भी जारी करते थे।

◆ उद्योग

इस काल का सर्वप्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था। मथुरा का साटक नामक वस्त्र बहुत प्रसिद्ध था। उरैयुर एवं अरिकमेडु से ईंटों के बने रंगाई हौज प्राप्त हुए। साथ ही हस्ति दंत शिल्प भी विकसित अवस्था में था। विदिशा में हस्ति-दंत शिल्पियों की एक श्रेणी थी, जिसने सांची स्तूप के रैलिंग की मरम्मत करवाई थी।

◆ सिक्के

इंडोग्रीक शासकों ने सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के चलाए। इन पर द्विभाषिक लेख होते थे। इन्होंने सोने, तांबे व चांदी के सिक्के चलाए। कुषाणों ने ही सबसे शुद्ध स्वर्ण सिक्के तथा सबसे अधिक तांबे के सिक्के चलाए। सातवाहन शासकों ने सर्वप्रथम सीसे के सिक्के जारी किए। इन्होंने चांदी, तांबा, पोटीन आदि के सिक्के भी चलाए। कर्षापण नामक सिक्का सोना, चांदी, तांबा, रांगा, सीसा आदि धातुओं का होता था।

◆ व्यापार

मौर्योत्तर कालीन व्यापार की सर्वप्रमुख विशेषता भारत का रोम के साथ फलता-फुलता विदेशी व्यापार था। यह व्यापार भारत के पक्ष में था। **प्लिनी** ने अपनी पुस्तक नेचुरल हिस्टोरिका में **रोम से सारा सोना भारत पहुंचने पर दुःख व्यक्त** किया है। इस व्यापार में सहायता पहुंचाने वाले कुछ प्रमुख कारक निम्नलिखित थे -

मानसून की खोज - पहली शताब्दी ई. में हिप्पालस नामक ग्रीक नाविक द्वारा।

पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी - अज्ञात ग्रीक नाविक द्वारा लिखित। यहां एरीथ्रियन सी से आशय लालसागर से है।

नेचुरल हिस्टोरिका - प्लिनी द्वारा लिखित।

ज्योग्राफी - टॉल्मी द्वारा लिखित।

इन ग्रंथों से विभिन्न देशों की भौगोलिक परिस्थितियों को समझने में सहायता मिली।

◆ प्रमुख बंदरगाह

पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी में मौर्य काल के प्रमुख बंदरगाहों का वर्णन है।

1) **बैरीगाजा या भड़ौच** - गुजरात स्थित यह भारत के पश्चिमी तट पर सबसे प्राचीन तथा सबसे बड़ा प्रवेश द्वारा था। पश्चिमी देशों के साथ अधिकांश व्यापार इसी के माध्यम से होता था।
2) **आरिकामेडु** - आधुनिक पाण्डिचेरी में स्थित इस बंदरगाह से एक रोमन बस्ती मिली है। यहां से रोम की अनेक वस्तुएं जैसे - दीप का टुकड़ा, बर्तन, सुराही आदि प्राप्त हुए हैं।
3) **कोरकई** - तमिलनाडु स्थित यह पांड्यों की राजधानी थी। पेरिप्लस में इसका नाम काल्ची मिलता है, जो मोतियों के लिए प्रसिद्ध थी।
4) **मुजरिस** - केरल स्थित यह चेरों की राजधानी थी।

◆ साहित्य

नाट्य शास्त्र - लेखक भरत मुनि थे।

महाभाष्य - लेखक पतंजलि थे। यह पाणिनि की अष्टाध्यायी पर टीका है।

कामसूत्र - लेखक वात्स्यायन थे।

बुद्ध चरित्र एवं सौन्दरानन्द - लेखक अश्वघोष थे।

स्वप्न वासवदत्ता - लेखक भास थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

गुप्तकाल

कुषाणों के पतन के बाद उत्तर भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। ये राज्य गणतंत्र में विभाजित थे। प्रमुख गणतंत्रों में आर्जुनायन (आगरा व जयपुर), यौधेय (पंजाब व राजस्थान), कुणिन्द (यमुना व सतलज), मालव, लिच्छिवि, आभीर तथा शिवि शामिल थे। इनमें से कुणिन्द के सिक्के कुषाण नमूने के ही थे, जिन पर शिव की आकृति अंकित थी, जबकि यौधेय के सिक्कों पर कार्तिकेय की आकृति अंकित थी। जबकि प्रमुख राजतंत्रों में नागवंश (मध्य भारत व उत्तर प्रदेश), आभीर, इक्ष्वाकु आदि शामिल थे।

ऐसे ही समय में मगध में गुप्त राजवंश का उदय हुआ। गुप्त शासक कुषाणों के सामंत थे। गुप्तों की उत्पत्ति के सम्बंध में विद्वानों में मतभेद है, किन्तु अधिकांश विद्वान गुप्त शासकों को वैश्य वर्ण का मानते हैं।

❒ गुप्त शासक (275 ई. - 550 ई.)

- **श्रीगुप्त (275 ई. - 300 ई.)**

श्रीगुप्त को गुप्त साम्राज्य का **संस्थापक** माना जाता है, किन्तु इसने केवल महाराज की उपाधि धारण की।

- **घटोत्कच (300 ई. - 319 ई.)**

घटोत्कच ने भी केवल महाराज की उपाधि धारण की।

- **चन्द्रगुप्त प्रथम (319 ई. - 334 ई.)**

राजधानी - पाटलिपुत्र।

यह गुप्त वंश का **वास्तविक संस्थापक** था। इसने महाराजधिराज की उपाधि धारण की। इसके राज्यारोहण की तिथि **319 ई.** को **गुप्त संवत्** का आरम्भ माना जाता है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छिवि राजकुमारी **कुमारदेवी** से विवाह किया तथा अपने साम्राज्य का विस्तार आधुनिक बिहार व उत्तर प्रदेश तक करने में सफलता प्राप्त की। चन्द्रगुप्त प्रथम ने **सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी** किए, जिन्हें राजा-रानी प्रकार या विवाह प्रकार के सिक्के कहा जाता है।

- **समुद्रगुप्त (335 ई. - 375 ई.)**

चन्द्रगुप्त प्रथम के उपरांत समुद्रगुप्त शासक बना। समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर **काच** नाम उत्कीर्ण है, जिन पर सर्वराजोच्छेत्ता की उपाधि भी मिलती है। कुछ विद्वान काच को समुद्रगुप्त का भाई, जबकि कुछ इसे समुद्रगुप्त का ही दूसरा नाम मानते हैं। हालांकि इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि समुद्रगुप्त का अपने भाइयों से उत्तराधिकार के लिए संघर्ष हुआ हो।

राज्य पर अपना निर्विवाद अधिकार स्थापित करने के बाद समुद्रगुप्त ने विजय अभियान प्रारम्भ किया, उसके विजयों के बारे में जानकारी का प्रमुख स्त्रोत **हरिषेण** द्वारा संस्कृत भाषा व चम्पू शैली में रचित **प्रयाग स्तम्भ लेख** है। इससे निम्नलिखित राज्यों पर विजय का पता चलता है -

1) **आर्यावर्त की विजय** - प्रथम चरण में समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के कुल **12 राज्यों** को विजित किया तथा इन राज्यों के विरूद्ध **प्रसभोद्धरण** की नीति अपनाई, अर्थात् - इन राज्यों का बलात उन्मूलन कर उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया।

2) **दक्षिणापथ की विजय** - द्वितीय चरण में समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के **12 राज्यों** को विजित किया तथा इन राज्यों के विरूद्ध **ग्रहणमोक्षानुग्रह** की नीति अपनाई गई, अर्थात् - विजय के बाद उनके राज्य वापस कर दिए गए। समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय को इतिहासकार रायचौधरी ने धर्म विजय की संज्ञा दी है।

3) **आटविक राज्यों की विजय** - तृतीय चरण में समुद्रगुप्त ने आटविक राज्यों को विजित किया तथा इन राज्यों के विरूद्ध **परिचारिकीकृत** की नीति अपनाई, अर्थात् - इन राज्यों को अपना सेवक बना लिया। आटविक राज्य उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले से लेकर मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले तक के वन प्रदेश में फैले हुए थे।

4) **सीमावर्ती राज्यों की विजय** - चतुर्थ चरण मे समुद्रगुप्त ने उत्तर व पूर्वी सीमा पर स्थित **5 राज्यों** को विजित किया तथा इन राज्यों के विरूद्ध **सर्वकरदानाज्ञाकरणप्रणामागमन...** की नीति अपनाई, अर्थात् - ये राज्य समुद्रगुप्त को सभी प्रकार के कर देते थे, उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे तथा उसे प्रणाम करने के लिए राजधानी में उपस्थित होते थे। 5 सीमावर्ती राज्य थे - समतट (बांग्लादेश), डवाक् (असम), कामरूप (असम), कर्तृपुर (हरियाणा) तथा नेपाल।

5) **विदेशी राज्यों की विजय** - पंचम चरण में समुद्रगुप्त ने 5 विदेशी राज्यों - **देवपुत्रषाहिषाहानुषहि, शक, मुरूण्ड, सिंहल** एवं **सर्वद्वीपवासिभि** को विजित किया तथा इनके विरूद्ध **आत्मनिवेदनकन्योपायनयाचनाद्युपाय** की नीति अपनाई, अर्थात् - ये राज्य स्वयं को सम्राट की सेवा में उपस्थित करते थे, अपनी कन्याओं का दान देते थे तथा अपने राज्यों में शासन करने हेतु गरूण मुद्रा से अंकित राजाज्ञा के लिए प्रार्थना करते थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

इनमें से देवपुत्रषाहिषाहानुषाहि से तात्पर्य कुषाणों से है, जो पश्चिमी पंजाब में निवास करते थे। समुद्रगुप्त का समकालीन कुषाण नरेश केदार था। शक शासक पश्चिमी मालवा, गुजरात तथा काठियावाड़ में थे। समुद्रगुप्त का समकालीन शक शासक रूद्रसिंह तृतीय था। मुरूण्ड की पहचान संदिग्ध है। सिंहल से तात्पर्य श्रीलंका से है।

समुद्रगुप्त के समय में सिंहल का शासक **मेघवर्मन** था, जिसने **गया में बुद्ध का मंदिर बनवाने की अनुमति** प्राप्त करने के लिए समुद्रगुप्त के पास दूत भेजा था। मंदिर बनाने की अनुमति दी गई और यह विशाल बौद्ध विहार के रूप में विकसित हो गया। जबकि सर्वद्वीपवासिभि शब्द का संकेत दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीपों से है। इससे पता चलता है कि वे समुद्रगुप्त के प्रभाव क्षेत्र में थे। इस प्रकार समुद्रगुप्त को कभी पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। अत: इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को **भारत का नेपोलियन** कहा है।

अपनी विजयों के उपरान्त समुद्रगुप्त ने **अश्वमेध यज्ञ** किया, जो उसके अश्वमेध प्रकार के सिक्कों से स्पष्ट है। इन सिक्कों के मुख्य भाग पर यज्ञयूप में बंधे हुए घोड़े का चिह्न एवं पृष्ठ भाग पर राजमहिषी **दत्तदेवी** की आकृति तथा अवश्मेध पराक्रम: अंकित है। समुद्रगुप्त के कुछ सिक्के ऐसे प्राप्त हुए, जिन पर उसे **वीणा बजाते हुए** दिखाया गया है। समुद्रगुप्त ने **कविराज की उपाधि** धारण की। उसके दरबार में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान **वसुबंधु** रहते थे।

- **चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (375 ई.-415 ई.)**

अन्य नाम - देवगुप्त/देवराज/देवश्री, विक्रमादित्य, शकारि।

चन्द्रगुप्त द्वितीय की माता का नाम दत्तदेवी था। इसका काल **गुप्तकाल का स्वर्णयुग** माना जाता है।

रामगुप्त की ऐतिहासिकता - विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्तम् नामक नाटक में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य से पूर्व रामगुप्त का गुप्त शासक के रूप में वर्णन किया गया है। इसके अनुसार शकों के आक्रमण के कारण रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को शकों को सौंपकर शान्ति स्थापित करने का विचार किया। इससे क्रुद्ध होकर रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ध्रुवदेवी का वेश बनकर शकराज की हत्या कर दी। इसके उपरांत उसने रामगुप्त की भी हत्या कर ध्रुवदेवी से विवाह कर लिया। इस घटना का उल्लेख गुप्त अभिलेखों में नहीं हुआ है, परन्तु इसका वर्णन अनेक परवर्ती स्त्रोतों, जैसे - बाणभट्ट कृत हर्षचरित, राजशेखर कृत काव्यमीमांसा, राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष के संजान ताम्रपत्र और गोविन्द चतुर्थ के सांगली व खम्भात ताम्रपत्रों में मिलता है। रामगुप्त के कुछ सिक्के विदिशा व उदयगिरि से भी प्राप्त हुए हैं। इन सब प्रमाणों के आधार पर रामगुप्त की ऐतिहासिकता स्वीकार की जाती है।

विवाहिक सम्बंध - चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने वैवाहिक सम्बंधों और विजयों के द्वारा अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ाई। उसने निम्नलिखित राजवंशों में वैवाहिक सम्बंध स्थापित किए -

1) **नागवशं** - यह राजवंश मथुरा, अहिच्छत्र, पद्मावती आदि क्षेत्रों में स्थित था। विक्रमादित्य ने नाग राजकुमारी **कुबेरनागा** से विवाह किया, जिससे एक कन्या **प्रभावती गुप्त** उत्पन्न हुई।
2) **वाकाटक वंश** - वाकाटक लोग आधुनिक महाराष्ट्र प्रान्त में शासन करते थे। वाकाटकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री **प्रभावती गुप्त** का विवाह वाकाटक नरेश **रूद्रसेन द्वितीय** के साथ कर दिया। वाकाटकों तथा गुप्तों की सम्मिलित शक्ति ने शकों का उन्मूलन कर डाला।
3) **कदम्ब राजवंश** - कदम्ब राजवंश के लोग कुन्तल (कर्नाटक) में शासक करते थे। कदम्ब वंश के शासक काकुत्सवर्मन ने अपनी एक पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम से कर दिया।

विजयें - दक्षिणी दिल्ली में **मेहरौली स्थित लौह स्तम्भ** में **चन्द्र** नामक शासक की विजयों का उल्लेख है। इस चन्द्र की पहचान चन्द्रगुप्त द्वितीय से की जाती है। इस लेख में राजा चन्द्र के द्वारा सप्त सिन्धु पार कर बाह्लीकों के विरूद्ध और पूर्व में बंग शासकों के विरूद्ध विजय का वर्णन किया गया है। बंग की पहचान बंगाल तथा बाह्लीकों की पहचान बल्ख से की जाती है।

शक विजय - चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उज्जयिनी के अन्तिम शक शासक **रूद्रसिंह तृतीय** को 409 ई. में पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने मालवा क्षेत्र में **व्याघ्र शैली के चांदी के सिक्के** चालए। ये सिक्के उसकी शकों पर विजय के सूचक हैं।

नवरत्न - चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में 9 विद्वानों की एक मण्डली निवास करती थी। जिसे नवरत्न कहा गया। इसमें कालिदास, धन्वतरि, बाराहमिहिर, अमरसिंह, क्षपणक, शंकु, बेतालभट्ट, घटर्परक, वररूचि जैसे विद्वान थे। ये नवरत्न सम्भवत: **उज्जैन** दरबार को सुशोभित करते थे, जो विक्रमादित्य की **दूसरी राजधानी** थी।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

फाह्यान (399 ई. - 414 ई.) - चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया। फाह्यान उत्तर-पश्चिम भारत से स्थल मार्ग से आया, जबकि वापस जल मार्ग से गया। फाह्यान ने बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन तथा प्रमुख बौद्ध स्थानों को देखने की लालसा से भारत की यात्रा प्रारम्भ की। फाह्यान ने लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत का भ्रमण किया।

फाह्यान के अनुसार **मध्य देश ब्राह्मणों का देश** था, जहां लोग सुखी और सम्पन्न थे। यहां **मृत्युदण्ड नहीं** दिया जाता था, केवल आर्थिक दण्ड प्रचलित थे। बार-बार राजद्रोह के अपराध में केवल दाहिना हाथ काट लिया जाता था। मध्य देश के लोग न तो जीवित प्राणी की हत्या करते थे और न ही मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन आदि का प्रयोग करते थे। केवल **चाण्डाल** इसके अपवाद थे तथा समाज से बहिष्कृत थे। इस प्रकार चाण्डालों का विस्तृत वर्णन करने वाला फाह्यान पहला विदेशी यात्री था। मध्य देश के लोग सुअर अथवा पक्षियों को नहीं पालते थे तथा पशुओं का व्यापार भी नहीं करते थे। बाजारों में बूचड़खाने तथा मदिरालय नहीं थे। मध्य देश के लोग क्रय-विक्रय में **कौड़ियों का प्रयोग** करते थे।

फाह्यान ने पवित्र बौद्ध स्थानों की भी यात्रा की। श्रावस्ती स्थित जेतवन विहार की वह प्रशंसा करता है। **पाटलिपुत्र** में उसने **अशोक का राजमहल** देखा तथा इससे इतना प्रभावित हुआ कि उसे **देवताओं द्वारा निर्मित** बताया। पाटलिपुत्र से उसने अपनी वापसी यात्रा प्रारम्भ की। चम्पा होता हुआ वह तामलुक ताम्रलिप्ति पहुंचा, जहां एक बन्दरगाह था। यहां 24 विहार थे। तामलुक में दो वर्षों तक रहकर फाह्यान ने बौद्ध सूत्रों की प्रतिलिपियां तैयार की। तत्पश्चात् लंका तथा पूर्वी द्वीपों से होता हुआ वह स्वदेश लौट गया।

सिक्के - चन्द्रगुप्त ने स्वर्ण, रजत एवं ताम्र मुद्राएँ जारी की। इस काल में स्वर्ण सिक्कों को **दीनार** तथा रजत सिक्कों को **रूप्यक या रूपक** कहा जाता था। गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के 144 ग्रेन के तथा चाँदी के सिक्के 32.36 ग्रेन के थे। ये कुषाणों की नकल पर बनाए गए थे।

- **कुमारगुप्त प्रथम (415 ई. - 455 ई.)**

इसे **महेन्द्रादित्य** भी कहा जाता था। कुमारगुप्त के समय में गुप्तकालीन सर्वाधिक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। जैसे - ग्वालियर का **तुमैन अभिलेख**, जिसमें कुमारगुप्त को **शरदकालीन सूर्य** की भाँति बताया गया है। इसी के समय का गुप्तकालीन मुद्राओं का सबसे बड़ा ढेर बयाना मुद्राभांड (राजस्थान) प्राप्त हुआ है। इसके अंतिम दिनों में पुष्यमित्र नामक जातियों ने आक्रमण किया, जिसको स्कन्दगुप्त ने पराजित किया। कुमारगुप्त ने ही **नालंदा विश्वविद्यालय** की स्थापना की थी। इसने अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।

सिक्के - कुमारगुप्त **मयूर आकृति** के सिक्के चलाए।

- **स्कन्दगुप्त (455 ई. - 467 ई.)**

इसकी उपाधि **क्रमादित्य** और **शक्रादित्य** थी। इसी के समय मध्य एशिया के हूणों ने आक्रमण किया, जिन्हें स्कन्दगुप्त ने पराजित किया। **हूण आक्रमण** की जानकारी **जुनागढ़ अभिलेख** (गुजरात) तथा **भितरी स्तम्भ लेख** (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) से मिलती है। स्कन्दगुप्त ने 466 ई. में **चीन के सांग सम्राट के दरबार में राजदूत** भेजा।

हुण - यह मध्य एशिया की एक बर्बर जाति थी। प्रथम आक्रमणकारी **खुशनवाज** था, जिसे स्कन्दगुप्त ने हराया था। दूसरा आक्रमण **तोरमाण** के नेतृत्व में हुआ। इसके बाद उसके पुत्र **मिहिरकुल** ने अपना राज्य स्थापित किया, जिसकी राजधानी स्यालकोट थी। उसके ग्वालियर लेख से ज्ञात होता है कि वह शिव का भक्त था।

सिक्के - स्कन्दगुप्त ने **वृषभ आकृति** के सिक्के चलाए।

परवर्ती गुप्त

स्कन्दगुप्त के अंतिम समय में गुप्त वंश का पतन प्रारंभ हो चुका था। उसके समय के सिक्कों में खोट (मिलावट) की मात्रा में वृद्धि होने लगी। प्रमुख परवर्ती गुप्त शासक क्रमानुसार निम्नलिखित थे -

पुरुगुप्त (467 ई. - 473 ई.) - इसने वैष्णव धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया।

बुधगुप्त (476 ई. - 495 ई.) - ह्वेनसांग के अनुसार यह बौद्ध धर्मानुयायी था।

नरसिंहगुप्त 'बालादित्य' (495 ई. - 510 ई.) - यह भी बौद्ध धर्मानुयायी था। इसने हुण शासक मिहिरकुल को पराजित किया, परन्तु बाद में छोड़ दिया।

भानुगुप्त - इसके समय के एरण अभिलेख (510 ई.) से पता चलता है कि इसका मित्र गोपराज, हूणों के विरुद्ध भानुगुप्त की ओर से लड़ता हुआ मार डाला गया तथा उसकी पत्नी अग्नि में जल मरी। इस प्रकार यह सती प्रथा का अभिलेखी प्रमाण है।

भानुगुप्त के बाद वैन्यगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय एवं विष्णुगुप्त शासक हुए। **विष्णुगुप्त इस वंश का अंतिम शासक** था।

गुप्तों के पतन के बाद **वल्लभी में मैत्रकों ने, स्थानेश्वर में पुष्यभुति/वर्धन वंश के राजाओं ने, कन्नौज में मौखरि राजाओं ने, मगध में परवर्ती गुप्तानों और बंगाल में चन्द्र शासकों ने** अपने राज्य स्थापित कर लिए।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

गुप्तकालीन संस्कृति

गुप्त राजाओं का शासनकाल भारतीय इतिहास में **स्वर्णयुग** के नाम से विख्यात है। वस्तुतः इस समय सभ्यता और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसके बावजूद गुप्तकालीन प्रशासन मौर्यों की अपेक्षा अत्यधिक **विकेन्द्रीकृत** था।

❐ प्रशासनिक व्यवस्था

◆ केन्द्रीय प्रशासन

गुप्त शासन का केन्द्र बिन्दु **राजा** था। गुप्त शासक **महाराजाधिराज** और **परमभट्टारक** जैसी भारी भरकम उपाधियां धारण करते थे। **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य प्रथम** गुप्त शासक था, जिसने **देवगुप्त/देवपुत्र** तथा **परमभागवत्** की उपाधि धारण की थी। राजा की सहायता के लिए एक **मंत्रिपरिषद्** होती थी, जिन्हें **अमात्य** कहा जाता था। मंत्रियों का पद अधिकांशतः आनुवंशिक होता था। एक ही मंत्री के पास कई विभाग होते थे। उदाहरणार्थ – **हरिषेण** सन्धिविग्रहिक, कुमारामात्य, महादण्डनायक आदि पदों पर आसीन था। मंत्रियों को वेतन नकद व भू-राजस्व के रूप में दिया जाता था।

गुप्तकालीन अभिलेखों में कतिपय मंत्रियों का उल्लेख मिलता है –

1) **कुमारामात्य** – सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी।
2) **महादण्डनायक** – युद्ध एवं न्याय का प्रमुख अधिकारी।
3) **महासन्धिविग्रहिक** – शान्ति एवं वैदेशिक नीति का प्रमुख अधिकारी।
4) **दण्डपाशिक** – पुलिस विभाग का प्रमुख अधिकारी। साधारण पुलिसकर्मियों को चाट व भाट कहा जाता था।
5) **सर्वाध्यक्ष** – सभी केन्द्रीय विभागों का प्रमुख अधिकारी।
6) **महामंडाधिकृत** – राजकीय कोष का प्रमुख अधिकारी।
7) **ध्रुवाधिकरण** – भूमिकर वसूलने वाला प्रमुख अधिकारी।
8) **महाक्षपटलिक** – राज्य के प्रमुख दस्तावेजों व राजाज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी। यह भूमि आलेखों को भी सुरक्षित रखता था। इसके अधीन **कारणिक** नामक अधिकारी भी होता था।
9) **विनयस्थिति स्थापक** – धर्म सम्बंधी मामलों का प्रधान अधिकारी। यह सार्वजनिक मंदिरों की देख-रेख एवं लोगों के नैतिक आचरण पर दृष्टि रखता था।
10) **अग्रहारिक** – दान विभाग का प्रमुख अधिकारी।
11) **न्यायाधिकरण** – यह भूमि सम्बंधी विवादों का निपटारा करता था।

◆ प्रान्तीय प्रशासन

गुप्त साम्राज्य अनेक प्रान्तों में विभाजित किया गया। प्रान्त को **देश/अवनि/भुक्ति** कहा जाता था। भुक्ति के शासक को **उपरिक** कहते थे। इस पद पर राजकुमार अथवा राजकुल से सम्बंधित व्यक्तियों की ही नियुक्ति की जाती थी। सीमान्त प्रदेशों के शासक **गोप्ता** कहलाते थे।

◆ जिला प्रशासन

भुक्ति का विभाजन अनेक जिलों में होता था, जिसे **विषय** कहा जाता था। इसका प्रधान अधिकारी **विषयपति** होता था। विषयपति का अपना कार्यालय होता था। कार्यालिय के अभिलेखों को सुरक्षित रखने वाले अधिकारी को **पुस्तपाल** कहा जाता था। विषयपति की सहायता के लिए **विषय-परिषद्** होती थी। इसके सदस्य विषय महत्तर कहे जाते थे, जो निम्नलिखित थे –

1) **नगर श्रेष्ठि** – नगर के श्रेणियों का प्रधान।
2) **सार्थवाह** – व्यापारियों का प्रधान।
3) **प्रथम कुलिक** – प्रधान शिल्पी।
4) **प्रथम कायस्थ** – मुख्य लेखक।

गुप्तकालीन अभिलेखों में **कायस्थ** नामक एक नए वर्ग का उल्लेख मिलता है। इनका उदय भूमि और भू-राजस्व के स्थानान्तरण के कारण हुआ। इन्होंने **ब्राह्मण लेखकों के एकाधिकार को समाप्त** कर दिया। इस जाति के लोगों का प्रधान कार्य केवल लेखकीय ही नहीं, बल्कि वे लेखाकरण, गणना, आय-व्यय और भूमिकर के अधिकारी भी होते थे। गुप्तकालीन अभिलेखों में उन्हें प्रथम कायस्थ/ज्येष्ठ कायस्थ कहा गया है। गुप्तकाल तक कायस्थ केवल एक वर्ग थे, जाति के रूप में इनका उल्लेख गुप्तकाल के बाद की रचना **ओशनस स्मृति** में मिलता है।

◆ नगर प्रशासन

नगर के प्रमुख अधिकारी को **पुरपाल** कहते थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **ग्रामीण प्रशासन**

जिले तहसीलों में विभाजित थे, जिन्हें **वीथि** कहा जाता था। तहसील **पेठ** में तथा पेठ **ग्राम में** विभाजित थे। इस प्रकार **ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई** थी, जिसका प्रशासन **ग्रामसभा** द्वारा चलाया जाता था। **दामोदर ताम्रपत्र** में उल्लेखित ग्रामसभा के प्रमुख अधिकारी थे – **महत्तर, अष्ठ कुलाधिकारी, ग्रामिक** एवं **कुटुम्बिन**।

- **न्याय प्रशासन**

गुप्तकालीन नारद व वृहस्पति स्मृति से न्याय प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है। **गुप्तकाल में प्रथम बार दीवानी व फौजदारी कानून भली-भाँति परिभाषित तथा पृथक्कृत हुए**। साम्राज्य का सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी राजा होता था, जबकि अन्य प्रमुख न्यायिक अधिकारियों को **महादण्डनायक** या **सर्वदण्डनायक** कहा गया है। **फाह्यान** के अनुसार **दण्डविधान** अत्यंत **कोमल** थे तथा **मृत्युदण्ड नहीं** दिया जाता था।

व्यापारियों तथा व्यवसायियों की श्रेणियों के अपने अलग न्यायालय, जैसे – **पूग** तथा **कुल** होते थे, जो अपने सदस्यों के विवादों का निपटारा करते थे। पूग नगर में रहने वाली विभिन्न जातियों की समिति, जबकि कुल समान परिवार के सदस्यों की समिति थी।

- **सैन्य प्रशासन**

सेना के सर्वोच्च अधिकारी को **महाबलाधिकृत** कहा जाता था। हाथी सेना व अश्वारोही सेना के प्रधान को क्रमशः **महापीलुपति** व **भटाश्वपति** कहते थे। सैन्य सामग्री की व्यवस्था रखने वाले प्रधान अधिकारी को **रणभाण्डागारिक** कहते थे।

❒ सामाजिक व्यवस्था

- **वर्ण व्यवस्था**

गुप्तकालीन समाज 4 वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र में विभक्त था। वाराहमिहिर ने वृहत्संहिता में चारों वर्णों के लिए विभिन्न बस्तियों की व्यवस्था की, जिसके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के घर में क्रमशः 5, 4, 3 व 2 कमरे होने चाहिए। कौटिल्य ने भी चारों वर्णों के लिए अलग-अलग बस्तियों का विधान किया था।

न्याय व्यवस्था व दण्ड व्यवस्था में भी वर्ण भेद था। न्याय स्मृतियों के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र की परीक्षा क्रमशः तुला, अग्नि, जल व विष से की जानी चाहिए। नारद स्मृति के अनुसार चोरी करने पर ब्राह्मण का अपराध सबसे अधिक और शूद्र का सबसे कम माना जाएगा।

इस प्रकार गुप्तकाल में यद्यपि वर्णाश्रम व्यवस्था मौजूद थी, किन्तु इसके बावजूद हमें इसका उल्लंघन दिखाई देता है। उदाहरणार्थ – कदम्ब राजवंश व वाकाटक राजवंश के संस्थापक क्रमशः **मयूरशर्मन** व **विन्ध्यशक्ति** दोनों ब्राह्मण जाति के थे। शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् के अनुसार **चारूदत्त** नामक ब्राह्मण वाणिज्य-व्यापार करता था। गुप्तवंश के राजा तथा हर्षवर्धन सम्भवतः वैश्य थे। सौराष्ट्र, अवन्ति व मालवा के शूद्र राजाओं की चर्चा मिलती है। ह्वेनसांग ने सिंध/मतिपुर के शासक को शूद्र बताया है। हिन्दू धर्मशास्त्रों में भी **आपद्धर्म** के अन्तर्गत किसी वर्ण को किसी अन्य वर्ण कार्यों को अपनाने की छूट दी गई थी।

समाज में सर्वोच्च स्थान क्रमशः ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा वैश्यों का था, जबकि सबसे दयनीय स्थिति शूद्रों की थी। हालांकि इस काल में शूद्रों को कृषि, शिल्प व व्यापार करने की अनुमति थी। मृच्छकटिकम् के अनुसार ब्राह्मण और शूद्र एक ही कुएं से पानी भरते थे। **मत्स्यपुराण** के अनुसार अगर शूद्र भक्ति में निमग्न रहे, मदिरापान न करे, इन्द्रियों को वश में रखे, तो उसे भी मोक्ष प्राप्त हो सकता है। **मार्कण्डेयपुराण** में दान देना और यज्ञ करना शूद्रों का कर्तव्य बताया गया है। **याज्ञवल्क्य** के अनुसार शूद्र ओंकार के बदले नमः शब्द का प्रयोग करके पंचमहायज्ञ कर सकते हैं।

गुप्तकालीन वर्ण व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता, **वैश्यों की सामाजिक स्थिति में गिरावट** एवं शूद्रों की सामाजिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार था। व्यापार में गिरावट के कारण वैश्य वर्ण को नुकसान पहुंचा, जबकि दण्डविधान आदि में कमी के कारण इसका सर्वाधिक फायदा शूद्र वर्ण को मिला और उनकी सामाजिक स्थिति वैश्यों के नजदीक आ गई।

- **मिश्रित जातियां**

गुप्तकाल में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप अनेक मिश्रित जातियों का उदय हुआ। याज्ञवल्क्य स्मृति में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई अनेक जातियों का उल्लेख है, जैसे – अनुलोम विवाह के फलस्वरूप ब्राह्मण पिता व शूद्र माता की संतान को **निषाद**, जबकि प्रतिलोम विवाह के फलस्वरूप शूद्र पिता व ब्राह्मण माता की संतान को **चाण्डाल** कहा जाता था।

- **अस्पृश्यता**

फाह्यान के अनुसार गुप्तकाल में एक अस्पृश्य वर्ग था। ये बस्ती के बाहर रहते थे। स्मृतियों में इन्हें **अन्त्यज** अथवा **चाण्डाल** तथा **प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न** कहा गया है। ये सबसे घृणित कार्य, जैसे – जंगली जानवरों का शिकार, मछली पकड़ना, सड़कों व गलियों की सफाई करना, श्मशान का काम करना, अपराधियों को फांसी पर लटकाना आदि कार्य करते थे। विन्ध्याचल के जंगल में **शबर** जाति के लोग रहते थे, जो अपने देवताओं को मनुष्य का मांस चढ़ाते थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **दास प्रथा**

गुप्तकाल में दास प्रथा प्रचलित थी, जिनमें स्त्री व पुरूष दोनों प्रकार के दास होते थे। यद्यपि **नारद स्मृति** व **विज्ञानेश्वर** ने **15 प्रकार के दासों का उल्लेख** किया है, परन्तु गुप्तकाल में **दास प्रथा में शिथिलता** आई। रामशरण शर्मा के अनुसार इसका कारण सामंतवाद के उदय के फलस्वरूप भूमि का छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित होना था। अत: छोटे कृषि क्षेत्रों में अधिक दास रखने की आवश्यकता नहीं थी। यहां तक कि **नारद स्मृति में दास मुक्ति के अनुष्ठान का विधान** भी मिलता है।

- **स्त्रियों की दशा**

गुप्तकाल में **स्त्रियों की दशा में** पहले की अपेक्षा **गिरावट** आई। **गुप्तकाल में ही सर्वप्रथम बाल विवाह, प्रदा प्रथा, सती प्रथा के साक्ष्य प्राप्त होते हैं**। इस काल में स्त्रियों को उपनयन संस्कार से भी वंचित कर दिया गया। अत: वे शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर सकती थीं। हालांकि उच्च वर्ग की स्त्रियां सुशिक्षित होती थीं। राजशेखर कृत काव्यमीमांसा के अनुसार स्त्रियां कवियित्री होती थी। कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुन्तलम् में अनुसूया को इतिहास का ज्ञाता कहा गया है। अमरकोश में शिक्षिकाओं के लिए **उपाध्याया** व **आचार्या** शब्द आए हैं।

गुप्तकालीन समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उन्हें श्वेत वस्त्र धारण करने होते थे और जीवनभर ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था। उसी प्रकार महिलाएं गणिकाओं एवं वेश्याओं का भी कार्य करती थीं। विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस में उत्सवों पर बड़ी संख्या में वेश्याओं के सड़कों पर आने का उल्लेख है। देवदासियों का भी एक वर्ग था, जो मंदिरों के साथ सम्बद्ध था। **कालिदास कृत मघदूतम्** में उज्जयिनी के महाकाल मंदिर में अनेक **देवदासियों** के नृत्य-गान का उल्लेख मिलता है।

इस काल में स्त्रियों के सम्पत्ति सम्बंधी अधिकारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पहली बार **याज्ञवल्क्य स्मृति में पत्नी को भी पति की सम्पत्ति का अधिकारी बताया गया है**, जिसके अनुसार पुत्र के अभाव में पुरूष की सम्पत्ति पर उसकी पत्नी का सर्वप्रथम अधिकार होगा और उसके बाद उसकी कन्याओं का। वृहस्पति व नारद स्मृति में भी पुत्र के अभाव में पत्नी का सम्पत्ति पर अधिकार माना गया है। हालांकि नारद स्मृति के अनुसार विधवा को पति की सम्पत्ति का अधिकार नहीं मिलना चाहिए, बल्कि संतानहीन व्यक्ति की सम्पत्ति राज्य को प्राप्त हो जानी चाहिए, यद्यपि राजा का यह कर्तव्य है कि वह विधवा का पालन-पोषण करे, यही **सनातन धर्म** है।

❐ आर्थिक व्यवस्था

- **भू-राजस्व**

गुप्तकाल में राजा भूमि का मालिक था। वह कृषकों से **भाग कर** के रूप में उत्पादन का 1/6 से 1/4 भाग तक लेता था। मनुस्मृति में दूसरे प्रकार के भूमिकर **भोग** का उल्लेख भी है, जो सम्भवत: राजा को प्रतिदिन दी जाने वाली फल-फूल, तरकारी इत्यादि की भेंट के रूप में थी। भाग व भोग दोनों को भूमिकर माना जाता है। गुप्त अभिलेखों में दो अन्य कर **उद्रंग** व **उपरिकर** का उल्लेख मिलता है। उद्रंग स्थायी काश्तकारों पर, जबकि उपरिकर अस्थायी कृषकों पर लगने वाला भूमि कर था। कृषक भूमिकर को **हिरण्य** (नगद) या **मेय** (अन्न) दोनों रूपों में दे सकते थे।

भूमिकर संग्रह करने के लिए **ध्रुवाधिकरण** तथा भूमि आलेखों को सुरक्षित करने के लिए **महाक्षपटलिक** व **कारणिक** नामक पदाधिकारी थे। **न्यायाधिकरण** नामक पदाधिकारी भूमि सम्बंधी विवादों का निपटारा करते थे। गुप्तकाल में **विष्टि** नामक कर से तात्पर्य बेगार या नि: शुल्क, **बलि** एक धार्मिक कर, जबकि **शुल्क** चुंगीकर था, जिसे वसूलने वाले पदाधिकारी को **शौल्किक** कहा जाता था।

गुप्तकाल की कर व्यवस्था के बारे में कामन्दक कृत नीतिसार में राजा को सलाह दी गई है कि जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से जल ग्रहण करता है, उसी प्रकार प्रजा से राजा थोड़ा-थोड़ा धन ग्रहण करे।

- **भूमि के प्रकार**

अदैवमातृक भूमि ऐसी भूमि थी, जिसमें बिना वर्षा के कृषि संभव थी, जबकि **दैवमातृक भूमि** में कृषि हेतु वर्षा की आवश्यकता होती थी। इसी प्रकार **अग्रहार भूमि** ब्राह्मणों को दी जाने वाली कर मुक्त भूमि थी। **अक्षयनीवीधर्म** से तात्पर्य ऐसी भूमि से था, जिसे दान प्राप्तकर्ता किसी अन्य को दान में न दे सके, जबकि **नीवीधर्मक्षय** ऐसी भूमि थी, जिसे दान प्राप्तकर्ता किसी अन्य को दान में दे सकता था। **भूमिच्छिद्र** का तात्पर्य बंजर भूमि से था। हालांकि कुछ इतिहासकार भूमिच्छिद्रन्याय का अर्थ बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाना मानते हैं।

- **भूमि माप की इकाइयां**

भूमि माप की के रूप में **निवर्तन**, पाटक, कुल्यावाप, द्रोणवाप, आढ़वाप आदि प्रचलन था।

- **सिंचाई के साधन**

गुप्तकाल में सिंचाई के साधनों में **अरघट्ट** (रहट) का उल्लेख मिलता है। ह्वेनसांग ने लिखा है कि सिंचाई में **घटी-यंत्र** (रहट) का प्रयोग होता था। इसी तरह बाणभट्ट ने हर्षचरित में सिंचाई के लिए **तुलायंत्र** (रहट) के प्रयोग की चर्चा की है।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

- **श्रेणी व्यवस्था**

जब उद्योगों और व्यापार में लगे व्यक्ति संगठित होकर अपने हितों की रक्षा करने के लिए एक संस्था बनाते थे, तो श्रेणी का जन्म होता था, अर्थात् - संगठित व्यापारिक एवं औद्योगिक समूह को श्रेणी कहा जाता था। इस प्रकार श्रेणी के लिए अनेक शब्द प्रयुक्त होते थे, जैसे - कुल, पूग, गण, निकाय, संघ, समूह, सम्भूयसमुत्थन, संव्यवहार, निगम आदि।

कुमारगुप्त प्रथम एवं बंधुवर्मन के मंदसौर अभिलेख से पता चलता है कि **रेशम बुनकरों की एक श्रेणी** ने 437 ई. - 438 ई. में एक भव्य **सूर्य मंदिर का निर्माण** करवाया और 473 ई. - 474 ई. में उसकी मरम्मत भी करवाई। **स्कन्दगुप्त के इंदौर ताम्रपत्र** से पता चलता है कि इन्द्रपुर आधुनिक इन्दौर के देव विष्णु नामक ब्राह्मण ने **इन्द्रपुर के तेलियों** की श्रेणी के पास पूंजी जमा कराई, ताकि **सूर्य मन्दिर** के दीपक की स्थायी रूप से देख-रेख की जा सके। गढ़वा अभिलेख से पता चलता है कि स्वयं चन्द्रगुप्त द्वितीय ने भी इसी प्रकार की पूंजी नमा करवाई थी। नारद एवं वृहस्पति स्मृतियों में श्रेणियों की प्रशासनिक व्यवस्था का भी वर्णन है। ये श्रेणियां अपने सदस्यों के झगड़े का स्वयं निपटारा करती थी। प्रत्येक श्रेणी के पास अपनी अलग मुहर होती थी। ये श्रेणियां बैंक का कार्य भी करती थीं।

श्रेणियों से सम्बंधित प्रमुख शब्दावलियां -

श्रेणी - एक ही कार्य करने वाले लोगों का समूह, जिसका प्रमुख श्रेष्ठिन अथवा ज्येष्ठक होता है।

पूग - अलग-अलग कार्य करने वाले लोगों का समूह।

कुल - एक ही परिवार के कार्य करने वाले लोगों का समूह।

निगम - श्रेणियों से बड़ी संस्था, जिसकी कई शिल्प श्रणियां सदस्य होती थीं।

सार्थवाह - व्यापारियों का प्रमुख नेता।

- **गुप्तकालीन सिक्के**

गुप्त शासकों ने कुषाण शासकों के मॉडल पर सोने, चांदी एवं ताँबे के सिक्के चलाए। गुप्तों के स्वर्ण व चांदी के सिक्कों को क्रमशः **दीनार** व **रूपक** कहा जाता था। गुप्त शासकों ने **सर्वाधिक स्वर्ण सिक्के जारी किए**, हालांकि **सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के कुषाणों ने चलाए** थे। गुप्त शासकों में **चन्द्रगुप्त प्रथम** ने **सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के**, जबकि **चन्द्रगुप्त द्वितीय** ने **सर्वप्रथम चांदी के सिक्के** जारी किए। परवर्ती गुप्त मुद्राओं का वजन बढ़ता गया, किन्तु उसमें सोने का अंश घटता गया।

- **व्यापार एवं वाणिज्य**

गुप्तकाल में व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति हुई, किन्तु यदि कुषाणकाल की तुलना में देखा जाए, तो गुप्तकाल में व्यापार के ह्रास के पर्याप्त चिह्न मिलते हैं। **फाह्यान** ने लिखा है कि साधारण जनता रोज के विनिमय में वस्तुओं की अदला-बदला अथवा **कौडियों** से काम चलाती थी। विदेशी व्यापार में भी गिरावट आई, जिसका प्रमुख कारण यह था कि 364 ई. में रोमन साम्राज्य का विभाजन हो जाने से भारत और रोम के बीच व्यापार को धक्का लगा।

छठीं शताब्दी के प्राकोपियस के वर्णन से पता चलता है कि ईरान ने रेशम के व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया था और रोमन साम्राज्य से उनकी शत्रुता के कारण भारतीय व्यापार को ठेस लगी। इसका पता हमें **कुमारगुप्त प्रथम के समय के बंधुवर्मन के मंदसौर अभिलेख** से भी चलता है, जिसमें उल्लेखित है कि नर्मदा क्षेत्र के निकट **लाट विषय (जिला) से रेशम बुनकरों की पट्टवाय श्रेणी** अपना काम छोड़कर पश्चिमी मालवा में **दशपुर (मंदसौर) आ गई**। इससे स्पष्ट है कि रेशम व्यापार को गहरा नुकसान हुआ।

छठीं शताब्दी में कॉस्मास की पुस्तक क्रिश्चियन टोपोग्राफी में भारत एवं यूथोपिया के बीच व्यापार का उल्लेख है, जिससे ऐसा लगता है कि भारत यूथोपिया के माध्यम से रोमन साम्राज्य तक पहुंचने की चेष्टा कर रहा था, क्योंकि रोमन सम्राट जस्टिनियम ने यूथोपिया से समझौता कर लिया था, ताकि वह ईरान की शत्रुता का सामना कर सके।

इसके बावजूद भी **भारत का विदेशी व्यापार** यदि रोम के साथ अवरूद्ध हुआ, तो **दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापार मे वृद्धि हुई**। यह व्यापार ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से होता था।

गुप्तकाल में **वस्त्र उद्योग** सबसे महत्वपूर्ण उद्योग था। चीन से रेशम (**चीनांशुक**), यूथोपिया से हाथी दांत, अरब, ईरान व बैक्ट्रिया से घोड़ों का आयात किया जाता था। निर्यातित वस्तुओं में कपड़े, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दांत की वस्तुएं, गरम मसाले, नारियल, सुगन्धित द्रव्य, नील, दवाएं आदि प्रमुख थीं। गुप्तकाल में पूर्वी तट पर **ताम्रलिप्ति** तथा पश्चिमी तट पर **भड़ौच प्रमुख बंदरगाह** थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

❐ गुप्तकालीन धर्म

• वैष्णव धर्म

गुप्त शासकों का **राजकीय धर्म वैष्णव** था, परन्तु वे अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु थे। गुप्त शासकों में **सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** ने तथा उसके पश्चात् अन्य गुप्त शासकों ने भी **परमभागवत्** की उपाधि धारण की तथा **गरूड़** को अपना **राजकीय चिह्न** बनाया। **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने विष्णुपद पर्वत पर गरूड़-ध्वज** की स्थापना की। **समुद्रगुप्त** एवं **कुमारगुप्त** ने **अश्वमेघ यज्ञ** भी करवाए थे।

गुप्तकाल में भगवान विष्णु का सबसे लोकप्रिय अवतार वाराह अवतार था, जिसका उल्लेख **उदयगिरि गुहा** अभिलेख में मिलता है। इसके अतिरिक्त स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में विष्णु के वामनावतार का उल्लेख है। गुप्तकाल में नववैष्णववाद का विकास हुआ, जिसका संबंध **पाञ्चरात्र मत** से था।

• शैव धर्म

गुप्तकाल में शैव धर्म भी अत्यन्त महत्वपूर्ण धर्म था। दो गुप्त शासकों कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त के नाम कार्तिकेय शिव के पुत्र के नाम पर ही हैं। कुमारगुप्त ने **मयूर की आकृति** वाले सिक्के, जबकि स्कन्दगुप्त ने **बैल की आकृति** वाले सिक्के चलवाए।

गुप्तकाल में ही अर्धनारीश्वर के रूप में शिव की कल्पना की गई तथा शिव व पार्वती की संयुक्त मूर्तियां बनाई गईं। यहां पर्वती शिव की शक्ति की प्रतीक है। गुप्तकाल में हरिहर के रूप में शिव व विष्णु को एक साथ दर्शाया गया है। इसी तरह सर्वप्रथम **गुप्तकाल में ही त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु व शिव की पूजा प्रारम्भ हुई**। वामनपुराण में शैव धर्म के 4 सम्प्रदायों - **पाशुपत, शैव, कापालिक** व **कालामुख** का उल्लेख है।

• सूर्य पूजा

गुप्तकाल में सूर्य पूजा का भी उल्लेख मिलता है। मंदसौर शिलालेख के प्रारम्भिक श्लोकों में सूर्य की उपासना की गई है। इसी तरह स्कन्दगुप्त के काल का इन्दौर ताम्रलेख सूर्य पूजा से प्रारम्भ होता है। इस अभिलेख के अनुसार उत्तर प्रदेश के बुलन्द शहर जिले के माडास्यात नामक बस्ती में भगवान सूर्य का एक मंदिर था। इन्दौर ताम्रलेख में ही 2 क्षत्रियों द्वारा अन्तर्वेदी गंगा-यमुना दोआब में एक सूर्य मंदिर के निर्माण और एक ब्राह्मण द्वारा मंदिर में नित्य दीप जलाने की व्यवस्था का भी उल्लेख है। मिहिरकुल के ग्वालियर लेख के अनुसार मातृचेट नामक व्यक्ति ने ग्वालियर में एक प्रस्तर सूर्य मंदिर का निर्माण किया था। ह्वेनसान ने भी मूलस्थानपुर में सूर्य मंदिर का उल्लेख किया है। इस प्रकार गुप्तकाल में निम्नलिखित स्थानों पर सूर्य मंदिर का उल्लेख है - **मंदसौर, ग्वालियर, बुलन्द शहर में मडास्यात, अन्तर्वेदी गंगा-यमुना दोआब** तथा **मूलस्थानपुर**।

• बौद्ध धर्म

गुप्तकाल में बौद्ध धर्म भी विकसित अवस्था में था। **कुमारगुप्त ने नालन्दा में प्रसिद्ध बौद्ध विहार की स्थापना करवाई**। सांची के लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने आम्रकार्द्दव नामक एक बौद्ध को उच्च पद पर नियुक्त किया था, जिसने काकनादबार के महाविहार को 25 दीनार दान में दिया था। गुप्तकाल में कई प्रसिद्ध बौद्ध आचार्यों का उल्लेख है, जिसमें आर्यदेव, असंग, वसुबंधु और मैत्रेयनाथ प्रमुख थे। **दिङ्नाथ तर्कशास्त्र मत के प्रणेता थे**। योगाचार दर्शन का गुप्तकाल में अत्यधिक विकास हुआ।

• जैन धर्म

गुप्तकाल में जैन धर्म भी उन्नत अवस्था में था। इस समय जैन ग्रंथों पर भाष्य और टीकाएं लिखी गईं। **मुनि सर्वनन्दी** ने **लोक विभंग** नामक ग्रंथ लिखा। **आचार्य सिद्धसेन** ने **न्यायवार्ता** की रचना की, जिससे जैन दर्शन व न्याय दर्शन के विकास में सहयोग मिला।

गुप्तकाल में कदंब व गंग राजाओं ने जैन धर्म को आश्रय दिया। कुमारगुप्त प्रथम के उदयगिरि लेख से पता चलता है कि शंकर नामक व्यक्ति ने पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। मथुरा व वल्लभी श्वेताम्बर जैन धर्म के, जबकि बंगाल में पुण्ड्रवर्धन दिगम्बर सम्प्रदाय का केन्द्र था। मथुरा के एक अभिलेख के अनुसार कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में हरिस्वामिनी नामक एक महिला ने किसी जैन मंदिर को दान दिया था।

❐ कला और साहित्य

कला और साहित्य की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का **स्वर्ण युग** कहा जाता है। गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ। ये मंदिर **नागर शैली** के हैं। मंदिरों के गर्भगृह में देवमूर्ति की स्थापना की जाती थी। मंदिरों की **छत सपाट** होती थी, किन्तु शिखरयुक्त मंदिरों का निर्माण भी प्रारम्भ हो चुका था, जैसे - देवगढ़ का दशावतार मंदिर।

मंदिर निर्माण चबूतरे के ऊपर किया जाता था और ऊपर जाने के लिए चारों ओर सीढ़ियां बनाई जाती थी। मंदिर का भीतरी भाग सादा होता था। द्वारपाल के स्थान पर **मकरवाहिनी गंगा** एवं **कूर्मवाहिनी यमुना** की प्रतिमाएं बनी होती थी।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

- **गुप्ततकालीन प्रमुख मंदिर**

1) तिगवां (जबलपुर, मध्य प्रदेश) का विष्णु मंदिर।
2) भूमरा (नागोद, मध्य प्रदेश) का शिव मंदिर।
3) खोह (नागोद, मध्य प्रदेश) का शिव मंदिर।
4) नचना कुठार (पन्ना, मध्य प्रदेश) का पार्वती मंदिर।
5) उदयगिरि (विदिशा, मध्य प्रदेश) का विष्णु मंदिर।
6) भितरगांव (कानपुर, उत्तर प्रदेश) का शिव व विष्णु मंदिर।
7) देवगढ़ (झांसी, उत्तर प्रदेश) का दशावतार मंदिर।
8) सिरपुर (छत्तीसगढ़) का लक्ष्मण मंदिर।

गुप्तकालीन मंदिर प्राय: पत्थरों से बनाए जाते थे, परन्तु **कानपुर का भितरगांव मंदिर, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर** तथा **देवगढ़ का दशावतार मंदिर ईंटों से निर्मित** हैं।

गुप्तकाल का सर्वोत्कृष्ट मंदिर देवगढ़ का दशावतार मंदिर है, जो भारतीय मंदिर निर्माण में **शिखर का पहला उदाहरण** है। इसमें भगवान **विष्णु को शेषशाई शैया पर विराजमान अंकित** किया गया है। इसके अतिरिक्त **कानपुर के भितरगांव मंदिर में भी शिखर** प्राप्त होता है।

- **गुहा मंदिर**

गुप्तकालीन गुहा मंदिरों को 2 भागों में बांटा जा सकता है –

1) **ब्राह्मण गुहा मंदिर** – इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उदयगिरि का मंदिर है, जिसमें विष्णु के **वाराह अवतार की विशाल मूर्ति** उत्कीर्ण है। उदयगिरि गुहा मंदिर का निर्माण चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के सेनापति वीरसेन ने करवाया था।

2) **बौद्ध गुहा मंदिर** – इसके प्रमुख उदाहरण अजन्ता तथा बाघ की गुफाएं हैं। अजन्ता की गुफा संख्या 16, 17 और 19 गुप्तकालीन मानी जाती है, जिनमें मुख्यत: बौद्ध धर्म से सम्बंधित चित्र है। बाघ की गुफाओं में भी बौद्ध धर्म से सम्बंधित चित्रकारी मिलती है।

- **मूर्तिकला**

गुप्तकालीन मूर्तियों में कुषाणकाल की मूर्तियों की तरह नग्नता नहीं है। यहां की मूर्तियों में सुसज्जित प्रभावमंडल बनाए गए, जबकि कुषाणकालीन मूर्तियों में प्रभावमंडल सादा था।

गुप्तकालीन मूर्तियों में देवगढ़ से प्राप्त विष्णु की प्रतिमा अत्यन्त सुन्दर है। इस अनन्तशायी मूर्ति में विष्णु को शेषनाग की शय्या पर दर्शाया गया है। गुप्तकालीन बुद्ध की मूर्तियों में सारनाथ में बैठे हुए बुद्ध की मूर्ति तथा मथुरा में खड़े हुए बुद्ध की मूर्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है। भागलपुर के निकट सुल्तानगंज से 2 मीटर से भी ऊँची बुद्ध की एक खड़ी ताम्रमूर्ति पाई गई है, जो इस समय बर्मिंघम संग्रहालय में सुरक्षित है।

- **चित्रकला**

वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना 64 कलाओं में की गई है। गुप्त चित्रकला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अजन्ता और बाघ की गुफाओं से प्राप्त हुए हैं।

1) **अजन्ता की चित्रकला** – अजन्ता की गुफाएं **महाराष्ट्र के औरंगाबाद** जिले में स्थित है। अजन्ता की गुफाओं का निर्माण दूसरी शताब्दी ई. पू. से सातवीं शताब्दी ई. तक किया गया था। अजन्ता की **खोज 1819 ई. में सर जेम्स अलेक्जेंडर** ने की थी।

अजन्ता में मुख्यत: **ब्राह्मण** व **बौद्ध धर्म से सम्बंधित** चित्र हैं। बौद्ध धर्म के चित्र महायान शाखा से सम्बंधित है। अजन्ता के चित्रों में लाल, हरा, नीला, सफेद, काला व भूरे रंग का प्रयोग हुआ है। यहां पीले व मिश्रित रंग नहीं प्राप्त होते हैं।

अजन्ता में पहले **29 गुफाओं** में चित्र बने थे, परन्तु अब केवल 7 गुफाओं 1, 2, 9, 10, 16, 17 व 19 के चित्र अवशिष्ट हैं। इसमें **16, 17 व 19 गुप्तकालीन** हैं, जबकि गुफा संख्या **9 व 10 सर्वाधिक प्राचीन वाकाटक काल** की है। गुफा संख्या **1 व 2 पुलकेशिन द्वितीय** के समय की है। **16वीं गुफा** के चित्रों में **मरणासन्न राजकुमारी** का चित्र अत्यन्त सुन्दर है। **17वीं गुफा** के चित्रों को **चित्रशाला** कहा गया है, जो अधिकतर बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रमण तथा महापरिनिर्वाण की घटनाओं से सम्बंधित हैं। इन चित्रों में माता व शिशु का चित्र सर्वोत्कृष्ट है।

2) **बाघ की चित्रकला** – बाघ की गुफाएं मध्य प्रदेश के **धार जिले** में स्थित हैं, जिनकी **खोज 1818 ई. में डेंजर फील्ड महोदय** ने की। इन गुफाओं की **संख्या 9** है। अजन्ता के चित्रों के विपरीत बाघ के चित्र मनुष्य के **लौकिक जीवन** से भी सम्बंधित हैं। यहां का सबसे प्रसिद्ध चित्र संगीत और नृत्य का एक दृश्य है।

❐ साहित्य

गुप्तयुग में साहित्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई। **पुराणों के वर्तमान स्वरूप की रचना इसी काल** में हुई। अनेक **स्मृतियों और सूत्रों पर भाष्य** लिखे गए। अनेक पुराणों तथा **रामायण एवं महाभारत को इसी समय अन्तिम रूप** दिया गया। इस समय स्मृतियों, जैसे – नारद, वृहस्पति, विष्णु, कात्यायन, पाराशर आदि की रचना हुई।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

गुप्तकाल श्रेष्ठ कवियों का काल था। कुछ कवियों के केवल अभिलेखीय प्रमाण मिले हैं, जिनमें हरिषेण, वत्सभट्टि तथा वीरसेन महत्वपूर्ण हैं। **हरिषेण** समुद्रगुप्त के समय सन्धिविग्रहिक, कुमारामात्य व महादण्डनायक था, उसकी प्रसिद्ध कृति **प्रयाग-स्तम्भ** लेख है। यह गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू शैली में है। **वत्सभट्टि**, कुमारगुप्त प्रथम का दरबारी कवि था, जिसने **मंदसौर प्रशस्ति** की रचना की। **वीरसेन** चन्द्रगुप्त द्वितीय का युद्ध सचिव था, जिसकी रचना **उदयगिरि गुहालेख** है। किन्तु गुप्तकालीन कवियों में सर्वश्रेष्ठ कवि व नाटककार कालिदास थे, जिन्हें **भारत का सेक्सपीयर** कहा जाता है।

- **कालीदास की रचनाएं**

1) **नाटक** - गुप्तकालीन नाटक मुख्यत: प्रेम प्रधान एवं सुखान्त होते थे। इस समय के नाटकों की उल्लेखनीय बात यह है कि उच्च सामाजिक स्तर के पात्र संस्कृत, जबकि निम्न सामाजिक स्तर के पात्र तथा स्त्रियां प्राकृत भाषा का प्रयोग करती हैं। कालिदास के प्रमुख नाटक निम्नलिखित हैं -
   a) **मालविकाग्निमित्रम्** - यह कालिदास का प्रथम नाटक है। इसमें मालविका व अग्निमित्र की प्रणय कथा वर्णित है।
   b) **विक्रमोर्वशीयम्** - इसमें पुरूरवा व उर्वशी की प्रणय कथा वर्णित है।
   c) **अभिज्ञान शाकुन्तलम्** - यह कालिदास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसमें दुष्यंत व शकुन्तला की कथा वर्णित है। इसकी कथा महाभारत से ली गई है, जिसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाज 1789 ई. में विलियम जोंस ने किया।

2) **महाकाव्य** -
   a) **रघुवंश** - इसमें राम के पूर्वजों, राम के चरित्र व राम के वंशजों का वर्णन है।
   b) **कुमार सम्भव** - इसमें शिव-पार्वती विवाह, कार्तिकेय की जन्म की कथा तथा कार्तिकेय द्वारा तारकासुर के वध का वर्णन है।

3) **गीतिकाव्य या खण्डकाव्य**
   a) **मेघदूत** -इसमें यक्ष व यक्षिणी की विरही कथा का वर्णन है।
   b) **ऋतुसंहार** - इसमें षड्ऋतु का वर्णन है।

- **अन्य रचनाएं**

1) **मृच्छकटिकम्** - यह गुप्तकाल का एक मात्र दु:खान्त नाटक है। इसके लेखक **शूद्रक** हैं। इसका नायक ब्राह्मण चारूदत्त है, जो सार्थवाह है और नायिका बसन्तसेना नामक गणिका है।
2) **मुद्राराक्षस** - इसके लेखक **विशाखदत्त** हैं। इसमें चाणक्य की योजनाओं का वर्णन है।
3) **देवीचन्दगुप्तम्** - **विशाखदत्त** द्वारा रचित इस नाटक में चन्द्रगुप्त द्वितीय, द्वारा शकराज एवं रामगुप्त के वध तथा ध्रुवदेवी के साथ उसके विवाह का वर्णन है।
4) **अमरकोश** - यह संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान **अमरसिंह** की रचना है।
5) **चन्द्रव्याकरण** - यह **चन्द्रगोमिन** नामक बंगाली बौद्ध भिक्षु द्वारा लिखा गया ग्रंथ है। इसे महायान बौद्धों ने अपनाया।
6) **कामसूत्र** - इसके लेखक **वात्स्यायन** हैं।
7) **पंचतंत्र** - इसके लेखक **विष्णु शर्मा** हैं। इस ग्रंथ का अनुवाद 50 से अधिक भाषाओं में किया जा चुका है।
8) **नीतिसार** - इसके लेखक **कामन्दक** है।

- **विज्ञान एवं तकनीक**

1) **आर्यभट्ट** - ये पटना के निवासी थे, जिनका जन्म 499 ई. में हुआ था। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ आर्यभट्टीय है। इन्होंने ज्योतिष को गणित से अलग माना तथा दशमलव प्रणाली का विकास किया। सर्वप्रथम इन्होंने ही बताया कि **पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है** तथा इसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ने के कारण ग्रहण पड़ता है। इस प्रकार इन्होंने **सूर्यग्रहण** एवं **चन्द्रग्रहण** पड़ने की लम्बाई 365.3586805 दिन बताई। ये गुप्तकालीन सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे।
2) **भाष्कर प्रथम (600 ई.)** - ये ब्रह्मगुप्त के समकालीन व खगोलशास्त्री थे। इन्होंने आर्यभट्ट के सिद्धातों पर टीकाएं तथा 3 ग्रंथों की रचना - महाभास्कर्य, लघुभास्कर्य व भाष्य की।
3) **ब्रह्मगुप्त (598 ई.)** - इनका जन्म उज्जैन में हुआ था। इन्होंने ब्रह्म सिद्धांत की रचना की तथा सर्वप्रथम यह बताया कि **पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है**।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

4) **वाराहमिहिर (550 ई.)** – ये भी गुप्तकाल के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी प्रसिद्ध रचनाएं पंचसिद्धांतिका, वृहत्संहिता, वृहत्जातक एवं लघुजातक हैं।

- **चिकित्सा ग्रंथ**

गुप्तकाल में अनेक चिकित्सा ग्रंथ भी लिखे गए, जैसे – वागभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ **अष्टांगहृदय** की रचना की। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक **धन्वन्तरि** था। **नवीनतकम** नामक आयुर्वेद ग्रंथ की रचना भी इसी काल में हुई। पालकाप्य नामक पशु चिकित्सक ने **हस्त्यायुर्वेद** नामक ग्रंथ की रचना की, जो हाथियों के रोगों व चिकित्सा से सम्बंधित थी। इस काल में रसायन विज्ञान में भी प्रगति हुई। बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन रसायन और धातुविज्ञान का विद्वान था।

- **षड्दर्शन**

भारत के प्रमुख छः (षड्दर्शन) का अंतिम रूप से संकलन गुप्तकाल में ही हुआ। इन दर्शनों के नाम एवं उनके प्रणेता निम्नलिखित हैं –

1) **सांख्य** – कपिलमुनी (प्राचीनतम दर्शन)।
2) **न्याय** – गौतम (विकास तर्क शास्त्र के रूप में)।
3) **योग** – पतंजलि।
4) **वैशेषिक** – कणाद (परमाणुवाद की स्थापना, भौतिकी का जन्म)।
5) **मीमान्सा** – जैमिनी (कर्मकांड की उपयोगिता)।
6) **वेदांत** – वादरायण का ब्रह्मसूत्र प्रमुख ग्रंथ।

भारत के उपरोक्त षड्दर्शन आस्तिवादी माने जाते हैं। वेदों को मानने वाले को आस्तिक तथा न मानने वालों को नास्तिक कहा जाता है।

- **अन्य दर्शन**

1) **चार्वाक/लोकयत** – यह प्रमुख भौतिकवादी दर्शन है। यह दर्शन किसी दैवी या अलौकिक शक्ति में विश्वास नहीं करता था। यह नास्तिक दर्शन की श्रेणी में आता है। चार्वाक के संस्थापक **वृहस्पति** माने जाते हैं।

2) **आजीवक सम्प्रदाय** – इस समप्रदाय के प्रवर्तक **मक्खलिपुत्र गोशाल** थे, जो बुद्ध व महावीर के समकालीन थे।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS

Success Pana Chahte Hai . Com

स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हरियाणा के **स्थानेश्वर** में पुष्यभूति वंश की स्थापना हुई। इस वंश में नरवर्धन, राज्यवर्धन, आदित्यवर्धन एवं प्रभाकरवर्धन शासक हुए। प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन एवं हर्षवर्धन तथा एक पुत्री राज्यश्री थी। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि वंश के शासक **गृहवर्मन** के साथ हुआ था। मालवा के शासक देवगुप्त ने बंगाल के गौड़ वंश के शासक शशांक के साथ मिलकर गृहवर्मन की हत्या कर दी और उनकी पत्नी राज्यश्री को बंदी बना लिया। इस घटना को सुनकर राज्यवर्धन ने देवगुप्त और शशांक से बदला लेने के लिए चल पड़ा। उसे देवगुप्त को पराजित करने में सफलता मिली परन्तु शशांक ने धोखे से उसकी हत्या कर दी। इन्हीं परिस्थितियों में हर्षवर्धन स्थानेश्वर की राजगद्दी पर बैठा।

❐ हर्षवर्धन (606-647 ई.)

गद्दी पर बैठने के बाद हर्षवर्धन का पहला कार्य अपने भाई के हत्यारे शशांक से बदला लेना तथा बहन राज्यश्री को उसकी कैद से आजाद करवाना था। इसी बीच हर्ष के ममेरे भाई **भण्डि** ने सूचना दी कि राज्यश्री कैद से निकलकर विन्ध्य के जंगलों में भाग गई है। हर्ष ने एक बौद्ध भिक्षु **दिवाकर मित्र** की सहायता से विन्ध्य के जंगलों में राज्यश्री को तब ढूंढ निकाला जब वह सती होने जा रही थी। राज्यश्री की रक्षा करके हर्षवर्धन कन्नौज लौटा और अपनी **राजधानी स्थानेश्वर से कन्नौज** स्थानान्तरित कर दी।

हर्षवर्धन ने शशांक के विरूद्ध अभियान किया किन्तु परिणाम अस्पष्ट है। ह्वेनसांग के अनुसार हर्षवर्धन ने उत्तरी भारत के 5 देशों पंजाब, कन्नौज, गोड़ या बंगाल, मिथिला और उड़ीसा को अपने अधीन कर लिया। बाणभट्ट ने इसमें सिन्ध, हिमप्रदेश और नेपाल को भी सम्मिलित किया है। उत्तरी भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद हर्षवर्धन दक्षिण की ओर उन्मुख हुआ। इस समय दक्षिण में वातापी का प्रसिद्ध शासक चालुक्य वंशीय **पुलकेशिन द्वितीय** शासन कर रहा था। उसके दरबारी **रविकीर्ति के ऐहोल अभिलेख** से पता चलता है कि उसने हर्षवर्धन को पराजित किया। इस प्रकार हर्षवर्धन अपने साम्राज्य का विस्तार नर्मदा नदी के दक्षिण में नही कर सका, किन्तु कश्मीर को छोड़कर समस्त उत्तर भारत में उसका साम्राज्य विस्तृत था। हर्षवर्धन की कुछ मुद्रायें **नालन्दा** तथा **सोनीपत** से भी प्राप्त होती है।

हर्षवर्धन के दरबार में भी अनेक प्रसिद्ध विद्वान निवास करते थे। हर्षवर्धन स्वयं भी विद्वान था, उसे तीन पुस्तकों - **नागानन्द, रत्नावली** और **प्रियदर्शिका** का रचयिता माना जाता है। **बाणभट्ट** हर्षवर्धन का दरबारी कवि था जिसने **हर्षचरित** और **कादम्बरी** नामक पुस्तक लिखी। उसके दरबार में **मयूर** नामक विद्वान भी रहता था, जिसकी रचना का नाम **मयूरशतक** अथवा **सूर्यशतक** है।

हर्षवर्धन के समय चीनी यात्री **ह्वेनसांग (629-645 ई.)** भारत में बौद्ध ग्रंथों का संकलन करने हेतु आया था। ह्वेनसांग ने अपना यात्रा विवरण **सी-यू-की** नाम से लिखा है। ह्वेनसांग ने भारत को **इन्-टु** कहा है। ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन को **फीसे** अर्थात् **वैश्य जाति** का बताया है तथा उसकी प्रशंसा की है। उसने हर्षवर्धन को **शिलादित्य** के नाम से सम्बोधित किया है। ह्वेनसांग ने सिंध एवं मतिपुर के राजाओं को **शूद्र** बताया है तथा शूद्रों को **कृषक** कहा है। ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय की भी यात्रा की तथा यहां कुछ समय शिक्षा प्राप्त की, उस समय यहां के प्राचार्य **शीलभद्र** थे। ह्वेनसांग के अनुसार भारत में सिंचाई **घटी यंत्र (रहट)** द्वारा होती थी। उसने **कन्नौज** की **धर्मसभा** एवं **प्रयाग** की **महामोक्षपरिषद** का भी वर्णन किया है। ह्वेनसांग के अनुसार हर्षवर्धन समय-समय पर धार्मिक प्रचार हेतु बड़ी-बड़ी सभाएं बुलाता था। ऐसी ही एक सभा उसने कन्नौज में बुलाई थी, जिसमें ह्वेनसांग स्वयं भी शामिल हुआ था। इस सभा में ह्वेनसांग ने महायान पर प्रवचन दिए थे । इस सभा की अध्यक्षता को लेकर प्रारंभ से ही विवाद था। जब इस सभा का संचालन चल रहा था, ब्राह्मणों ने इसमें उत्पात मचा दिया। बाद में 500 ब्राह्मणों को देश से निर्वासित कर दिया गया। इसके अतिरिक्त ह्वेनसांग के अनुसार हर्षवर्धन प्रत्येक पांचवे वर्ष विभिन्न विद्वानों को दान-दक्षिणा देने के लिए प्रयाग में महामोक्षपरिषद का आयोजन करता था। इसके छठे अधिवेशन में ह्वेनसांग भी सम्मिलित हुआ था। इस आयोजन के अवसर पर हर्षवर्धन ने **बुद्ध, सूर्य** एवं **शिव** की पूजा की थी। राजतरंगिणी से पता चलता है कि बौद्ध धर्म अपनाने से पहले हर्षवर्धन शैव था।

हर्षवर्धन को भारत का अंतिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् भारत में विकेन्द्रीकरण का युग प्रारंभ हुआ तथा समस्त उत्तर भारत कई छोटे-छोटे राजपूत राज्यों में विभाजित हो गया।

like Success Pana Chahte Hai . Com Education page on Facebook and youTube FOR HPSSC, HPPSC,HPU,HPBOSE,HPU DAILY UPDATE & PREVIOUS PAPAER & CURRENT AFFAIRS